बाली का बेटा

उपन्यास

राजनारायण बोहरे

तपस्वी का गुस्सा

पम्पापुर के युवराज अंगद हर रोज की तरह अपने दोस्तों के साथ मधुवन नाम के बागीचे में पेड़ों की आसमान छूती डालियों पर चढ़कर पत्तों के बीच छिपने और खोजने का खेल ' छियापाती' रहे थे कि एक सैनिक ने आकर कहा '' राजकुमार , तुरंत घर चलो। महारानी तारा ने आपको बुलाया है।''

अचानक ही महल का बुलावा सुना तो उनके सब मित्रों ने खेल बंद कर नीचे उतर आये।
महल की ओर जाते समय बाजार की हालत देख अंगद हैरान रह गये ।

सारे पम्पापुर में अफरा-तफरी मची हुई थी। नगर की गलियों, बाजारों और मुख्य मार्गो पर तमाम लोग इधर उधर भागे जा रहे थे। सबके सब परेशान और डरे हुए थे। लगता था कि नगर पर कोई भयानक संकट आन पड़ा है।

'' बचाओ रे कोई ! ''

'' इन्हे समझाओ रे कोई!''

'' हटाओ रे, हमारे इन डरपोक सैनिकों को !''

जो देखो वो चीख रहा था। ..और एक सज्जन तो खुले आम चिल्ला रहे थे ' महाराज सुग्रीव और जासूसी विभाग के प्रमुख बूढ़े योद्धा जामवंत की जितनी बुराई की जाय उतनी कम होगी उन्ही की लापरवाही के कारण जंगल में रहने वाले एक छोटे से तपस्वी की यह हिम्मत पड़ी है कि नगर के बीचोंबीच खड़ा हो कर किश्किंधा राज्य के राजा को ललकार रहा है।

अंगद तेज चाल से महल की ओर चल पड़े। राजमहल में घुसे तो देखा कि वहां भी यही हाल था। बल्कि नगर की तुलना में महल में ज्यादा हड़कंप था। सारे नौकर ही नहीं सैनिक तक भयभीत थे।

अंगद अपनी मां महारानी तारा को तलाशने लगे। उनकी दासियां एक तरफ डरी-सहमी हुई खड़ी थीं। अंगद ने इशारे से पूछा तो अंगुली उठा कर उन सबने बताया।

पता लगा कि माँ राजमहल के उसी राजदरबार वाले कमरे में बैठी हैं जहां हनुमान के आने के बाद चाचा महाराज सुग्रीव और उनके कुछ सलाहकार बैठ कर बातचीत कर रहे है। अंगद ने पहले तो सोचा कि बड़े लोगों की आपसी बातचीत में काहे को व्यवधान डालें, फिर सोचा कि उम्र में भले ही छोटे हों आखिर हैं तो ाम्पापुर के युवराज, इसलिए उन्हे भी तो जानना चाहिये कि नगर पर ऐसा क्या संकट आ गया है?

उन्हे याद आया कि वे अपने गुरू से पूछें। गुरू यानी बुजुर्ग योद्धा जामवंत। कोई कहता उनकी उम्र एकसौ बरस हो चुकी है तो कोई डेेढ़ सौ साल बताता। जामवंत ने जाने कितने राजाओं के यहां रहकर कई तरह के कठिन काम किये और जाने कितनी पीड़ियां उनके सामने बच्चे से जवान हुई और बूढ़ी होकर कामधाम छोड़ कर भजनपूजा में अपना समय काट रहे थे। इन दिनों युवराज अंगद को युद्ध कला, जासूसी, राजकाज से लेकर राजदरबार में

बोलने-बतियाने का तमीज जामवंत जी नियम से अंगद को सिखा रहे थे। राजमहल में जामवंत भी कहीं नहीं दिख रहे थे।

वे भीतर घुसे तो वहां सभी खास लोग मौजूद थे। खास लोग यानी कि बुजुर्ग मंत्री जामवंत, सेनानायक द्विविद, मंत्री मयंद सहित हनुमान , महारानी तारा और महाराज सुग्रीव । माँ ने उन्हे स्नेहपूर्वक ढंग से अपने पास बैठने का इशारा किया तो वे नीचा सिर किये जमीन की ओर ताकते हुए, बिना आवाज किये अपनी उनके पास जा बैठे।

सहसा हनुमान ने अंगद की ओर इशारा करके कहा, '' इस संकट से हमे युवराज अंगद और महारानी तारा ही बचा सकते हैं।''

'' हनुमान आपने सही उपाय बताया'' जामवंत जी प्रसन्न होते हुए बोले '' ऐसा करते हैं कि पहले इन दोनों को उनके सामने भेजते हैं, फिर यदि क्रोधित राजकुमार महल तक आने को राजी हो जाते हैं तो यहां महाराज सुग्रीव उनके चरणों में बेठ कर माफी मांग लेंगे।''

'' हां यही ठीक है'' महाराज सुग्रीव ने भी अपनी सम्मति दी तो सबने उनकी हां में हां मिलाई।

मँा के पास बैठे अंगद ने धीमे स्वर में माँ से पूछा '' माँ, हमारे नगर पर ऐसा क्या संकट आ गया जो सबके सब इतने डरे हुये हैं?''

महारानी तारा ने एक हाथ से साड़ी का पल्लू संभाला और सबकी ओर कनखियों से देखते हुए उनके कान में ही कहा '' तुम बचपना कब छोड़ोगे अंगद ? पूरे नगर को जानकारी हो चुकी है और तुमको पता नहीं लग पाया ? संकट यह आया है कि आज अचानक ही श्रीराम के छोटे भाई्र लक्ष्मण जी गुस्से में भरे हुए नगर के चौराहे पर आकर खड़े हो गये हैं और तुम्हारे चाचा को लड़ाई के लिए ललकार रहे हैं।''

अंगद को राम और लक्ष्मण के नाम को सुनकर एक अजीब सा भय लगता था, माँ की बात सुनी तो वही डर दुबारा उन्हे कंपाने लगा। सोचने लगे कि लक्ष्मण के सामने जाने की सलाह देकर हनुमान कहां हम लोगों को फंसाये दे रहे है। लक्ष्मण इस वक्त गुस्से में हैं तो वे किसी की न सुनेंगे। कहीं उन्होने माँ के लिए कुछ गलत-सलत बोल दिया तो अंगद सहन नहीं कर पायेंगे। हो सकता है इसी चक्कर में आपस में कोई झगड़ा हो बैठे। अगर झगड़ा हुआ तो कोई नहीं संभाल पायेगा।

अंगद ने सोचा वे साफ मना कर देंगे , ना वे खुद जायेंगे , ना ही माँ को लक्ष्मण के सामने जाने देंगे। सारा गुस्सा चाचा महाराज पर है तो वे ही जायें या फिर चाची रूमा जायें और अपने लाड़ले बेटे गद को ले जायें, हम क्यों जाये अपनी जान फंसाने?

वे आगे कुछसोचते कि माँ की मीठी और रौबदार आवाज उस कमरे में गूंज उठी, '' आप लोगों की यही इच्छा है तो ं अपनी मातृभूमि की खातिर हम दोनों माँ-बेटे ही खतरा उठाकर उनके सामने जाते हैं। लेकिन जब तक हम लोग उन्हे लेकर लौटें आप लोग कुछ ऐसा इंतजाम जरूर कर लीजिये जिससे उन्हे ऐसा लगे कि हमे उनके काम की चिन्ता है।''

अंगद का गुस्सा मन में ही दब गया। माँ ने उनकी सारी भावनाओं पर पानी फेर दिया था।

महारानी अचानक उठ कर खड़ी हो गई थीं और उन्होने अंगद को भी इशारा किया था सो अंगद भी उनके साथ उठ खड़े हुये थे। सहज भाव से उन्होने अपने दांये हाथ में रहने वाली भारी भरकम गदा उठाई तो माँ ने उन्हे इशारे से मना कर दिया। अंगद समझ गये कि उन दोनों को बिना हथियार के ही लक्ष्मण जी के पास जाना है।

अंगद को अचरज हुआ कि महारानी तारा बिना किसी पालकी या रथ के पांव-पैदल ही महल से निकल कर चली जा रही थीं और वे इतनी तेजी सें चल रहीं थीं कि अंगद उनसे पीछे रह जाते थे। वे दो-चार कदम दौड़ कर उनके बराबर हो पाते थे।

नगर के प्रमुख चौराहे पर जहां चारों ओर खुला बाजार था और सबसे ज्यादा चहल-पहल रहा करती थी, एकदम सन्नाटा था। वहीं चौराहे के बीचोंबीच मूर्ति की तरह अचल लेकिन गुस्से में आग सी फुफकारते लक्ष्मण खड़े थे। अंगद को एक पल के लिए सारे बदन में फुरहरी सी आ गई, लेकिन माँ के धीरज और आत्मविश्वास को देख कर वे तुरंत संभल गये।

लक्ष्मण के हाथ में किसी मजबूत धातु का बना हुआ एक चमचमाता धनुश था जिस पर उन्होने एक जलता हुआ तीर चढ़ा रखा था , लग रहा था कि किसी भी क्षण वे बाजार की किसी भी दुकान को लक्ष्य करके तीर छोड़ देंगे और कुछ ही देर में एक दुकान के बाद सारा बाजार, फिर सारा नगर आग से धू-धू करके जल उठेगा। अंगद एक बार फिर कंप गये।

महारानी तारा ने लक्ष्मण के पास पहुंच कर गंभीर भाव से दोनों हाथ जोड़ कर प्रणाम किया और अपनी मीठी-रौबदार आवाज में बोलीं, '' रामानुज लक्ष्मण जी को तारा का प्रणाम !''

फिर उन्होने अंगद को इशारा किया तो अंगद ने जमीन पर लेटकर लक्ष्मण को प्रणाम किया ।

चमत्कार हुआ, लक्ष्मण के तने हुए चेहरे पर कोमलता झलक उठी। वे मधुर आवाज में बोले, ''महारानी तारा, आप और अंगद को एक अनाथ होने के कारण श्रीराम ने हमारी शरण में लिया हैं, इसलिए आपकी बात अलग है, हम आप पर गुस्सा नहीं है। इस मामले में आप बीच में मत आइये , मुझे आज सुग्रीव से निपटना है। उसे बुलाइये यहां । मैं देखना चाहता हूं कि वह कितने बड़े राज्य का राजा हो गया है? उसे कितना घमण्ड हो गया है और मैं यही देखने आया हूं कि कितना ऐश्वर्य इकट्ठा कर लिया है उसने!''

'' अयोध्या के राजकुमारों के सामने हमारा यह ाम्पापुर बिलकुल गरीब और भिखारी की तरह दिखने वाला राज्य है लक्ष्मण! इस छोटे से राज्य को पाकर सुग्रीव जी को भला कहां से अभिमान होने वाला है? ''

'' आप सामने से हट जाइये महारानी तारा , मैं आज इस नगरको जला कर राख करने के लिए आया हूं।'' लक्ष्मण गुस्से में थे लेकिन वे महारानी तारा से बड़े सम्मान केसाथ बात कर रहे थे।

महारानी तारा ने अपनी होशियारी और विनम्रता नहीं छोड़ी वे फिर बोलीं '' आप उन्हे मत देखिये, हम दोनों को देखिये। आपने ही तो इस बालक को इस नगर का युवराज बनाया है, अगर आज इस नगर को जला देंगे तो कल राजा बनने पर इस नन्हे युवराज को क्या मिलेगा?....आप हमारी प्रार्थना सुनिये और कृपा करके महल चलिये।''

लक्ष्मण तनिक असमंजस में दिखे।

महारानी तारा के इशारे पर अंगद आगे बढ़े और बोले '' राजकुमार लक्ष्मण, दया करिये, हमारे महल में चलिये। वहीं बैठ कर आप हमें डांट लीजिए या पीट लीजिए। ''

लक्ष्मण ने आँखें मंूदी और अपने निचले होंठ को ऊपर के दांत से दबाने लगे। अंगद ने महसूस किया कि वे अपना गुस्सा रोकने का प्रयत्न कर रहे हैं।

आगे-आगे अंगद बीच में लक्ष्मण और पीछे महारानी तारा ने महल में प्रवेश किया तो मुख्य द्वार के पास ही महाराज सुग्रीव रोनी सी सूरत बनाये खड़े मिले । वे लक्ष्मण के पैरों में झुक गये। लक्ष्मण उन्हे एक तरफ सरका कर आगे बढ़ गये। आगे जामवंत खड़े थे, फिर हनुमान थे। उनसे आगे दूसरे मंत्री गण खड़े थे। लक्ष्मण ने उन सबका प्रणाम स्वीकारा।

महल के मुख्य कक्ष में लक्ष्मण को ले जाकर अंगद ने सामने रखे सिंहासन पर बैठने का इशारा किया । लक्ष्मण सकुचाते हुए बैठे तो जामवंत ने अपनी खरखराती आवाज में कहा '' हम सब मंत्री लोग आज इसीलिए यहां इकट्ठे हुऐ हैं लक्ष्मणजी कि हमारे राज्य की तरफ से पहले से जहां- जहां जासूस बैठे हैं उन्हे इस बात की खबर की जाय कि वे अपने-अपने राज्य में सीता माता का पता लगा कर तुरंत हमे बतायें।

लक्ष्मण चुप रहे तो हनुमान की हिम्मत बढ़ी, वे बोले , '' महाराज सुग्रीव को तो आप जानते हैं लक्ष्मण जी। इनका तो एक तरह से बचपना अभी गया नहीं। हमेशा से बड़े भाई बाली के पीछे घूमते रहे, उनके हुकुम से सब काम करते रहे। अब राजा बन भी गये हैं तो धीरे-धीरे सारे काम सीख पायेंगे। इसलिए आप इन पर दया करें, बेचारे तभी से डर के मारे कांप रहे हैं जब से आपकी गुस्से में भरपूर होकर ाम्पापुर में आने की खबर सुनी है।''

अब लक्ष्मण की निगाहें सुग्रीव की ओर घूमी । उपयुक्त मौका जानकर सुग्रीव लक्ष्मण के चरणों के पास जा बैठे। अब लक्ष्मण की आँखों से प्रकट हो रहा गुस्सा कुछ कम हुआ । उन्हे शांत होता देख एक-एक करके सब बोलने लगे। सेवक लोग फल लेकर आये लेकिन लक्ष्मण ने स्वीकार नहीं किया बस एक ही बात उन्होने बार-बार दोहराई कि सुग्रीव को तुरंत ही श्रीराम के सामने जाकर अपनी सफाई देनी चहिये कि पूरी बरसात बीत जाने के बाद भी भाभी सीता की खोज में कोई नया काम क्यों नहीं हो पाया।

लक्ष्मण ने कोई भी स्वागत-सत्कार स्वीकार नहीं किया। बल्कि उन्होने तुरंत ही लौटने की बात कही । तो सारे लोग सुग्रीव को आगे करके प्रबरशन पर्वत पर रह रहे श्रीराम के पास पहंुंचने के लिए पैदल ही चल पड़े। नगर के लोगों ने देखा कि तपस्वी लक्ष्मण के चेहरे पर अब वैसा गुस्सा नहीं है तो नगर के व्यापारी और दूसरे नागरिकों का डर कुछ कम हुआ। ाम्पापुर नगर में दुबारा शांति दिखी और लोग निश्चिंत हो कर अपनी दुकानों पर बैठने लगे। बाजारों और गलियों की चहल-पहल सामान्य होने लगी।

00000

राम का वनवास

जामवंत जी अंगद को सुना रहे थे।

अयोध्या के महाराज दसरथ के तीन रानियां थी- कौशल्या, कैकेयी एवं सुमित्रा। रानियों में कैकेयी सबकी प्यारी थीं और वे पूरे परिवार को बहुत प्यार भी करती थीं। उन्हे अपने बेटे भरत भी उदतने ही लाड़ले थे जितने राम , लक्ष्मण और शत्रुहन। कौशल्या के बेटे थे राम, जो सबसे बड़े भाई थे। सुमित्रा के जुड़वां बेटों का नाम था लक्ष्मण और शत्रुहन। कैकेयी के बेटे भरत थे। मजेदार बात यह थी कि राम के साथ लक्ष्मण खेलते थे तो भरत के साथ शत्रुहन। दोनों जोड़ी देखने-भालने और बातचीत में एक सी लगतीं।

सबको प्यार करने वालीं और सबकी प्यारी कैकेयी एकाएक बदल गई। अपनी नौकरानी मंथरा के सिखाने पर उन्ही रानी कैकेयी ने अपने पति से दो वरदान मांगे। अन्होने अनूठे वरदान मांगे रानी कैकेयी ने। भरत की मां कैकेयी ने राजकुमार श्रीराम जिनको कि अगले दिन सुबह राजतिलक होना था, उन्हे महाराज दसरथ से चौदह बरस के लिए अयोध्या नगर वं अवध साम्राज्य से बाहर जाकर जंगलों में जाकर रहने की आज्ञा दिलाई और अपने बेटा भरत को राजगददी पर बैठाने के लिए ऐसा राजनैतिक चक्र रच डाला कि परिवार का सारा माहौल ही खराब हो गया । राम पिता और माता के आज्ञाकारी बेटे थे वे चुपचाप जंगल में जाने की तैयारी करने लगे।

वन को जा रहे श्रीराम ने अपनी सौतेली माँ कैकेयी के भवन में बैठे निराश और परेशान होकर बैठे अपने पिता को सिर झुकाया और बाहर निकल पड़े थे। श्रीराम के पीछे उनकी पत्नी सीता और सैातेले छोटे भाई लक्ष्मण भी साथ साथ चले आ रहे थे।

श्रीराम ने दोनों से मना किया कि वनवास सिर्फ उन्हे मिला है इसलिए वे ही अकेले जंगल में जायेंगे। लेकिन बचपन से राम के साथ रहे लक्ष्मण भला कहां छोड़ने वाले थे । सो वे नहीं माने और सीता को राम के बिना दुनिया में कहीं भी कहां से अच्छा लगता, सो वे भी जिद करके उनके साथ जंगल के लिए चल पड़ीं। अयोध्या नगर की सीमा पर मंत्री सुमन्त एक रथ के साथ खड़े थे जिसमें बैठ कर राम को जंगल की ओर जाना था। पिता की आज्ञा सुन कर राम,लक्ष्मण और सीता रथ में बैठे और जंगल की ओर चल पड़े थे।

मं्ात्री सुमन्त खुद रथ चलाते हुए श्रीराम के पास आये और उन्हे रथ में बैठा कर अयोध्या से बाहर की ओर ले चले। वे चाहते थे कि चौदर बरस के बजाय केवल चौदह दिन तक जंगल में घूम कर राम वापस अयोध्या पहुंचें। लेकिन श्रीराम कहां मानने वाले थे? वे निशादराज के गाँव मे ंपहुंच कर रथ से उतर गये और सुमंत जी से वापस जाने की प्रार्थना की।

गं्ागा नदी के किनारे से सुमन्त को जबर्दस्ती विदा करके श्रीराम जंगल की ओर आगे बढ़े और चित्रकूट के पर्वत पर अपने लिए एक कुटी बना कर रहने लगे। यहीं चित्रकूट के पर्वत पर एक दिन श्रीराम के सबसे प्यारे भाई भरत रोते कलपते हुए आये और उन्होने बताया कि आपके जंगल में आने के बाद पिता का स्वर्गवास हो गया और अब राम को ही वापस चलकर राज सिंहासन पर बैठना चाहिए। तो श्रीराम विचलित हो उठे। वे पिता की आज्ञा का पूरा पालन करना चाहते थे और पूरे चौदह साल जंगल में बिताना चाहते थे। उधर भरत किसी तरह वापस होने को तैयार न थे। दोनों एक दूसरे को राजसिंहासन पर बैठाना चाहते थे। अयोध्या जैसे बड़े खजाने वाले राज्य के सिंहासन पर दो भाइयों का इस तरह एक दूसरे को त्याग करना उनके गुरू वशिश्ठ को बहुत अच्छा लगा सो उन्होने दोनो ंको बीच का एक रास्ता सुझाया- राम चौदह साल तक वन में रहें और भरत उतने दिनों तक राम का काम समझ कर राजकाज संभालें।

सबको यह बहुत अच्छा लगा । भरत अयोध्या को लौटे । श्रीराम ने चित्रकूट छोड़ा और घने जंगलो की ओर चल पड़े। आखिरकार वे पंचवटी पहुंचे। वहां उन्होने एक नयी कुटिया बनाई और आसपास के आदिवासियों के सुख दुख में उनके दोस्त बन कर रहने लगे।

यहाँ रहते हुए एक खास घटना घटी । लंका के राजा रावण की मनचली बहन शूर्पणखा को राम और लक्ष्मण भा गये । उसने एक रात पंचवटी आकर कुटिया के बाहर जाग रहे लक्ष्मण को अपने साथ ब्याह करने को मनाना शुरू किया तो शर्मीले लक्ष्मण पानी पानी हो उठे। उन्होने बताया िक पहले से विवाहित हैं और उनकी पत्नी अयोध्या मे रहती है। शूर्पणखा नही ंमानी और लक्ष्मण को कई तरह से मनाती रही इसी प्रसंग से पूरी रात बीत गई और कुटिया के दरवाजे खोल कर सुबह जब सीता जागीं तो लक्ष्मण और शूर्पणखा को देख कर बहुत चकित रह गईं। श्रीराम ने जब लक्ष्मण से सारा प्रसंग पूछा तो लक्ष्मण ने उन्हे समझाया कि यह महिला रात भर से उन्हे परेशान कर रही है।

उधर शूर्पणखा ने राम को देखा तो वह उनके पीछे लग गई किवे उसके साथ ब्याह कर लें। फिर शूर्पणखा को लगा कि सीता नाम की यह सुंदरी उसकी शादी में बाधा है तो शूर्पणखा ने सीता को ही मार देने का विचार कर सीता पर हमला कर दिया। लक्ष्मण ने गुस्से में आकर शूर्पणखा की नाक और कान काट दिये और उसे अपने आश्रम से बाहर खदेड़ दिया।

अपमानित और घायल शूर्पणखा जब लंका के राजा रावण की सैनिकचौकी पर पहुंची तो सेनानायक खर और दूशण ने अपने अनेक साथियों के साथ राम लक्ष्मण पर हमला बोल दिया।

राम और लक्ष्मण ने अपने तीखे बाण और मजबूत धनुशों के सहाने खर-दूशण को मार गिराया और यह देख कर शूर्पणखा सीधे लंका जा पहुंची।रावण ने उसे इस हालत में देखा तो वह आगवबूला हो उठा। उसने एक योजना बनाई और राम व लक्ष्मण को कुटिया से दूर भिजवा कर सीता को उठा कर लंका ले आया।

राम और लक्ष्मण लौटे तो सीता वहां नही थी। दुखी राम और लक्ष्मण सीता को ढूढ़ते हुए रिश्यमूक पर्वत पर पहुंचे जहां रहने वाले सुग्रीव ने हनुमान के द्वारा उनकी सचाई जानी और उन्हे अपना मित्र बना लिया । जल्दी ही सीता को ढूढ़ लाने का आश्वासन देकर बदले में अपने दुश्मन भाई बाली को सबक सिखाने का वायदा लिया। राम ने सुग्रीव की समस्या दूर की और अपने काम की याद दिला ही नही पाये थे कि बरसात का मौसम आ गया। श्रीराम और लक्ष्मण को प्रबरसन नाम के पर्वत पर ठहरा कर सुग्रीव अपनी राजधानी पम्पापुर मे जाकर रहने लगे।

लेकिन बरसात बीत जाने के बाद भी सुग्रीव अपना वायदा भूल गये और फिर एक दिन गुस्सा हो कर लक्ष्मण पम्पापुर पहुंच गये।

000

सुलह

लक्ष्मण सबसे आगे थे। उनके ठीक पीछे अंगद थे। बाकी लोग उनके पीछे चल रहे थे। यह जुलूस जहां से गुजरता, वहां के लोग झुक-झुककर उन सबको प्रणाम करते और पीछे हट जाते।

कुछ ही देर में लोगों का यह झुण्ड नगर की गलियों को पार करता हुआ नगर से बाहर पहुंच गया। अब वे ऐसे मार्ग पर आगे बढ़ रहे थे, जो पहाड़ पर जाता था। इसी के अंत में प्रबरशन पर्वत था। दरअसल बरसात के चार महीने काटने के लिए श्रीराम और लक्ष्मण इसी पर्वत की एक गुफा में बिश्राम कर रहे थे।

आसमान बिलकुल साफ था और जमीन पर हरियाली ही हरियाली थी।

अंगद ने देखा कि अपनी गुफा में बैठे श्रीराम एक मुनि के साथ बैठे इस क्षेत्र की जलवायु के बारे में बात कर रहे थे। उनका अंदाज था कि इस पूरे इलाके में जमीन के नीचे खोदने पर बहुत सारे खनिज पदार्थ मिल सकते हैं, जबकि मुनि का कहना था कि इस क्षेत्र में सिवाय काले पत्थरों, कई तरह के पेड़ पौधों और जंगली जानवरों व पक्षियों के कोई ज्यादा समृद्धिकारक खनिज वगैरह मिलना दुर्लभ है। जब लक्ष्मण के साथ ाम्पापुर के राजदरबार के अनेक मंत्रीगण उस गुफा के पास पहुंचे उन दोनों की यही बातचीत चल रही थी और मुनि के साथ आये उनके अनेक चेले चुपचाप बैठे शांत भाव से इस बातचीत को सुन रहे थे।

लक्ष्मण, अंगद और दूसरे लोगों के श्रीराम और उन मुनि को प्रणाम करने के कारण बातचीत में थोड़ी सी बाधा आई फिर दुबारा उसी विशय पर बातें होने लगीं। जामवंत ने बातचीत का विशय सुना तो उन्होने श्रीराम से अनुमति लेकर अपनी बात कही, ‘‘ आपका अनुमान बिलकुल सही है श्रीराम, हमार यहां पहले से ही बहुत से खनिज मिलते है, जिनके कारण हमारा यह छोटा सा राज्य बहुत धनी और समृद्ध बना हुआ है। हमारे ाम्पापुर में लगभग एक हजार मजदूर केवल खनिजों की खुदाई करते हैं। आगे के लिए अभी भी हमारे यहां लगभग सौ से ज्यादा हुनरमंद लोग जंगलों और पहाड़ों पर घूमते हुए जमीन के नीचे मिल सकने वाले खनिजों की खोज में लगे रहते हैं।’’

बातचीत की समाप्ति के बाद वे मुनि चले गये तो श्रीराम ने लक्ष्मण की ओर देखा। लक्ष्मण बोले, ‘‘ बड़े भैया, मैं जब ाम्पापुर गया था, उस समय महाराज सुग्रीव अपने मंत्रियों के साथ बैठे इसी योजना पर विचार कर रहे थे कि भाभी सीता का पता कैसे लगाया जाय।’’

श्रीराम हंसे और कहने लगे, ‘‘ इस तरह सिर्फ एक जगह बैठ कर किसी को तो नहीं खोजा सकता है लक्ष्मण, इसके लिए तो घर से बाहर निकलना पड़ता है। सुग्रीव खुद नहीं जा सकते थे तो इनके दूत तो बाहर निकल कर सीता की खोज कर सकते थे। अगर इनको समय

नही था तो ये मुझे बता देते, मैं खुद निकल कर सीता को खोजता रहता, और इन जंगलों में रहने वाले आदिवासी लोग इस काम में मेरी मदद करते। कम से कम हमारा यह चार महीने का समय तो बेकार नहीं जाता। अब इस बीच सीता का अपहरण करने वाले ने सीता को कोई हानि न पहुंचा दी हो।''

यह सुनकर जामवंत तेजीसे बोले, '' हे श्रीराम, मैं अपनी बुढ़ापे तक मिले तरह-तरह के अनुभवों के आधार पर कह सकता हूं कि महारानी सीता जहां भी हैं वहां स्वस्थ्य और सुरक्षित हैं। ''

हनुमानजी ने मौका पाया तो वे झुक कर बोले, '' हे प्रभु, इन जामवंत जी को आप पहले से जानते होेंंगे। ये हमारे राज्य के गुप्तचरी यानि कि जासूसी विभाग के मुखिया हैं। इन्हे बड़ा पुराना अनुभव है। अपनी जवानी के दिनों से इन्होने कई राज्यों की यात्रा की है और बड़े-बड़े बहादुर लोगों के साथ काम किया है। इसलिए इनकी कही गई हर बात में सचाई है यानि कि यह बिना आधार के नहीं है।''

अब सुग्रीव बोल उठे, '' हे प्रभो, मुझे क्षमा कीजिये। मुझसे चार महीने की देरी हो गई यह बात सच है। लेकिन यह देर इसलिए हुई कि बरसात के दिनों में नदियों और तालाबों में भरपूर पानी भर जाता है और चारों ओर के सारे रास्ते बंद हो जाते हैं।''

श्रीराम गंभीर आवाज में बोले, '' चलो आप सबकी बात मान लेते हैं, पर अब तक की देरी किसी भी कारण से हुई हो, अब हमे देर नही करना चाहिये । हमे सीता को ढूढ़ने के लिए पूरी ताकत लगा देनी चाहिये।''

जामबंत बोले '' हे प्रभो, मैं खुद कल सुबह से हमारे राज्य के सारे के सारे जवान लोगों को साथ लेकर दक्षिण दिशा की ओर निकल रहा हूं । यहां से समुद्र तक के पूरे रास्ते में बसे सारे के सारे गांवों में हमारी बिरादरी के आदिवासी लोग निवास करते हैं, इसलिए हम लोग उन सबसे भी मदद मांगेंगे और उन्हे भी अपने दल मेंें शामिल करेंगे। आप थोड़ा धीरज धरिये, हम ज्यादा से ज्यादा पन्द्रह दिन में लौट आयेंगे और आपको पूरी और पक्की खबर लाकर देंगे कि महारानी सीता कहां मौजूद हैं?''

यह सुन कर राम को संतोश हुआ वे महाराज सुग्रीव से बोले '' कहो महाराज सुग्रीव, राज्य कैसा चल रहा है? अंगद और महारानी तारा प्रसन्न तो हैं न ? आपके राज्य में सारी जनता भी कुशलता से होगी।''

अंगद को यह जानकर बहुत खुशी हुई कि श्रीराम ने पहला सवाल माँ और उनके बारे में पूछा है। यानी कि श्रीराम अभी भी अंगद से पहले जैसा ही प्यार करते हैं।

बड़े लोग राज-काज की बातें करने लगे तो अंगद ने अपनी उम्र के दूसरे साथियो ंकी ओर देखा। वहां बैठे नल, नील और गद भी इसी मौके की तलाश में थे कि जैसे ही मौका मिले वे लोग बाहर निकल लें और आस पास के ऊंचे पेड़ों पर धमाचौकड़ी मचा सकें। अंगद का इशारा पाकर वे सब धीमे से उठे और गुफा के बाहर निकल आये। सामने खड़े ऊंचे-ऊचे पेड़

उन्हे ललकारते से हवा से बातें कर रहे थे। वे लोग उछले और सरसराते हुए पेड़ों पर चढ़ते चले गये।

बहुत देर बार जामवंत की आवाज पर अंगद ने नीचे ताका। सब लोग ाम्पापुर लौटने की तैयारी में थे। वे लोग नीचे उतरे और जामवंत के पास जा खड़े हुए।

श्रीराम से विदा लेकर सारा झुण्ड वहां से चला तो रास्ते में जामवंत ने बताया कि कल भोर से ही वे सब यात्रा पर निकलने वाले हैं ।

अंगद ने सुना तो उन्हे मजा आ गया । बचपन से ही पिता की संगत में रहने के कारण मन से वे पक्के सैलानी थे। अन्जान जगहों की सैर करना उनका प्रिय शौक था। घर मे बन्द रहने से उन्हे ऊब होती थी।

घर पहुंच कर उन्होने माँ को सारी बातें कह सुनाईं। महारानी गंभीर हो कर सारी बातें सुनती रहीं फिर बोलीं '' सीता की खोज में पूरी पलटन चली जाय, लेकिन तुम्हारा जाना जरूरी नही है। तुम इस राज्य के राजकुमार हो। जासूसी और तलाशी वाले ऐसे काम तो दूत और गुप्तचर करते हैं। इस काम के लिए अगर श्रीराम तुम्हे भेजना चाहते हैं तो मैं खुद जाकर उनसे बात करती हूं।''

'' नहीं माँ ऐसा मत करना'' अंगद को लगा कि इतना मजेदार मौका हाथ से निकल रहा है तो वे बच्चे की तरह माँ के सामने मचल उठे, '' सच्ची बात तो यह है माँ, कि मुझे खुद इस बहाने लम्बी सैर पर जाने की इच्छा है। क्यों रोकती हैं आप मुझे बच्चों की तरह? मैं अब छोटा नहीं रहा, बड़ा हो गया हूं ।''

माँ की आँखों में पानी था, वे शायद रोने लगी थीं। बोलीं '' केवल पन्द्रह साल के तो हुए हो। तुम इतने बड़े भी नहीं हो गये हो कि ऐसे अन्जान सफर पर भेज दिया जाय तुम्हे। ''

अंगद पांव ठिनकते हुए कह रहे थे '' माँ, एक लम्बे समय से मैं इस महल में कैद सा हो गया हूं। मेरी इच्ठा है कि कुछ दिनों के लिए कैसे भी बाहर निकल सकूं।''

महारानी तारा बोलीं '' बेटा, तुम नही जानते कि तुम अपने बाप की अमानत हो मेरे पास। मेरी जिम्मेदारी है कि मैं तुम्हे पाल पोस कर सयाना और लायक आदमी बना सकूं।''

'' माँ, इस काम के लिए ही तो काका जामवंत को आपने मुझे सोंपा है । इस सफर में वे हर पल मेरे साथ रहेंगे। इसलिए आप मेरी कुशलता की चिन्ता छोड़ दो।'' अंगद ने महारानी को समझाने का प्रयास किया।

'' ठीक है, कल की कल देखेंगे ।'' कहते हुए माँ चली गई।

अंगद को लगा कि माँ के इस मोह के कारण कहीं उनकी सारी खुशियां गायब न हो जायें, माँ उन्हे बाहर जाने से रोक न दें । भोजन करने से लेकर सोने के लिए पलंग तक पहुंचने तक वे इसी चिन्ता में डूबे रहे।

रात को उनकी आँखों से नींद कोसों दूर थी।

अंगद को बार-बार अपने पिता की याद आ रही थी, जिनके समय में वे खूब सुखी थे, और आजाद, स्वतंत्र भी।

यों तो सबके पिता बहुत प्यारे होते हैं, लेकिन अंगद के पिता बहुत निराले थे।

00000

बाली

अंगद के पिता !

यानी वनवासियों के राज्य किश्किंधा के राजा- बाली।

बाली का राज्य था किश्किंधा!

जामवंत जी इन दिनों अंगद के गुरू हैं, वे बताते हैं कि यह राज्य किश्किंधा सैकड़ों साल पुराना है । वनवासियों के इस छोटे से राज्य की बहुत संुदर सी राजधानी ाम्पापुर है । लोग बताते हैं कि दुनिया के सबसे सुदर मकान बनाने वाले होशियार कारीगर मय ने इस नगर की रचना की थी।

ाम्पापुर ऊंचे पहाड़ों के बीच बसा एक खूबसूरत नगर था, जहां अधिकांश मकान लकड़ी के बने थे या फिर जिन पत्थरांे से बनाये गये थे उनमें बहुत कलाकारी की गई थी, हर पत्थर पर कोई न कोई मूर्ति, हर पत्थर पर ऐसी आकृति कि उसे घण्टों निहारते रहो । पत्थर भी किसम-किसम और देश-देश के। हरेक का रंग अलग, आकार अलग और चमक अलग। इन सबसे मिल कर बने थे यहां के मकान, बागीचे और रास्ते। जो भी एक बार इस जगह आता, उसका मन प्रसन्न हो जाता। बल्कि यूं कहें कि उसका मन यही रम जाता। मन ही मन यही चाहता कि हमेशा यहाँ रहे। जो राजा इसे देख लेता, उसकी नियत खराब हो जाती। इच्छा होती कि इस पर किसी तरह कब्जा मिल जाये, जिससे वह जब चाहे छुट्टियां मनाने इस खुबसूरत नगर में आता रहे।

जैसा नगर था वैसे ही यहां के नागरिक। बिलकुल भोले और सीधे। न ऊधो का लेना न माधो का देना। अपने काम से काम रखते सब लोग । यहां के लोग अत्यंत गरीब थे और प्राकृतिक वातावरण में रहने की उन्हे आदत थी । ग्रीश्म ऋतु में यहां गर्मी ज्यादा पड़ती, सो लोग बदन पर बहुत कम कपडे पहनते। ज्यादा अन्न नहीं मिल पाता था, सो केवल फल-फूल और मूल खाते। पहाड़ों और पेड़ों पर ऐसे खेलते थे कि लोग मजाक में उन्हे बंदर कहते थे। धीरे-धीरे यहां के निवासियों की बिरादरी वानर कहलाने लगी। यहीं के राजा थे महाराज बाली। कोई उन्हे वनवासियों के इस कबीले का सरदार और बानर योद्धा भी कहते थे।

अपने बेटे और पत्नी को खूब प्यार करने वाले एक अच्छे व्यक्ति थे अंगद के पिता बाली।

अंगद की जब सात साल की उम्र थी, तबसे पिता की कई बातें अच्छी तरह से याद हैं। जैसे उनका अपनी राजधानी से बेहद प्यार करना। जैसे उनका एक निश्चिंत आदमी होना। जैसे कि उनका दिन से खानाबदोशों की तरह से सैलानी होना।   हर बरस ही साल में दो बार यानी कि एक बार तब जब गरमी का मौसम आता, और दूसरी बार तब जब बरसात का मौसम जाता, वे अपने परिवार के साथ अपनी राजधानी ाम्पापुर छोड़कर दूर के हरे-भरे पहाड़ों, नदियों-तालाबों की तरफ घूमने चले जाते। कुछ दिन वहीं रहते। अपने पीछे सुरक्षा के लिए ाम्पापुर राजधानी में अपने भाई सुग्रीव के साथ उनका परिवार और राजदरबार के कुछ खास-खास आदमी छोड़ जाते। साल भर तक रोज-रोज महल में घिरी रहने वाली महारानी तारा ऐसे सैर करने में बहुत खुश होती। बच्चे भी खुशी से फूले न समाते। खास तौर पर अंगद की खुशी का पारावार न रहता। ऐसी बाहरी यात्राओं में बाली से जुड़े दूसरे कुछ खास लोग भी उनके साथ निकलते। बाहर पहुंच कर वे भी बहुत खुश होते।

इस तरह पखवारे भर वे लोग नई जगहों पर टहलते। वहां रूकते। नयी तरह का भोजन चखते। नये तरह के कपड़े देखते। अच्छे लगते तो देश-विदेश में पहने जाने वाले कपड़े पहनते। ज्यादा अच्छे लगते तो घर आते वक्त ऐसे कपड़े खरीद कर ले आते। इस तरह अंगद ने बचपन में कई नई जगह घूम ली थीं और उनकी माँ ने जाने क्या-क्या बोलना, पहनना, पकाना, खाना और खिलाना सीख भी लिया था। अपने आस-पास की महिलाओं में वे बहुत जानकार महिला की तरह मानी जाती थीं। बाली अपने परिवार का खास ध्यान रखते थे।

जामवंत कहते हैं कि बाहर घूमने का शौक बाली को तबसे था जब उनका विवाह नहीं हुआ था। बाद में विवाह हुआ तो वे महारानी तारा के साथ घूमने जाने लगे। लम्बा समय बीता और तारा ने किसी बच्चे को जन्म नहीं दिया तो महाराज बाली को कोई चिन्ता नहीं हुई। ऐसी ही एक यात्रा से वे लौटे तो ाम्पापुर के लोगों ने देखा कि महारानी तारा की गोदी में एक नन्हा सा शिशु है जिसे वे लोग अंगद कह रहे हैं। जामवंत जी बताते हैं कि हू ब हू बाली तरह गोरा, स्वस्थ्य और सुंदर बालक को देख कर ाम्पापुर का कोई नागरिक कहता कि देवताओं के वरदान से तारा को यह बेटा प्राप्त हुआ है, तो कोई कहता कि अंगद धरती का बेटा है, कोई कहता कि अंगद दुनिया के सबसे बड़े कारीगर मय दानव की दूसरी बेटी मंदोदरी का बेटा है। बचपन से तारा अंगद को बताया करती हैं कि महारानी मंदोदरी जो लंका के राजा रावण की पत्नी है, वह अंगद की मौसी है। मौसी यानी मां की बहन। मंदोदरी रिश्तें में हैं मां की बहन, लेकिन वे अंगद से इतना प्रेम करती हैं कि खुद तारा भी नहीं करतीं। इसलिए अंगद को मां हमेशा हिदायत देतीं कि अंगद अकेले कभी भी लंका न जायें, अगर जायें तो मंदोदरी के सामने न जायें, अन्यथा उनका अपनी मां के पास लौटना मुश्किल होगा। वैसे भी ाम्पापुर के लोग मौसी को मासी भी कहते- यानी माँ सी, माँ जैसी। अंगद थोड़ा बड़े हुए तो बाली ने उन्हे एक ऐसी अनूठी कला सिखाई जो दुनिया में किसी के पास न थी। कला यह थी कि अंगद एक बार जिस चीज पर अपना पाँंव जमा देते वह चीज उनके पाँंव से चिपक कर रह जाती, कोई्र कितनी भी बड़ी ताकत लगा लेता अंगद के पाँंव से वह चीज न छूट पाती । छूटती तब जब अंगद चाहते। अंगद जानते थे कि उनके पाँंव के तलवे में नन्ही सी कटोरियों की तरह छोटे-छोटे कई छेद थे, जिनको वे जमीन पर पाँंव रखते वक्त हवा से खाली कर लेते, फिर उनका पाँंव का छुड़ाना किसी भी ताकतवर के लिए संभव न था। बाद में जब पाँंव छुड़ाना होता, अंगद खुद धीमे-धीमे एक-एक छेद को खास तरकीब से छुटाते।

पिता के साथ अंगद ने ाम्पापुर से लंका के पास तक का समुद्र घूम डाला था। हिमालय के पर्वत देख डाले थे। खांडव वन यानी घने जंगल का वह हिस्सा घूम लिया था जहां खर,दूशन और त्रिसिरा नाम के तीन भाई्र खुदको रावण के राज्य का प्रतिनिधि मान कर आसपास के इलाके में आतंक फैलाया करते थे।

बाली पक्के घुमक्कड़ थे। एक घुमक्कड़ और सैलानी राजा। जिन्हे हर वक्त बिना सेना के अकेले या गिनेचुने लोगों के साथ दुनिया की सैर करना अच्छा लगता।

आज जब अंगद बड़े हो गये हैं, तब उन्होने बुजुर्ग मंत्री जामवंत की बातों से जाना कि बाली की कई आदतें राजा की नजर से ठीक न थीं।

एक गृहस्थ आदमी के लिए महीना-पन्द्रह दिन के लिए राज्य से बाहर चले जाना अलग था, लेकिन राजा के लिहाज से अलग।

किसी राजा का इस तरह पन्द्रह दिन और महीने भर के लिए राजधानी छोड़ जाना राजनीति की नजर से गलत था। असुरक्षित राज्य पर सबकी नजर रहती हैं। सचमुच इस तरह की यात्राओं से लौटने पर हर साल कोई न कोई संकट झेलना पड़ता उन्हंे।

जामवंत जी के अनुसार बाली केवल पिता न थे। सिर्फ पति न थे। एक राजा भी थे। वे राजा बाली थे।

राजा बाली । ाम्पापुर के राजा बाली । ाम्पापुर के नागरिकांे यानी वनवासियों की बिरादरी के सबसे बहादुर आदमी । सबसे बलबान योद्धा । ऐसे बलबान योद्धा जो मनुश्य तो मनुश्य, अपनी ताकत के जोश में जानवरों तक से भिड़ने को तैयार घूमते रहते।

जामवंत जी बेहिचक कहते हैं कि बाली ऐसे राजा थे जो जनता की परवाह कम करते थे, अपनी ताकत का दिखावा ज्यादा करते । जबकि राजा का फर्ज होता है कि वह जनता की सुख-दुख की परवाह करे। अपनी सेना को ऐसी ताकतवर बनाये कि आसपास के राजा डरते रहें।

जामवंत जी एक निडर और हुनरमंद आदमी थे। राजा बाली को वे कैसी भी सलाह निर्भय हो कर सुना देते, लेकिन दूसरों की तरह उनकी बातें भी बाली एक कान से सुनते दूसरे से उड़ा देते।

जामवंत कई किस्से सुनाते हैं बाली महाराज के। उन्होने अपनी राजधानी ाम्पापुर की सुरक्षा के लिए नगर के चारों ओर एक बड़ी चहार दिवारी बनबाई थी। जिसमंे चार दरवाजे थे। चारों दरवाजे रात को दियाबाती के समय बंद कर दिया जाता और सुबह सूरज उदय होनेक के एक पहर बाद ही खोला जाता। भीतर आने वाले की पक्की जांच की जाती। हर दरवाजे पर सौ-सौ सैनिकों की टुकड़ी रखी जाती थी। इन सैनिकों को सेना में से बहुत चुन कर रखा जाता था, क्यांेकि यहां हरेक को अच्छा तीरंदाज, कुशल तलवारबाज और देश-विदेश के बारे में अच्छी जानकारी रखने वाला होना जरूरी थी।

इस के बाद भी बाली ने हर बार कोई न कोई धोखा खाया या यंू कहें कि अपने सारे सुरक्षा बंदोबस्त ध्वस्त पाये। जैसे एक बार की बात है कि जब बाली गर्मियों की लम्बी यात्रा से लौट कर ाम्पापुर आये, तो उन्होने राजधानी की चहारदिवारी के मुख्य प्रवेशद्वार पर अपने राज का निशान सूरज के गोले वाला पीला झण्डा लगा नहीं पाया बल्कि वहां कोई और झण्डा फहराता हुआ देखा । बाली ने मुख्यद्वार पर खडे अंजान सैनिकों से झण्डा बदल जाने का कारण पूछा तो पता लगा कि इस बीच बाणपुर के राजा बाणासुर ने ाम्पापुर पर हमला करके राजधानी पर अपना कब्जा कर लिया है।

बाली ने यह सुना तो न उन्हे दुख हुआ, न कोई चिन्ता। उन्होने जामवंत जी को दूत बना कर ाम्पापुर के राजमहल पर कब्जा जमाये बैठे बाणासुर के पास अपना संदेश भेजा। वे नहीं चाहते थे कि सेनाओं में रण भूमि में युद्ध हो और निरपराध सैनिक मारे जायें। इसलिए उचित होगा कि न्याय की रक्षा करते हुए किश्किंधा राज्य उन्हे बिना खून बहाये वापस लौटा दिया जाय। यदि बाणासुर को अपनी ताकत का कुछ ज्यादा ही घमण्ड है तो वे खुद अकेले बाहर चले आयें और बाली से कुश्ती लड़ कर हरा कर दिखायें । बाली ने वचन दिया था कि अगर वे हार गये तो ाम्पापुर छोड़ कर वापस लौट जायेंगे । ाम्पापुर का राज्य बाणासुर संभालते रहें, बाली सबकुछ भुला देंगे।

जामवंत से बाली का समाचार सुना तो बाणासुर गुस्से और अभिमान मंे भरा हुआ ाम्पापुर के बाहर चला आया । दोनों अपनी जांघ ठोंक कर एक दूसरे को कुश्ती के लिए ललकारने लगे थे। बाणासुर एक महाबली थे तो बाली भी बहुत ताकतवर थे । बाली के पास एक खास कला थी कि वे कुश्ती लड़ते हुए जब सामने वाले को पकड़ लेते, तो मानों सामने वाला व्यक्ति उनसे चिपक सा जाता था। लाख जतन करने पर दूसरा पहलवान उनसे छूट नही पाता था। इसी कला का लाभ उठा कर बाली हर बार अपने जोड़ीदार को हरा डालते। लोग कहते

कि बाली को यह एक वरदान है कि जो उनसे कुश्ती लड़ने आयेगा उसका आधा बल खिंच कर बाली के बदन में चला आयगा, और इस तरह बाली अपने सामने वाले जोड़ी दार से डेढ़ गुने बल के साथा लड़ेंगे। जामवंत बताते हैं कि ऐसा कुछ न था बाली के पास कुश्ती की यही एक खास कला थी और इसी कला से उन्होने बाणासुर को हरा दिया था और जमीन पर पटक दिया ।

बाली की एक बड़ी कमी थी ि‍क वे जिससे चिढ़ जाते उसससे बहुत कटु वचन बोलते थे । उन्होने बाणासुर को खूब खरी-खोटी सुनाईं। फिर उसे एक रस्सी से बांध कर अपने साथ लेकर ाम्पापुर में प्रवेश किया। अपने राजा को बंधा हुआ देख कर बाणासुर की सेना सिर पर पाँव रखकर भाग निकली । ाम्पापुर के महल में खास तौर पर बनायी गई जेल में बाणासुर लम्बेसमय तक कैद रहा। लोग बताते हैं कि बाणासुर के बदन में दूसरों की तरह दो नहीं , नन्ही-नन्ही हजार भुजायें थीं, जो देखने में अजीब लगती थीं । ऐसे अजीब से जीव को देखने के लिए ाम्पापुर के निवासी रोज ही राजमहल में चले आते थे।

दो से ज्यादा भुजायें तो लंका के राजा रावण की भी बताई जाती हैं, उसने भी ऐसी ही शरारत की थी। एक बार बाली पन्द्रह दिन के लिए ाम्पापुर से बाहर निकले तो लौटकर उस बार उन्होने लंकाधिपति रावण को ाम्पापुर में कब्जा जमाये देखा। फिर क्या था कुपित बाली ने रावण को अपने साथ कुश्ती के लिए ललकार दिया । अपनी ताकत का घमण्ड रावण को भी कुछ ज्यादा ही था सो वह बेहिचक ताल ठोंकता ाम्पापुर के बाहर चला आया। बाली ने अपने खास दांव से लंकेश रावण को पकड़ा और दांये हाथ के नीचे कांख में दबा लिया। रावण ने बहुत ताकत लगाई लेकिन अपने आपको छुटा नहीं पाया बल्कि उसका दम घुटने लगा तो उसने अपनी हार मान ली। लेकिन बाली नहीं माने उन्होने कांख में रावण को दबाये हुये ही वहां से घसीटता हुए अपने महल की ओर ले चले थे। सड़क पर घिसटते रावण का ऐसा अपमान भरा नजारा देख कर ाम्पापुर में मौजूद रावण के सारे सैनिक व सुभट डर गये थे, और ाम्पापुर छोड़कर भाग निकले थे। रावण भी लम्बे समय तक बाली की कैद में रहा और ाम्पापुर निवासियों के लिए हंसी का बिशय बना रहा था।

बाद में रावण के पिता के पिता पुलस्त्य मुनि जो संसार के बड़े विद्वान और सम्माननीय व्यक्ति थे उन्होने ाम्पापुर आकर बाली से निवेदन कर रावण को उस कैद से छुटकारा दिलाया था। रावण को छोड़ तो दिया लेकिन बाली अपनी आदत से बाज नहीं आये। उन्होने पुलस्त्य मुनि को बड़ी कड़बी बातें सुनाना शुरू कर दीं उम्र से बहुत बूढ़े हो चुके रावण के दादाजी ने इस बात का बुरा नहीं माना । उन्होने हंसते हुए बाली से कहा था, '' बेटा बाली, तुमने कसरत करके अपना बदन खूब ताकतवर बनाया है, यह अच्छी बात है। ईश्वर तुम पर कृपा बनाये रखे। लेकिन तुम इस तरह कड़बे वचन मत बोला करो।''

बाली पर ऐसे उपदेशों का कोई असर नही पड़ता था। उनके लिए संसार में अपने यश या अपयश का महत्व न था। वे अपने बदन का बड़ा ध्यान रखते थे। खूब डट कर खाते। खूब कसरत करते। यही सब करने के लिए वे सुग्रीव से कहते थे।

हां, चाहे बाणासुर की घटना हो या रावण की बाली ने ज्यादा परवाह नहीं की।

ऐसी घटनाओं के बाद बाली अपने छोटे भाई सुग्रीव को जरूर खूब डांटते थे, जिन्हे वे अपने पीछे ाम्पापुर का किलादार बना कर जाते थे। लेकिन जो बाली के न रहने पर इतने भयभीत

रहते थे कि अंजान दुश्मन को सामने देखते ही उससे डर के हर बार किला सोंप देते थे। बाली जीत कर लौटते तो सुग्रीव हर बार अपने बड़े भाई से गिड़गिड़ा कर क्षमा मांगते थे और बाली उन्हे माफ भी कर देते थे।

एक बार बड़ी अजीब घटना हुई।

दुंदभि नाम के एक योद्धा ने ाम्पापुर में आकर चौराहे पर खड़े होकर जब बाली को कुश्ती लड़ने की चुनौती दी तो बाली एक लम्बी हुंकार के साथ उसके साथ भिढ़ बैठे थे । अपनी उसी खास कला या दांव के सहारे उन्होने दुंदभि को थोड़ी ही देर में हरा दिया। लेकिन दुंदभि ने ाम्पापुर में बाली को चुनौती दी थी इस कारण नाराज बाली ने अपने हारे हुए प्रतिद्वंद्वी को यूं ही न छोड़कर अपने कंधे पर लादा और राजमहल के ऊपर चढ़ गये थे फिर वहां उन्होने दुंदभि को लादे-लादे ही तेजी से चकरी की तरह कई चक्कर काटे और एक हुंकार के साथ उसे दूर पहाड़ों की ओर उछाल दिया था।

उस पहाड़ पर सात ताड़ वृक्ष थे जिनसे टकरा के दुंदभि का शरीर नीचे गिरा तो चट्टानों से टकरा के उसके चिथड़े-चिथड़े उड़ गये थे और इन चिथड़ों से उछला खून आस पास के इलाके में फैल गया था।

 लोग कहते हैं कि वहां कुछ मुनि लोग तपस्या कर रहे थे, जिनके ऊपर इस खून के छींटे पड़े तो वे गुस्सा हो बैठे थे और उन्होने शाप दी थी कि बाली कभी भी इस जगह पाँव नहीं रख सकेंगे, जिस दिन वे यहां पाँव रखेंगे उनक सिर के सौ टुकड़े हो जायेंगे। कोई कहता है कि ताड़ वृक्षों के नीचे बाली के इश्ट देवता सूर्य का एक मंदिर था जिस पर दुंदभि का खून बुरी तरह फैल गया था और बाली इस बात से इतने दुखी हुए थे कि उन्होने जिंदगी भर ताड़ वृक्षों वाले उस ऋश्यमूक पर्वत पर ना चढ़ने की कसम खाई थी। हालांकि कुछ लोग दबे स्वर में यह भी कहते हैं कि ऋश्यमूक पर्वत पर इस तरह खून से भरी लाश फेंकने के कारण वहां रहने वाली वनवासियों की एक दूसरी जाति के योद्धा बाली से नाराज हो गये थे और उन्होने बाली को चुनौती दी थी कि जिस दिन वे पर्वत पर आ गये उसी दिन मार दिये जायेंगे। वनवासी लोग मिलजुल कर रहा करते थे, सो बाली उस पर्वत से हमेशा दूर रहा करते थे।

बीच में टोक कर जामवंत से अंगद ने पूछा कि '' बाबा , मेरे पिता और काका सुग्रीव के बीच आपस में झगड़े का क्या कारण था?''

जामवंत ने वह किस्सा विस्तार से सुनाया था। ...संसार के सबसे बड़े कारीगर यानी मकान बनाने वालों के महागुरू मय का बहुत मोटा और ताकतवर बेटा मायावी एक बार जाने क्यों पम्पापुर आकर बाली को उल्टा सीधा बोलने लगा था। कोई कहता है कि वह अपनी बहन मंदोदरी के बेटे अंगद को मांग रहा था, जिसे उसकी दूसरी बहन तारा मांग लाई थी। तो कोई कहता है कि वह अपने पिता के बनाये नगर ाम्पापुर पर अपने पिता का हक माँग रहा था यानी कि नगर पर कब्जा जमाना चाहता था। किसी का यह मत था कि मायावी ने लंका में रहकर प्रसिद्ध पहलवान कुंभकर्ण से अभी-अभी कुश्ती लड़ना सीखा था और वह अपने दांव आजमाने के लिए समान ताकत वाले किसी पहलवान की तलाश में पपापुर मे ंचला आया था।

इस बात को तो कोई राजा पसंद न करता कि कोई आकर इस तरह खुले आम उसे चुनौती देने लगे। उस पर बाली जैसे महाबली को भला कहां से सहन होता कि कोई चौराहे पर राजा

के परिवार के बारे में कुछ गलत-सलत बोलता फिरे। वे अपने महल निकले और सीधे मायावी के सामने पहुंचे ओर उससे बहुत ऊंची आवाज में बोले '' सुनों मायावी, तुम्हे अगर ज्यादा घमण्ड हो गया है तो चलो हम और तुम नगर के बाहर जाकर कुश्ती लड़ते हैं, लेकिन तुम इस तरह मेरे नगर के चौराहे पर इस तरह बकबास मत करो।''

मायावी ने बाली की हंसी उड़ाते हुआ कहा, '' तुममें हिम्मत है तो यहीं खुले आम मुझसे कुश्ती क्यों नहीं लड़ते। बाहर क्यों जाना चाहते हो। अगर बाहर जाकर मेरे पैर छूकर मुझे लौटाना चाहते हो तो यह भूल जाओ । मैं यहां से बाहर नही जाने वाला। आज मेरा और तुम्हारा मुकाबला यहीं होगा। इसी जगह और खुले आम।''

बाली ने एकाएक हुंकार भरी और वे छलांग लगा कर मायावी से जा भिढ़े। मायावी को ऐसी आशा न थी कि उसे तैयार होने का मौका ही न मिलेगा, और दुनिया का यह प्रसिद्ध पहलवान उसको अपना अनूठा ऐसा दांव लगा कर पकड़ लेगा कि लाख जतन करने पर भी मायावी छूट न सके। वह कुंभकरन के सिखाये सारे दांव भूल गया और बाली की पकड़ में छटपटाने लगा। बाली अपनी आदत के मुताबिक मुंह से गंदी गालियां बकते जा रहे थे, सो बिपत्ति में फंसे मायावी को अंतिम उपाय यही लगा कि इसी आदत के कारण वह बाली से छूट सकेगा। उसने भी बाली को गालियां बकना शुरू कर दी। अब क्या था, बाली का गुस्सा सातवें आसमान पर जा पहुंचा। आज तक किसी ने उसे पलट कर गालियां न दी थी। एक झटके में उन्होने मायावी को छोड़ा और उसका मुंह निहारने लगे। वे आज दुंदभि से भी ज्यादा निर्मम तरीके से मायावी का मार देना चाहते थे।

बस यहीं आकर मायावी का मौका मिल गया। उसने झुककर एक छलांग लगाई और ाम्पापुर से बाहर जाने वाले मार्ग पर दौड़ लगा दी।

बाली चौंके। अरे यह क्या हुआ? यह कहां भाग निकला?

वे उसके पीछे दौड़ने लगे।

मायावी हाथी जैसे बड़े बदन का तो था ही , वह बहुत अच्छा धावक भी था। लगता था कि वह लम्बी दौड़ का खूब अभ्यास करता था सो बाली तेज चाल से दौड़ने के बाद भी उसे पकड़ने में नाकाम साबित हो रहे थे।

उधर मायावी की हालत खराब थी। उसे साफ-साफ महसूस हो रहा था कि उसने गलत आदमी को ललकार दिया। उसे अपने पीछे साक्षात मौत आती हुई दिखाई दे रही थी। वह ऐसी जगह ढूढ़ रहा था जहां वह छिप सके। एकाएक उसे सामने के पहाड़ में बनी एक बहुत बड़ी गुफा दिखी तो उसने आव देखा न ताव, सीधा उसमें घुस गया और नाक की सीध में दौड़ता चला गया ।

बाली ने देख लिया था कि मायावी उस गुफा के भीतर चला गया है, सो वे निश्चिंत थे। उन्होने रूक कर पीछे देखा। उनका अनुमान सही था, छोटा भाई सुग्रीव उनके पीछे भागता हुआ चला आ रहा था। बाली ने सुग्रीव का इंतजार किया और जब सुग्रीव आ गये तो बाली बोले, '' तुम यहीं गुफा के बाहर रहो, पता नही भीतर के कैसे हालात हैं। लेकिन चिन्ता मत करो, मैं

सबसे निपट लूंगा। तुम गुफा के बाहर रूक कर मेरा इंतराज करो मैं उसे घसीटता हुआ बाहर आता हूं।''

सुग्रीव ने सहमते हुए भैया से पूछा, '' मैं यहां कब तक आपका इंतजार करूं?''

बाली हंसे, '' अरे पगले, कब तक क्या, मैं आज साझ तक उसे मार कर लौटता हूं। '' फिर वे रूके और बोले, '' हो सकता है यह गुफा पहाड़ के उस पार जाकर दूसरे राज्य में निकलती हो तो मुझे उस राज्य के राजा ने अनुमति लेकर अपना अपराधी ढूढ़ना होगा, इसलिए तुम ऐसा करो पन्द्रह दिन तक मेरा इंतजार करना।''

'' आप अगर पन्द्रह दिन में नही लौटे तो ?'' पिछली घटनायें याद करके सुग्रीव का खून सूख रहा था, सो वे बाली से एक-एक बात पूछ लेना चाहते थे।

बाली फिर हंसे,''यदि पन्द्रह दिन में नहीं लौटता तो तुम यह मान लेना कि मैं मर गया हूं । फिर तुम राजमहल लौट जाना।''

बाली इतना कहकर गुफा में घुस गये और सुग्रीव अपने कुछ विश्वासपात्र दोस्तों के साथ गुफा के बाहर बैठ गये।

धीरे-धीरे सांझ हुई । वे चिंतित हुये। उन्होने आग जला ली ताकि जंगली जानवर दूर बने रहें। कुछ जागते कुछ सोते वे बैठे रहे। वो रात बहुत धीमे-धीमे बीत रही थी।

किसी तरह सुबह हुई। दोस्तों ने समझाया कि बाली पता नहीं कब तक लौटेंंगे,ऐसा करें कि सुरक्षा के लिए राजधानी से कुछ सैनिकों को बुला लेते हैं और यहां ठहरने के लिए कुछ खाने-पीने ठीक सा इंतजाम कर लेते हैं। सुग्रीव ने हामी भरी तो सारे प्रबंध हो गये।

अब सुग्रीव पूरे साजोसामान के साथ बाली का इंतजार कर रहे थे।

धीरे-धीरे पखवारा यानी पन्द्रह दिन बीत गये।

सोलहवें दिन ाम्पापुर से राजदरबार के अनेक मंत्री गण गुफा तक चले आये । सब चिंतित थे लेकिन किसी का साहस न था कि अंदर जाकर पता लगाये।

मं्रात्रियों ने सुग्रीव से ाम्पापुर लौटने की प्रार्थना की तो सुग्रीव टाल गये, उन्होने मंत्रियो ंसे कहा '' आप लोग सिर्फ नगर की सुरक्षा का पूरा ध्यान रखो। कहीं ऐसा न हो कि फिर कोइ्र दुश्मन हमला करके ाम्पापुर पर कब्जा जमा ले। इसलिए आप लोग जाकर सुरक्षा का इंतजाम देखो। मैं भैया का बहुत समय तक इंतजार करूंगा।''

स्ेानापति और मंत्रीगण ाम्पापुर लौट गये तथा नगर की रखवाली का पुख्ता इंतजाम करने में जुट गये। सुग्रीव गुफा के बाहर अपने चुने हुए साथियों के साथ बैठे रहे।

गुफा के अंदर से न कोई आवाज आती थी , न भीतर के घुप्प अंधेरे में कुछ दीखता था, सो अंदाजा लगाना मुश्किल था कि भीतर क्या कुछ घट रहा है।

लगभग तीस दिन बीत गये थे। बाली का न तो कुछ समाचार आया था, न ही कहीं से कोई उम्मीद दिखती थी। सुग्रीव अब निराश हो चले थे। बाली जैसे अजेय भाई के गायब हो जाने और अपने असहाय हो जाने की कल्पना मात्र से उन्हे रोना आ गया। वे अपने पास बैठे बुजुर्ग मंत्री जामवंतजी से कुछ कहने ही वाले थे कि अचानक चौंक गये। गुफा के भीतर से खून की

एक लकीर आती हुई दिखी जिसे देख कर सुग्रीव के हाथ-पैर ठण्डे हो गये। सबने देखा, बह कर आने वाला खून किसी मनुश्य का ताजा खून था ।

तुरन्त ही पम्पापुर से बाकी बचे मंत्रियों को बुलाया गया। सबका एक ही मत था कि मायावी छल से बाली को ऐसी गुफा में ले गया था जहां पहले से ही उसके साथी छिपे बैठे थे । वहां बाली पर कई लोगों ने एक साथ हमला कर दिया था, बाली बहुत ताकतवर थे वे एक महीने तक उन दुश्मनों से लड़ते रहे और आखिरकार उन्हे अपनी जान से हाथ धोना पड़ा।

सुग्रीव को लगा कि अगर सचमुच महाराज बाली का देहावसान हो गया है तो उनका शत्रु उन्हे मार कर बाहर आयेगा। ऐसे खूंख्वार आदमी से सीधे और युद्ध में अंजान सुग्रीव कैसे लड़ पाये‍ें‍ंगे। मायावी निश्चित ही सुग्रीव को चींटी की तरह मसल डालेगा।

सब लोगों ने विचार करके निर्णय लिया कि इस गुफा का मुंह पत्थर की एक बड़ी चट्टान से बंद कर देना चाहिए और यहां से हट कर राजधानी ाम्पापुर चल देना चाहिऐ।

ऐसा ही हुआ। गुफा का मुंह बंद करके सब लोग राजधानी लौट आये।

अगले दो-चार दिन और इंतजार किया गया।

मंत्रियों ने सलाह दी कि एक महीने से किश्किंधा राज्य बिना राजा का है, ऐसे में राज्य बहुत असुरक्षित होता है। इसलिए उचित होगा कि सुग्रीव राजा बन जायें और अपने भाई द्वारा छोड़ा गया राज्य संभालें। सबके हित में यही काम उचित होगा।

सुग्रीव कई दिन इन्कार करते रहे। फिर एक दिन महारानी तारा ने भी यही संदेश दिया गया तो सुग्रीव मना नहीं कर पाये।

बिना किसी उत्सव और ढोल-ताशे बजाये सुग्रीव चुपचाप किश्किंधा के राजसिंहासन पर बैठ गये। राज्य का झण्डा बदल कर केशरिया बनाया गया, जिसके बीचोंबीच इन्द्र के तीन सूंड़ वाले हाथी ऐरावत का चित्र बना था। राज्य में चलने वाले सिक्कों पर भी ऐरावत का चित्र बनाया गया। सुग्रीव के इश्टदेव इन्द्र थे, इसलिए राज्य के सारे निशानों पर सूरज की जगह इंद्र के चिन्ह आ गये। बस इतना सा परिवर्तन हुआ । बाकी सब ज्यों का त्यों रहा। वही मंत्री परिशद। वही सेनापति और वही युद्ध प्रणाली।

फिर एक दिन चमत्कार हुआ...।

थके और कमजोर से एक बानर योद्धा ने ाम्पापुर में बड़े सुबह प्रवेश किया । वह धूलधूसरित और कई जगह से फटा हुआ लंगोट पहने था।उसके शरीर पर बने कई जख्मों से खून बह रहा था और वह ,जमीन को ताकते हुए चल रहा था। बाजार के मुख्य चौराहे पर आ कर वह बानर खड़ा हुआ तो उसके चेहरे पर अचरज झलक उठा। चौराहे पर बने ध्वज दण्ड में केशरिया रंग का ऐसा ध्वज लहरारहा था जिसके बीचोंबीच सफेद रंग के एक हाथी की आकृति बनी थी जिसकी तीन सूंड़ थी।

झण्डा देख कर उस बानर ने एक तेज हुंकार भरी तो लोगों ने आवाज से पहचाना, ‘अरे ये तो हमारे पुराने महाराज बाली है, जिनको मरा हुआ मान कर सारे आखिरी क्रिया करम कर दिये गये हैं।’

बाली की हुंकार जब राजमहल में पहुंची तो वहां भूकंप सा आ गया। महल के नये सैनिक, नौकर और दूसरे लोग भयभीत से इधर-उधर भागने लगे। ...और राजा सुग्रीव तो सबसे ज्यादा

डरे हुए थे। उन्होने अपने मंत्रियों को तत्काल बुलाया । मंत्रियों ने ही तो जल्दी मचाई थी कि बाली को मरा हुआ मान कर सुग्रीव राजा बन जायें। सुग्रीव इंतजार कर रहे थे, लेकिन सिवाय हनुमान और जामवंत के कोई भी मंत्री उनके पास नहीं आया था, लग रहा था कि वे भी डर के मार या तो कहीं भाग गये थे या फिर छिप कर बैठ गये थे।

जामवंत की सलाह पर सुग्रीव ने अपना राजमुकुट एक थाली में सजाया और वे अपने दोनों प्रिय मत्री जामवंत व हनुमान के अलावा, अपनी पत्नी रूमा, बेटा गद और भाभी तारा व भतीजे अंगद को साथ लेकर चौराहे पर खड़े बाली के पास चल पड़े।

सुग्रीव को देख कर बाली ने फिर से हुंकार भरी। जिसे सुन कर सुग्रीव के आगे बढ़ते कदम जहां के तहां ठिठक गये। लेकिन अब लौटना संभव न था सो वे तुरंत ही आगे बढ़ने लगे।

बाली के सामने पहुंच कर वे उन्होने झुककर प्रणाम किया । राजमुकुट उनके सामने रखा और नीची नजरें करके जहां के तहां खड़े रह गये।

बाली का गुस्सा सातवें आसमान पर था। वे चीखे, '' क्यों वे डरपोक चूहे, तुझे राजा बनने का बड़ा शौक था । तूने मेरा इंतजार भी नहीं किया और मेरी गुफा को बंद कर के भाग आया। ''

'' भैया, आपने पन्द्रह दिन इंतजार करने को कहा था फिर भी मैं एक महीने...'' सुग्रीव ने अपनी बात कहने की कोशिश की लेकिन बाली ने उनकी बात काट दी '' अरे चुप्प रहे झूठे, अंदर गुफा में कितना अंधेरा था और वो तो उसका अपना घर था, उसके पास जाने कितने हथियार थे। मैं निहत्था लड़ रहा था उससे और वो चूहा इधर-उधर छिप जाता था। तू क्या जानता है कि मैं उसके सामने गिडगिड़ाता कि बस भाई रहने दे,, पन्द्रह दिन पूरे हो गये, मेरा भैया मुझे मरा मान लेगा।....धत्तेरे की नालायक !''

बिना गलती के बाली सुग्रीव को डांटे जा रहे थे सो उन्हे भी चिढ़ हो आई, बोले ''आप को क्या पता कि बिना राजा के यह राज्य कितना असुरक्षित था। आपको तो आदत है कि जहां तहां फटे में टांग अड़ाते हों।''

बाली को बड़ा अचरज हुआ कि सुग्रीव ऐसी कड़वी बात कह रहा है, उसमें इतनी हिम्मत कहां से आई ? उन्होने सुग्रीव के पास खड़े जामवंत और हनुमान को देखा, फिर कुछ सोच कर बोला, '' तो तू इन दो सलाहकारों की दम पर मुझसे ऐंठ रहा है। अरे इन दोनों को तो मैं यों मच्छर कीतरह मसल डालूंगा।''

जामवंत ने बीच बचाव करते हुए कहा, '' महाराज बाली, हम तो आज भी आपको ही राजा मानते हैं। हम आप भाई-भाई के बीच काहे को लड़ाई करायेंगे? और सुग्रीव जी भला हमारी हिम्मत से अपने बड़े भाई को गलत काहे बोलेंगे। घर की बात घर में रहने दो। आप महल में पधारो और अपना राजपाट संभालो।''

बाली ने जामवंत की उम्र का भी ख्याल नहीं किया । अपनी आदत के अनुरूप उन्हे भी बूढ़ा और रंगा सियार आदि अपशब्द बोलने लगे तो हनुमान का भी खून खौल उठा, लेकिन वे चुप खड़े रहे। बाली ने उनसे कुछ नहीं कहा था इसलिए बीच में बोलना उन्हे उचित नहीं लगा।

अचानक बाली का गुस्सा फिर भढ़क उठा, उन्होने अपनी गदा संभाली और बिना चेतावनी दिये एक छलांग लगाकर सुग्रीव पर हमला कर दिया। सुग्रीव तो पहले से ही डरे हुये थे और फिर बिना हथियार के वहां आये थे सो वे जब तक संभलते तब तक तो बाली ने उन्हे मारते-मारते अधमरा कर डाला था।

तब हनुमान को लगा कि अब बीच में आना ठीक होगा सो उन्होने बाली और सुग्रीव के बीच जाकर बाली का हाथ पकड़ लिया और बोले '' इनको मार ही दोगे क्या?''

बाली हैरान थे। उन्हे पता था कि यदि कुश्ती हुई तो हनुमान भी ज्यादा कमजोर साबित नहीं होंगे। मन मार के उन्होने अपना हाथ रोका और नफरत भरे स्वर में बोले, '' तुम कहते हो तो आज इसे छोड़ देता हूं। जाओ मैं आज से तुम तीनों को देशनिकाला देता हूं। आप लोग तुरंत ही मेरा राज्य छोड़ दो।''

सुग्रीव बहुत बेइज्जत हो चुके थे। वे मुड़े और अपनी पत्नी से बोले, '' चलो रूमा, अपन लोग चलते हैं।''

'' इसको कहां ले जाता है?े इसी जगह रहेगी।'' बाली ने सुग्रीव को डांटा तो सुग्रीव को सांप ही सूंघ गया।

हनुमान और जामवंत भी हक्के-बक्के होकर सुग्रीव को देख रहे थे।

फिर बाली ने घुड़क कर सुग्रीव से कहा, '' तुम बड़े बेशर्म हो, अब तक यहीं खड़े हो। चलो भागो यहां से। नही ंतो...''

'' भाई साहब मैं अपने पति के साथ...'' रूमा ने बाली को टोकने का प्रयास किया, लेकिन बाली ने उसकी बात को बीच में ही काट दिया, '' तुम चुप रहो रूमा। ये तो आज से खानाबदोश हो गया, तुम कहां मारी-मारी फिरोगी? चलो तुम तारा के साथ महलों में रहो।''

बाली ने बिलखती रूमा का हाथ पकड़ा और नन्हे से गद को भी अपने साथ लेकर महल की ओर चल दिये थे। उधर संुग्रीव बेइज्जती और गुस्से में भरे हुए उन्हे देख रहे थे। जब बाली नजरों से ओझल हो गये तो सुग्रीव को होश आया और वे चुपचाप उस मार्ग पर बढ़ गये जो पम्पापुर से बाहर ऋश्यमूक पर्वत को जाता था।

00000

ऋश्यमूक

जामवंत जब कोई किस्सा सुनाते हैं तो ऐसा रोचक होता है कि सुनने वाले बंध कर रह जाते हैं। लोग खाना-पीना भूल कर उनकी बातों में डूब जाते है। उन्होने एक लम्बी सांस लेकर उस आगे का किस्सा आरंभ किया।

सुग्रीव का नया ठिकाना ऋश्यमूक पर्वत बना। वही ऋश्यमूक पर्वत जहां के बारे में कई किंवदन्ती प्रचलित हैं। कोई कहता है कि बाली को वहां के सात ताड़ वृक्षों के नीचे तपस्या करते मुनि ने   गुस्सा होकर शाप दिया है कि जिस दिन ऋश्यमूक पर्वत पर बाली आ गये उनके सिर के सौ टुकड़े हो जायेंगे । तो कोई कहता है कि वहां बने सूर्य मंदिर पर गलती से खून का अभिशेक कर देने की आत्मग्लानि से बाली वहां खुद ही नहीं जाते। कोई-कोई यह भी कहता है वहां के वनवासियांे ने तय कर रखा है बाली जिस दिन ऋश्यमूक पर्वत पर चढ़ कर ऊपर आ गए, उसी दिन उनका काम तमाम कर दिया जायगा। कोई यह भी कहता कि अपने छोटे भाई के बचपने और डरपोक स्वभाव से परिचित बाली बहुत निश्चिंत थे। वे ाम्पापुर के इतने पास रह रहे सुग्रीव की कुशलता के समाचार लेते रहते हैं और यहां जानबूझ कर नहीं आते कि कहीं सुग्रीव यहां से भाग कर किसी दूर के पर्वत पर किसी असुरक्षित जगह न चला जाये। उधर कुल मिला कर यह जगह सुग्रीव को सुरक्षित जान पड़ी, सो उन्होंने अपने दोनों सचिवों के साथ वहां रहना शुरू कर दिया।

बाली के मन में सुग्रीव और उसके राज्यकाल के मंत्रियों के प्रति बहुत नफरत बढ़ गई थी । वह कोई न कोई बहाने खोज कर हर उस आदमी को भरे दरबार में अपमानित कर देते, जो सुग्रीव की तारीफ कर देता या जिसके बारे में यह पता लगता था कि वह सुग्रीव के प्रति वफादार है। वे उसे किसी न किसी तरह अपने दरबार से निकाल देते थे, और वह आदमी सीधा सुग्रीव के पास आ पहुंचता था। इस तरह तीन लोगों की संख्या से आरंभ हुआ यह काफिला लगातार बढ़ने लगा । जिस दिन अयोध्या के निर्वासित राजकुमार राम और लक्ष्मण यहां आये, तब तक यहां बानर योद्धाओं की अच्छी-खासी छावनी बन चुकी थी।

पंापापुर में पहले जामवंत की देख रेख में चलने वाला जासूसी यानी गुप्तचर विभाग अब महारानी तारा की देखरेख में चल रहा था, ठीक उसी तरह जैसे लंका का गुप्तचर विभाग लंका की महारानी मंदोदरी संभालती थीं। अंगद को भली प्रकार से याद है कि महारानी तारा के जासूसों ने ही खबर दी थी कि लंका इतना सुरक्षित किला है कि वहां यदि मच्छर भी भीतर घुसता है, तो लंका के जासूसों को तत्काल खबर हो जाती है।

जामबंत ने ऋश्यमूक पर्वत के वनवासियों की मदद से दूर-दूर तक के पहाड़ों पर रहने वाले दूसरे ऐसे आदिवासियांे को अपना दोस्त बनाना शुरू कर दिया था,जो सुग्रीव के प्रति हमदर्दी

रखते थे। । इन्ही दोस्तों में से ज्यादातर लोगों की बस्ती में जाकर वे उन्हे इस तरह लड़ना सिखाने लगे कि बिना किसी हथियार के वे लोग पत्थर के टुकड़े या वृक्ष हाथ में रखकर किसी हथियारबंद आदमी से लड़ कर आसानी से उससे जीत सकें। कुछ जवान लड़के छांट कर उन्हे जामवंत जासूसी सिखा रहे थे। जिनमें से कुछ को आजकल पर्वत के चारों ओर इस तरह मौजूद रखा जाता था कि जब भी कोई अंजान आदमी ऋश्यमूक पर्वत के आसपास दिखे, इशारों ही इशारों तुरंत ही जामवंत तक इसकी खबर आ जाये।

यह व्यवस्था काम में आई । राम और लक्ष्मण पर्वत की चोटी की की तरफ जाने वाले मुख्य रास्ते से ओर बढ़े, तो सबसे नीचे एक पेड़ पर बैठे आदिवासी युवक ने कोयल की तरह कूकने की आवाज उत्पन्न की। यह आवाज सुन कुछ दूरी पर ऊपर की ओर बैठे दूसरे ने वही आवाज की और इस तरह एक-एक कर जामवंत के इन जासूसों के इशारों से पर्वत के ऊपर बैठे जामवंत को पता लग गया कि कोई दो हृश्ट-पृश्ट जवान लोग हाथों में धनुश बाण लेकर तेजी से ऊपर चले आ रहे हैं। सुग्रीव को पता लगा तो वे घबरा गये। मन ही मन जाने क्या सोचते हुए डरे हुए अंदाज में उन्होने एक-एक कर अपने आसपास बैठे सारे योद्धाओं पर नजरें डाली, फिर आखिरी में हनुमान से बोले, '' हनुमान, इस काम में केवल तुम समर्थ हो, इसलिए तुम्ही जाकर पता लगाओ कि इस तरह निडर हो कर पहाड़ पर चढ़ने वाले वे दोनों अन्जान वीर कौन हैं? ''

हनुमान क्षण भर में तैयार थे। सुग्रीव दुबारा बोले ''हो सकता है ये अन्जान लोग मेरी तलाश में आये हों। मुझे मारने के लिए इन्हे कोई उपहार देकर शायद बाली ने भेजा होे। अगर तुम्हे ऐसा लगे तो वहीं से इशारा कर देना, मैं इस पर्वत को छोड़ कर किसी सुरक्षित जगह भाग जांऊंगा।''

जामवंत सुग्रीव को धीरज बंधते हुए बोले, '' सुग्रीव जी, आप बिना बात डरो मत। हम लोग पूरी तरह से किसी का भी मुकाबिला करने के लिए तैयार है। फिर भी मुझे इन दोनों वीर लोगों से कोई भय नहीं लग रहा है। मैंने सुना है कि इन दिनों गंगा पार के एक बहुत बड़े साम्राज्य के बहादुर और दयावान दो राजकुमार हमारे आसपास के जगल में भटकते फिर रहे हैं। अगर हमारे पर्वत पर आने वाले वे ही दोनों जन हैं तो वे हमारे लिये कोई खतरा पैदा नहीं करेगे बल्कि हो सकता है कि ऐसा कोई रास्ता निकल सकेगा कि हम लोग ाम्पापुर वापस पहुंच सकेंगे।''

जामवंत की बात पर ध्यान न देते हुए सुग्रीव ने इस ढंग से अपनी तैयारी शुरू करदी कि अचानक ही जरूरत होने पर वे आसानी से चल सकें। तब तक हनुमान ने अपने बदन पर एक पीला चादर लपेट लिया था और अपना अस्त्र यानी गदा एक तरफ रख कर वे भी नीचे की ओर चलने को तैयार थे। उन्होने जामवंत की ओर उचित सलाह के लिए नजरें फेंकीं तो जामवंत ने बिना कुछ कहें उन्हे जल्दी से चल पड़नेे का संकेत किया।

एक पेड़ से दूसरे पर छलांग लगाते हनुमान बड़ी तेजी से पहाड़ के निचले हिस्से की ओर बढ़ चले और वे घड़ी भर में ही राम-लक्ष्मण के सामने थे। लक्ष्मण ने पहलवान जैसे एक बहुत ही लम्बे और तगड़े आदमी को बदन पर पीली चादर लपेटे अपने सामने खड़ा पाया तो आदत के मुताबिक उनके हाथ अपने आप धनुश बाण पर चले गये । वे धनुश पर बाण चड़ाने लगे कि राम ने उन्हे रूकने का इशारा किया ।

हजारों लोगों से मिल चुके अनुभवी हनुमान क्षण भर में ही देख चुके थे कि अपनी रक्षा के लिए हमेशा फुर्ती से तैयार होने में समर्थ इन युवकों की वेशभूशा से इनके बारे में काफी पता लग जाता है। माथे पर बालों का खुबसूरत सा जूड़ा बांधे दोनों युवकों ने बदन पर एक-एक पीला सा दुपट्टा लटका रखा है और बहुत साधारण से पीले कपड़े की धोती को अपने पैरों में इस खुबसूरत ढंग से बांध रखा है कि जरूरत पड़ने पर वे लोग बिना किसी बाधा के तेज गति से किसी का पीछा कर सकें और बिना किन्ही हथियारों के किसी का भी मुकाबिला कर सकें। बड़ी बारीकी से राम और लक्ष्मण का निरीक्षण करते हनुमान ने देखा कि उनके पांवों में बांधी हुई धोती इस ढंग की थी जो गंगा के उस पार के बड़े मैदानों में बसे हुये लोगों के राजा-महाराजा बांधा करते थे। उन दोनों के चेहरे पर छाई उदासी और अपनी तेज नजरों से आसपास के इलाके को घूरते रहने के उनके अंदाज को देख हनुमान ने महसूस कर लिया कि वे किसी की तलाश में ही ऋश्यमूक पर्वत पर जा रहे हैं। हनुमान को उन दोनों के चेहरे के भाव देख कर लगरहा था कि किसी की हत्या करने वाले भाड़े के हत्यारे नहीं है, बल्कि दोनों के मुख पर किसी दयावान व्यक्ति की तरह हरेक को सम्मान से देखने के भाव थे।

हनुमान ने विनम्र होकर उन दोनों को नमस्कार किया तो देखा कि बदले में वे दोनों भी मुस्करा कर उन्हे नमस्कार कर रहे हैं।

हनुमान बोले, '' हे बहादुर युवको, मैं एक साधारण सा ब्राह्मण तपस्वी हूं और इसी पहाड़ी इलाके में रहता हूं। मैं जानना चाहता हूं कि दिखने में मैदानों के किसी बड़े राजा के बेटे जैसे लगते आप लोग कौन हैं, और इधर सूने पहाड़ों पर कैसे घूमते फिर रहे है? हो सकता है कि मैं आपकी कोई मदद कर सकूं।''

'' आप खुद को तपस्वी ब्राह्मण कहते हैं जबकि आपके हट्टे-कट्टे कसरती बदन से आप एक योद्धा जैसे दिख रहे हैं इसलिए सचाई बताना नहीं चाहिए, फिर भी छिपाने से क्या फायदा। हम लोग गंगा के उस पार के एक बहुत बड़े राज्य अवध के महाराज दसरथ के बेटे राम और लक्ष्मण हैं। अपने पिता के आदेश से हम लोग उधर पंचवटी के जंगलों में वास कर रहे थे कि किसी ने मेरी पत्नी का अपहरण कर लिया है । सुना है कि इन पहाड़ों के बीच बसे नगर ाम्पापुर में एक अभिमानी और दुश्ट बानर राजा बाली रहता है जिसकी दोस्ती इसी तरह के एक दूसरे दुश्ट राजा लंकाधिपति रावण से है। हम दोनों उन्ही को खोजते इन पहाड़ों और जंगलों में भटक रहे हैं। अगर आप इस मामले में हमारी मदद कर सकते हैं तो भैया हमारी मदद कीजिये।'' बहुत लम्बे हनुमान के चेहरे की ओर ताकते राम ने विनम्र आवाज में जवाब दिया ।

हनुमान को जामवंत की बात याद आ गई। वे अपना पीला चादर समेट कर उसे दुपट्टे की तरह अपने बदन पर लपेटते हुए बोले, '' मेरे कपट को क्षमा करें प्रभू! सच्ची बात यह है कि हम लोग बानर जनजाति के लोग हैं और इस पर्वत पर अपने नेता सुग्रीव के साथ बहुत सतर्क रहकर निवास करते हैं क्योंकि हमको चारों ओर से खतरा नजर आता है। इसलिए मैंने अपना झूठा परिचय दिया था। आपको पूरी कहानी मेरे नेता सुग्रीव सुनायेंगे। चलिए हम उन्ही के पास चलते हैं।''

हनुमान ने दुबारा प्रणाम कर अपने झूठ के लिए क्षमा मांगी और राम की सहमति जानकर उन्हे रास्ता दिखाते हुए पर्वत की चोटी की तरफ चल पड़े।

कुछ ही पल में वे लोग पहाड़की चोटी पर थे। हनुमान ने एक बहुत छोटी और सरल पगडण्डी पकड़ कर उन्हे यहां तक पहुंचा दिया था।
राम ने देखा कि पहाड़ की चोटी पर पत्थर की बहुत बड़ी खुली गुफा में एक ऊंची से चट्टान पर डरा हुआ सा एक बानर योद्धा हाथ में गदा लिये खड़ा है, जिसके पास उसी जैसे कई दूसरे लोग खड़े हुए उनकी ओर बड़ी सतर्क सी निगाहों से ताक रहे हैं।
लक्ष्मण तो चौंक ही गये जब उन्होने देखा कि बहुत ही बूढ़े सज्जन ठीक उनके पीछे की झाड़ी के पीछे से छलांग लगा कर सामने आ खड़े हुये थे और हाथ जोड़कर अपना परिचय दे रहे थे, '' मैं हनुमान जी के पीछे पीछे नीचे तक पहुंच गया थ और आप लोगों कीबातें सुन चुका हूं। मेरा परिचय यह है कि मैं इन महाराज सुग्रीव का मंत्री जामवंत हूं। मैंने इस पूरे आर्यवर्त देश को घूम रखा है। मैंने आपकी राजधानी अयोध्या भी देखी है और आपकी पत्नी जानकी का मायका जनकपुर भी ामैं देख चुका हूं। आप हम सबको अपना दोस्त समझिये।ये हमारे नेता सुग्रीव जी हैं और हनुमान से आप मिल ही चुके हैं, बाकी लोगों से आपका परिचय अभी कराते हैं। ''

हनुमान ने आगे बढ़ कर सुग्रीव को राम और लक्ष्मण का परिचय दिया तथा अपने दल के लोगों का परिचय राम-लक्ष्मण से कराया। राम लक्ष्मण उन सबसे गले लग कर दोस्तों की तरह मिले, फिर सब लोग वहां रखे हुए पत्थर के टुकड़ों पर बैठ गये।

द्विविद, मयंद और नल-नील ने तुरंत ही सबके लिए ताजे फलों का इंतजाम कर अल्पाहार कराया । जामवंत ने पहाड़ पर चढ़ने की मेहनत से थक चुके राम और लक्ष्मण से कुछ देर आराम करने का अनुरोध किया।
राम ने उनका अनुरोध मान लिया वे गुफा के भीतर जाकर बिश्राम करने लगे, जबकि लक्ष्मण हाथ में धनुशबाण लेकर बाहर पहरा देने लगे।
सूरज का गोला अस्त होने की तैयारी कर रहा था कि राम उठ कर बाहर आये। लक्ष्मण के साथ सबने उन्हे प्रणाम किया। सुग्रीव ने अपने सबसे ऊंचे आसन पर उन्हे बैठने का इशारा किया। राम बैठे तो बाकी सब भी बैठने लगे।
राम ने हंस कर सुग्रीव से पूछा, '' बताओ सुग्रीव, तुम इस सुनसान और असुविधा वाले पहाड़ पर अपने दोस्तों के साथ क्यों निवास कर रहे हो?''
सुग्रीव रूआंसे हो उठे। उनका गला भर आया। उन्होने दुःखी भाव से अपने भाई बाली का किस्सा बड़े विस्तार से राम - लक्ष्मण को सुनाया और अंत में निवेदन किया कि उनकी एक ही इच्छा है कि किसी तरह उनका खोया हुआ सम्मान मिल सके तथा वे बाली को उसके गलत व्यवहार का दण्ड दे सकें और पूरी इज्जत के साथ वापस ाम्पापुर लौट जायें।
राम ने उन्हे पूरा भरोसा दिलाया कि उनकी इच्छा पूरी होगी। लक्ष्मण ने तो राम के मन में छुपे हुए भाव को खुल कर बताया '' हे सुग्रीव जी, अब आप निश्चिंत रहिए। हम लोग इस पहाड़ी क्षेत्र को बाली नाम के दुश्ट आदमी के आतंक से छुटकारा दिला कर दम लेंगे। जल्दी ही आप अपने घर वापस पहुंच जायेंगे।''
अचानक राम ने पूछा, '' हे सुग्रीवजी , आपकी तकलीफ तो हमने सुन ली । आप हमारा दुख भी सुन लीजिये।''

राम ने विस्तार से बताया कि किस तरह पंचवटी नामक जगह पर रहने के दौरान उनकी ऐसे वक्त जब राम और लक्ष्मण शिकार करने गये थे, सूनी कुटिया से उनकी पत्नी सीता का किसी ने हरण कर लिया है। उन्हे शंका है कि अपनी ताकत के घमण्ड में मतवाले बाली ने तो ऐसा नहीं किया है!

जामबंत ने तुरंत ही कहा '' प्रभु यह सही है कि बाली को अपनी ताकत का बड़ा अभिमान है लेकिन आपकी पत्नी जानकी का हरण बाली ने नहीं किया होगा। क्योंकि मैं उनका पुराना साथी हूं। बाली को किसी को भी गालियां देने, बुरा भला कहने और बिना बात भिढ़ जाने की आदत तो है लेकिन किसी की पत्नी का अपमान करने या हरण करने का बुरा काम उन्होने आज तक नहीं किया है।''

राम को अब भी आशंका थी, वे बोले '' लेकिन सुग्रीव जी कह रहे हैं कि बाली ने इनकी पत्नी और बेटे को इनसे छीन कर अपने महल में रख लिया है।''

जामवंत पूरी गंभीर आवाज में बोले, '' मेरे जासूसों ने खबर दी है कि सुग्रीव जी की पत्नी को वहां पूरा सम्मान और सुविधा दी गई है। वे न तो महल के जेलखाने में बंदी हैं न ही उन्हे नौकरानी या दासी बनाया गया है।''

लक्ष्मण ने सुना कि सुग्रीव बुदबुदा उठे हैं, '' मुझे तो आपके जासूसों पर विश्वास नहीं है, मेरा मन तो कहता है कि बाली ने रूमा को जबरदस्ती अपनी पत्नी बना लिया है।''

'' बाली की दोस्ती रावण जैसे नीच आदमी के साथ है, जो इसी बात के लिए बदनाम है कि जहां तहां से लड़कियों और औरतों को उठा लाता है और उनको बेच कर अपनी सोने की लंका में सोने का भण्डार बढ़ाता जाता है।'' राम ने जामवंत से फिर पूछा।

'' हे प्रभो, रावण से बाली की कभी दोस्ती नहीं रही। बाली ने तो रावण का घमण्ड तोड़ा है और उसे अपने महल में छह महीने तक बंदी बना कर रखा था। हां, आपका शक रावण की तरफ ठीक गया है, वह ऐसा ही दुश्ट और कमीना है। और मुझे तो लगता है कि उस दिन अपने रथ में एक रोती हुई औरत को बैठा कर वही भागा जा रहा था...'' जामवंत को सहसा कुछ याद आया और वे आगे बोलते इसके पहले ही राम ने उनकी बात काटी '' कब कीबात है यह?''

अब सुग्रीव बोले, '' हे रधुवंशी रामजी, हम सब एक दिन ऋश्यमूक पर्वत के निचले हिस्से में एक सुरक्षा चौकी देखने गये थे कि हमने पाया कि एक काला कलूटा सा भैंसे जैसे तगड़ा आदमी अपने रथ में एक बहुत संदर स्त्री को बैठाये भागा जा रहा था। उसने अपने बांये हाथ से रथ में जुते घोड़ों की डोर थाम रखी थी जबकि दांये हाथ से उसने रोती हुई स्त्री के बाल पकड़ रखे थे। वह औरत देख कर जोर से चीखी और हमसे मदद की गुहार करने लगी । लेकिन हम लोग तो पहले से ही बाली से डरे हुए लोग हैं, सो हम जहां के तहां खड़े रहे और वह दुश्ट हमारे सामने से निकल गया। उन भली महिला ने हमे देख कर अपने कुछ जेवर हमारी ओर फेंके थे कि शायद सोने के जेवरों के बदले हम उन्हे मुक्त कराने का साहस करेंगे। हालांकि उस दुश्ट की यह हरकत देख कर महाबली हनुमान ने आगे बढ़ने की कोशिश की थी तो जामवंत जी ने उन्हे रोक कर कहा था कि जब तक दुश्मन की ताकत का अंदाजा न हो, तब तक उस पर हमला नही करना चाहिए।''

राम ने जल्दबाजी में कहा, '' वे जेवर कहां है?''

'' जाओ द्विविद वे जेवर उठा लाओ।'' सुग्रीव ने हुकुम दिया।

बानर द्विविद ने गुफा से लाकर महिलाओं द्वारा गले में पहने जाने वाले एक हार और कान का एक कुण्डल लाकर राम के हाथ में दिया तो राम तत्काल पहचान गये कि यह तो सीता के ही जेवर हैं। उन्होने लक्ष्मण से कहा, '' यह पक्का हो गया कि सीता को रथ में बैठा कर ले जाया गया था, लेकिन वो काला कलूटा आदमी कौन था, इसका पता लगना बाकी है।''

जामवंत बोले, '' प्रभु आप सुग्रीव जी का कश्ट दूर कर दीजिये । हम सब आपके साथ हेंैं । हम कंधे से कंधा भिढ़ा कर उस चोर को तलाश करेंगे और उसे इस भयानक अपराध के बदले में उचित सजा देने के लिए अपनी जान तक दांव पर लगा देंगे। हम लोगों ने इस बीच एक वनवासी सेना बनाई है जिसका उपयोग हम ाम्पापुर पर हमला करने के लिऐ करने वाले थे, अब यह सेना आपके काम के लिए काम में लाई जायगी।''

राम भी अपनी बात पर अटल पर थे। वे बोले, '' मैं कल ही चल कर बाली को उसकी सजा देने का तैयार हूं।''

जामबंत बोले, '' प्रभो, आपका कोई निजी बैर भी बाली से नही हैं फिर आप तो पिता की आज्ञा से वनबास में हैं, इन दिनों आप किसी नगर में जाते भी नही है । इसके अलावा यदि आप बिना बात ही इन दो भाइयों के बीच लड़ाई में कूदेंगे, तो हमारे साथ के बहुत से बानर और आदिवासी लोग आपसे नाराज हो जायेंगे। इसलिए इस लड़ाई से आप दूर दिखते हुए ऐसा कुछ तरीका खोजिये कि सुग्रीव जी के हाथों बाली को दण्ड दिलाया जाये।''

लक्ष्मण ने देखा कि सुग्रीव ने यह सुना तो वे कंप गये। धीरज त्याग कर वे बोल उठे, ''जामवंत जी, मेरे भाई इतने ज्यादा ताकतवर हैं कि मै सपने में भी नहीं सोच पाऊंगा कि उन्हे दण्ड दे सकूं।''

'' आप चिन्ता न करंे, मेरा छोटा भाई लक्ष्मण ाम्पापुर जाकर बाली को पकड़ कर इसी पहाड़ पर घसीट लायेगा और आप यही उसको दण्ड देंगे।'' राम ने सुग्रीव को निशं्िचंत किया।

जामबंत फिर अपनी बात पर आ गये,''नही रघुवीर राम जी, आप दोनो ंभाइयों का इस तरह बाली से लड़ने से हमारे अगले संघर्श पर गलत असर पड़ेगा। हम पहाड़ी लोगों के झगड़े में आप मैदान के रहने वाले लोगों का बीच में आना कोई स्वीकार नहीं कर पायेगा।''

''तो आप क्या चाहते हैं?'' राम ने जामवंत पर आखिरी निर्णय छोड़ा।

'' कल मैं विचार करके कोई रास्ता सुझाने की कोशिश करूंगा।'' जामवंत ने बेहिचक उत्तर दिया तो यह सभा समाप्त हो गई और सब लोग संध्या के भोजन और सोने की तैयारी करने लगे।

00000

कुश्ती

पांच दिन बाद!

सब लोग चलने को तैयार थे बस राम के हुकुम का इंतजार था।

दो दिन में राम और जामवंत को बहुत कुछ करना पड़ा।

राम ने सुग्रीव को समझाया कि बाली से इतना डरो मत! वह कोई पत्थर की मूर्ति नहीं है, एक साधारण सा आदमी है, यदि पूरी हिम्मत के साथ उससे कुश्ती की जावे तो उसे हराना कोई कठिन काम नही है, और राम का खुद जाकर बिना बात उससे लड़ बैठना ठीक नही है। क्योंकि बाहर का आदमी लड़ाई करेगा तो तुम्हारे समाज के लोग भी गुस्सा हो जायेंगे। उनका गुस्सा होना ठीक नहीं, क्योंकि कल को तुम राजा बनोंगे तो उन्ही से तो काम लेना है तुम्हे। उधर जामवंत ने अपने जासूसों से ाम्पापुर में यह अफवाह फैला दी कि ऋश्यमूक पर्वत के मुनियों ने ताकतवर असर वाली जड़ी-बूटीयों को खिलाने के साथ मल्लयुद्ध के दांवपेंच सिखा कर सुग्रीव की देह वज्र सी कठोर बना दी है, यानीकि आजकल सुग्रीव बहुत बलशाली हो गये हैं। वे किसी भी दिन ाम्पापुर आकर बाली को कुश्ती के लिए ललकारने वाले े हैं। बाली के राजदरबार के अनेक बानर वीरों को भी यह समझाया गया कि मनमाने तरीके से राज काज चलाने के बाली के दिन खत्म होने वाले हैं, अब भलाई इसी में है कि बाली-सुग्रीव की लड़ाई में सुग्रीव का साथ दिया जाय।

कुल मिला कर ाम्पापुर का माहौल ऐसा हो गया था कि बाली सुग्रीव की लड़ाई को लोग इस तरह देखने लगे थे , यह दो भाइयों की आपसी लड़ाई है न कि किश्किंधा के राजा की किसी दूसरे देश के नागरिक से।

हनुमान , द्विविद, नील , नल और जामवंत ने अपने सैकड़ों वनवासी साथियों के साथ ाम्पापुर के बाहर उस बागीचे तक पहुंच कर उसको चारों ओर से घेर लिया जहां कि बाली को उकसा कर सुग्रीव कुश्ती के लिए लाने वाले थे।

इसके बाद सुग्रीव को तैयार कर राम और लक्ष्मण भी ऋश्यमूक पर्वत से चलपड़े। फिर राम-लक्ष्मण को बागीचे के बाहर छोड़कर सुग्रीव ाम्पापुर में धंसते चले गये और ठीक राजमहल केसामने जापहुंचे। बाहर खड़े सेनिकों ने उन्हे देखा तो वे पहले चौंके फिर पिछले दिनों नगर में

चल रही अफवाहेंउन्हे याद आई ंकि इन दिनों सुग्रीव का बदन वज्र की तरह हो गया है और वे किसी भी दिन आकर बाली को कुश्ती के लिए ललकारने वाले है। अब भलाई इसी में है कि बाली की बजाय सुग्रीव का सा थ दिया जाय। सैनिक डर से चिल्लातेहुए भीतर की ओर भागे तो सुग्रीव ने खुशी और अहंकार में भर कर एक किलकारी मारी। महल के सन्नाटे में सुग्रीव का स्वर कोने-कोने तक गूंज उठा। भीतर बाली आराम फरमा रहे थे, उन्होने सुना तो अपने एक सेवक से सारा माजरा पूछा। भय से थर-थर कांपते सैनिक ने जो कुद सुना था वह और जो कुछ देखा था पूरा का पूरा कहसुनाया। बाली ठहाका लगा कर हंस पड़ें।

सहसा सुग्रीव की ललकार फिर सुनाई पड़ी तो बाली की हंसी ठहर गई। उन्होने बैठे-बैठे ही एक हुंकार लगाई और अपनी गदा संभाल कर बाहर की ओर चलने को उठ खड़े हुए। अचानक ही महारानी तारा उनके सामने आ खड़ी हुई थीं। बाली ने गुससा होते हुए उन्हे अपने सामने से हटने को कहा तो वे बोलीं, '' महाराज, आप सुग्रीव को अकेला जान कर उससे कुश्ती के लिए जा रहे हैं, लेकिन आपको शायद पता नहीं हैं कि इस समय सुग्रीव की दोस्ती अयोध्या के राजकुमार राम और लक्ष्मण से हो चुकी है। वे दोनों भाई सुग्रीव के साथ हैं और आपको अनुमान नही है िकवे दोनों कितने ताकतवर इंसान हैं।''

बाली ने तारा द्वारा जुटाई गई गुप्त सूचना पर कतई विश्वास नही किया बल्कि उसकी हंसी उड़ाते हुये बोले, '' महारानी, तुम इन झूठी सच्ची अफवहों पर ध्यान न दिया करो। और फिर राम ओर लक्ष्मण भी यदि इस वक्त बाली के साथ हैं तो मुझे उनसे क्या डरना? मैं उनसे भी दो-दो हाथ कर लूंगा।''

यह कह कर बाली महल से निकल पड़े।

सुग्रीव ने देखा कि हृश्ट-पुश्ट बाली अपने हाथ में भारी भरकम गदा लिये हाथी की तरह मदमस्त हो चले आ रहे है। बाली को पुराने सारे प्रसंग याद आ गये, जब कि बाली ने अपने हाथों से उनकी ढंग्र से कुटम्मस की थी। सुग्रीव डर के मारे कंप गये। उन्होने अपने चारों ओर देखा। वे यहां निहायचत अकेले खड़े थे। आसपास न तो कोईग् सहयोगी था न ही कोई सहायक पहलवान। वे सहसा पलटे और उन्होने उस बागीचे की ओर दौड़ लगा दी, जहां बाली को घेर कर लाने की योजना राम ने बनाई थी।

बाली ने भागते सुग्रीव को देखा तो वे फिर हंस पड़े। लेकिन उन्हे लगा कि इस बार यदि सुग्रीव को पीटा नहीं गया तो वह बार बार दूसरों के बहकावे में आकर इसी तरह नाटक करता रहेगा। सो वे सुग्रीव के पीछे खुद भी दौड़ पड़े।

सुग्रीव ने अपने पीछे तेज गति से भागते बाली को देखा तो वे सिर पर पैर रख कर भाग निकले।

बागीचे में जाकर सुग्रीव रूके और बाली की ओर देखने लगे। बाली केपीछे ाम्पापुर के अनेक नागरिक तमाशा देखने के लिए चल ेआये थे। सुग्रीव को ललकारते बाली बोले, '' क्यों वे डरपोक, तुझमे इतनी हिम्मत कहां से आ गई कि अपनी मौत को ललकार रहा है।''

झिझकते से सुग्रीव ने कहा, '' तुमने बहुत अत्याचार कर लिया महाराज बाली, आज मैं आपसे आर या पार की लड़ाई के लिए आया हूं।''

'' तो आजा नकली पहलवान, हो जायें दो-दो हाथ!'' बाली ने दांत मिसमिसाये।

इतना कह कर बाली ने अपनी गदा एक तरफ फेंकी और एक झपट्टा मारा व सुग्रीव को दबोच लिया। सुग्रीव ने पूरी ताकत लगाकर अपने आपको छुड़ाने का प्रयास किया और सफल न हुए तो वे ऋश्यमूकपर्वत पर फुरसत के दिनों में सीखे गये कुश्ती के दांव याद कर कोई दांव लगाने का सोचने लगे। क्षण भर का सोचना ही उन पर भारी हो गया था। बाली ने उन्हे घूंसों और घुटने की ठोकरो ंसे धुन कर रख दिया तो सुग्रीव हांपने लगे। उन्होने आशा भरी नजरों से दूर खड़े राम और लक्ष्मण की ओर देखा तो बाली तुरंत ताड़ गये।

बाली ने भी सुग्रीव को पीटते हुए उधर नजर दौड़ाई जहां सुग्रीव ताक रहा था। दूर दो तपस्वी युवक हाथ में धनुश बाण लिए इधर ही ताक रहे थे। उन दोनों तपस्वियों के चेहरे पर परेशानी के भाव देख कर बाली को भारी खुशी हुई। वे चिल्ला कर बोले, '' अरे नादान राजकुमारो, इस बेवकूफ को क्यों भढ़का कर यहां मर जाने के लिए ले आये हो। यदि तुम लोग नामर्द नहीं हो और तुम्हे अपने बल का ज्यादा घमण्ड है दूसरे की ओट से क्यों तीर चलाते हो, खुद आकर मुझसे कुश्ती लड़ों।''

इतना सुनकर लक्ष्मण को गुस्सा आ गया, वे अखाड़े में कूदना ही चाहते थे कि राम ने इशारे से उन्हे रोक दिया।

बाली की आदत थी कि वे बहुत कड़वी बातें बोलते थे, सो चुप नही हुए बोले, '' तुम एक दूसरे को क्या ताक रहे हो डरपोक चूहो। आओ, मैं ताल ठोंक कर तुम्हे कुश्ती के लिए ललकारता हूं।''

राम अब भी चुप थे और मुस्करा रहे थे। हनुमान को अब गुूस्सा आने लगा था। लेकिन राम को मंद-मंद मुस्कराते देख कर वे भी कसमसा कर चुप खड़े रहे। जामवंत जैसे सहनशील व्यक्ति को भी बहुत गुस्सा आने लगा था।

जामवंत ने देखा कि बाली के दरबार के सारे के सारे बड़े योद्धा बागीचे के इस अखाडे ़के चारों आंेरं आ चुके थे और इस वक्त एक तरफ खड़े हो कर यह तमाशा देख रहे थे।

बाली का मन सुग्रीव की पिटाई और राम के अपमान से पूरा नहीं भरा था उन्होने सुग्रीव के हाथ से गदा छीनी, उसके दो टुकड़े कर डाले और दूर फेंक दिये। फिर उन्होने एक बार और दर्द से कराहते सुग्रीव को पीटना शुरू कर दिया। सुग्रीव अब सहन नही कर पा रहे थे सो वे बुक्का फाड़ कर रो उठे। राम का दया आ गई। वे सोचने लगे कि यह बेचारा भोला आदमी मेरे कहने से बिना कारण ही पिटा जा रहा है। कुछ करना होगा।

एकाएक बाली को जाने क्या सूझा कि उन्होने बहुत तेज आवाज में हुंकार भरी और राम की ओर देख कर चिल्ला उठे, '' अरे ओ तपस्वी, क्या देख रहे हो? तुम्हारा दोस्त पिट रहा है। तुम तो सचमुच नामर्द आदमी हो । ''

लक्ष्मण को फिर गुस्सा आया तो वे कसमसा उठें, लेकिन लक्ष्मण को रूकने का इशारा कर राम मुस्कराते हुऐ चुप खड़े रहे।

बाली का हौसला बढ़ गया। वे और जोर से चिल्लाये, '' मेरे सभासदो और बानर वीरो, देखा तुमने? ये डरपोक सुग्रीव आज बड़ा पहलवान बन कर आया था, और मेरे हाथों कैसा पिट रहा है। इसे भढ़काने वाले चुपचाप खड़े इसे पिटता देख रहे हैं।''

राम ने बानर वीरों की तरफ देखा। वे सब उदास से खड़े थे, जैसे उन्हे कोई मतलब न था। यह बात सुगीव के पक्ष में थी। यदि वे लोग बाली की हां में हां मिलाते तो इससे साबित हो जाता कि वे सब बाली को नुकसान पहुंचने पर भढ़क उठेंगे।

बाली अब भी चिल्ला रहे थे, ‘‘ अरे ओ राम, मैं तुम्हारे पूरे परिवार को जानता हूं। तुम्हारी माँ कैकेयी जितनी सुन्दर हैं उतनी ही दुश्ट भी हैं। तुम्हारे पिता तो उनके गुलाम की तरह हैं। तुम भी......’’

बाली की बात को राम ने काट दिया, ‘‘ बस्स , चुप रहो मूर्ख बाली। बहुत हो चुका। तुम मुझे कुछ भी कहते रहो, लेकिन तुम्हारी इतनी हिम्मत कि मेरे माँ-बाप के बारे में कुछ बोलो।’’

उधर जामवंत भी चिल्ला उठे थे, ‘‘ महाराज बाली, इस लड़ाई में आप राम को क्यों समेट रहे हो? फिर राम को बुरा-भला कहने के बजाय उनके पिता और माँ के बारे में क्यों अपशब्द कहते हो?’’ बानर वीरों की ओर मुड़कर जामवंत आगे बोले, ‘‘ आप सब सुनरहे हो न बानर वीरो, हमारे बाली महाराज ने राम के माता-पिता को अपमान करके पूरी बानर बिरादरी का अयोद्धा जैसे बलशाली राज्य का दुश्मन बना लिया है। वहां की सेना हमारे किश्किंधा को क्षण भर में तहस-नहस कर डालेगी।’’

बानर योद्धा विकटास बाली का सेनापति था, वह जामवंत से बोला ‘‘ जामवंत जी, बाली महाराज की हर गलती के लिए हम लोग जिम्मेदार नही है। यह उनका निजी मामला है, आप श्रीराम से कहिये कि वे हमे अपना दुश्मन न समझें।’’

राम ने बाली से कहा, ‘‘ ये तुम्हारा निजी मामला था, मैं बोलना नहीं चाहता था, लेकिन तुम चाहते हो तो आओ हम दोनों युद्ध करते हैं।’’

बाली को मजा आ गया। राम भढ़क उठे थे।

बाली ने बगीचे का एक पतला सा पेड़ उखाड़ा और उसे लाठी की तरह घुमाते हुए राम की तरफ निशाना बांध कर फेंक दिया। राम फुर्ती से एक तरफ हट गये और उसके वार को बचा गयेै। लेकिन बाली रूके नहीं। उन्होने पास में बड़ा एक बड़ा सा पत्थर उठा लिया था और उसे राम की ओर फेंकने ही जा रहे थे कि सब चौंक उठे। इस बीच राम ने गजब की फुर्ती दिखाते हुए अपने धनुश पर एक तीर चढ़ाया था और बाली की तरफ छोड़ दिया था। राम का तीर इतनी तेजी से सनसनाते हुए बाली की ओर लपका कि देखने वाले सन्न रह गये।

तीर सीधा बाली की बांयी पसली में जाकर धंसा और वहां से खून का फोेबारा निकल पड़ा। बाली के हाथ की चट्टान नीचे गिर गयी। वे अपने दांये हाथ से तीर निकालने का प्रयास करते हुए जमीन पर बैठते चले गयेउधर सुग्रीव इतने में ही डर गये थे उन्होने कंपते हुये हाथ से राम को दूसरा कोई बाण छोड़ने से मना कर दिया।

बाली जितना गरजते थे उतने दमदार नहीं निकले। राम के एक ही बाण ने उनका काम-तमाम कर दिया था। उनमे ंअब इतना साहस नहीं बचा था कि उठ पाते। वे राम से बोले ‘‘ हे रघुवंशी, आप बहुत बलशाली हैैं। आप पहले आदमी हैं जिन्होने मुझे युद्ध में हरा दिया। मैं बहुत खुश हूं। बोलो क्या वरदान मांगते हो?’’

लक्ष्मण को हंसी सूझी कि जो आदमी खुद मौत के मुंह में फंसा हुआ हो वह दानी और महाराज बन कर वरदान की बात करता है। लेकिन राम बहुत मीठी आवाज में बोले, '' महाराज बाली, आप भी बहुत बलबान हैं। आप धीरज रखिये पंपापुर के राजवैद्य को बु्ूलवा कर हम आपका उचित इलाज कराते है।''

बाली को यही सुनने के पहले ही मूर्छा आ गई थी।

किसी ने राजवैद्य को सूचना कर दी थी इस कारण कुछ ही देर में पंपापुर के एक रथ में आकर राजवैद्य अपनी दवाओं के पिटारे के साथ उतरते दिखे। वे जल्दी से बाली के इलाज में जुट गये। राम के इशारे पर सुग्रीव ने बाली का सिर अपनी गोदी में रख लिया था जबकि पंपापुर के वे बानर योद्धा जो बाली के स्वामीभक्त थे, डर गये थे और एक-एक कर के वहां से खिसकने लगे थे।

कुछ ही देर में एक रथ और आया जिसमें से बाली की पत्नी महारानी तारा अपने बारह-तेरह साल के पुत्र अंगद के साथ हड़बड़ी में उतरीं। तारा के बाल बिखरे हुए थे और वे रह-रह कर रो उठती थीं।

तारा ने अपनी गोद में बाली का सिर लिया और वैद्य की सहायता करने लगी।

वैद्य की दवा का चमत्कार था कि क्षण भर बाद बाली की मूर्छा जागी, 'उन्होने तारा को देखा तो मुस्करा उठे। तारा से बोले '' तुम रो क्यों रही हो। तुम्हारा पति एक बलबान और बहादुर आदमी के हाथों हारा है। यदि मैं मर भी गया तो अब चिन्ता नही है। ये सामने राम खड़े हैं न ये मेरे बेटे अंगद को बाप की तरह लाड़ करेंगे। तुम चिन्ता मत करो।''

ये आखिरी शब्द थे बाली के। बस इतना ही बोलना लिखा था बाली के भाग्य में। इसके बाद वे एक शब्द भी नहीं बोल पाये और तुरंत मूर्छित हो गये फिर उसी मूर्छा में कुछ देर बाद उन्होने देह छोड़ दी।

राम ने तारा को समझाया कि बाली एक महान योद्धा थे, उन्हे लड़ाई का बहुत शौक था। उन्हे तो किसी युद्ध में ही वीर गति पाना थी। इसलिए जो हुआ उसका उन्हे खेद है। अब वे पूरे निडर होकर रहें। अंगद आज से उनका बेटा है, उसकी चिन्ता न करें।

फिर राम ने सुग्रीव को पूरे राजकीय सम्मान के साथ बाली का अंतिम संस्कार करने का आदेश दिया और वापस ऋश्यमूक पर्वत चले आये।

लक्ष्मण ने स्वयं जाकर सुग्रीव को किश्किंधा राज्य का राजा बना कर राजतिलक किया और अंगद को युवराज बनाया। लोग श्रीराम की बुद्धिमानी पर बहं्ुत खुश थे कि कहीं ऐसा न हो कि बाली के बेटे और पत्नी को दुश्मन मान कर सुग्रीव उनके साथ गलत बर्ताव करे सो उन्होने अंगद को राजा के बराबर का सम्मान और हक दे दिया।

राजा बनने के बाद सुग्रीव ने श्रीराम को पंपापुर के पास के सं्ुदर और सुविधायुक्त पर्वत प्रवर्शन पर ठहराया और उनसे निवेदन किया कि अब वे जल्दी ही अपनी सारी सेना जनक सुता सीता को खोजने के लिए भेज देंगे।

लेकिन पूरी बरसात बीत गयी न तो सुग्रीव ने सीता को खोजने का कोई बंदोवस्त किया था न ही स्वयं आकर इस बारे में कुछ कहा तो राम को लगा कि सुग्रीव राजा बनते ही सुख और सुविधाओं में ऐसा रम गये कि उन्हे मेरा काम याद नहीं रहा सो उन्होने लक्ष्मण को पंपापुर जाकर सुग्रीव को सबक सिखाने का निर्देश दिया था।

00000

तलाश

सुबह सबेरे राम के साथ सुग्रीव , जामवंत, द्विविद, हनुमान आदि योद्धा बैठे और विचार करने लगे कि सीता को खोजने के लिए किस दिशा में दल भेजा जाये।
जामवंत ने बताया कि चारों दिशाओं में दल भेजे जाने चाहिए लेकिन सबसे बड़ा दल दक्षिण दिशा को भेजा जाये। क्योंकि उस दिन वह कालाकलूटा सा आदमी दक्षिण दिशा को ही अपना रथ लेकर गया था।
यही सहमति बनी। जामवंत को दल का मुखिया बना कर दक्षिण दिशा में जो दल भेजा गया उसमें हनुमान, अंगद, नल,नील, द्विविद,मयंद, विकटास आदि वीर शामिल थे।
लगभग पूरा दल राम को प्रणाम करके निकल गया तो आखिर में अंगद और हनुमान खड़े रह गये। राम ने अंगदसे कहा '' अंगद, तुम अभी छोटे हो। इस यात्रा में जाने कितने कश्ट होंगे, जाने कैसे लोगों से पाला पड़ेगा। सो तुम मत जाओ।''
अंगद ने लाड़ भरे स्वर में कहा '' आप मेरे पिता के समान में हैंै प्रभु। अगर इस उम्र से मैं संकट और अन्जान परिस्थितियों से निपटना नहीं सीखूंगा तो कब सीखूंगा। आप चिन्ता मत करिये मेरे साथ हनुमानजी और गुरूदेव जामवंत जी भी जा रहे हैं न। उनके साथ मैं बहुत सुरक्षित और निश्चिंत हूं।''

राम जानते थे कि संसार में तीन हठ प्रसिद्ध है - बाल हठ, राज हठ और त्रिया हठ। अंगद की यह हठ बालहठ है जो संभलना मुश्किल है, फिर युवराज होने के कारण इसमें राज हठ भी सम्मिलित है। वे लक्ष्मण की हठ के कई बार शिकार हो चुके थे। इस कारण उन्होने अंगद को ज्यादा नहीं समझाया, हंस करसहमति देदी। हां हनुमान को संकेत करके अपने पास बुलाया। हनुमान पास आये और चुपचाप खड़े हो गये।

राम ने उनसे कहा '' हनुमान तुम भी साथ जा रहे हो।अंगद का ख्याल करना, वह अभी बच्चा है। उसे हठ मत करने देना। किसी आपत्ति में न पड़ जाये वह। हां... एक बात और कहनी है तुमसे । अगर तुम किसी तरह सीता तक पहुंच सको, तो तुम्हे यह प्रमाण देना पड़ेगा कि तुम मेरे दूत हो। इसके लिए मैं तुम्हे अपनी मुद्रिका दे रहा हूं। यह मुद्रिका देखते ही वह विश्वास कर लेगी कि तुम्हे मैंने भेजा है।तुम उसे मेरा यह संदेश सुनाना और उसके समाचार लेकर वापस चले आना।''

फिर राम ने हनुमान को अलग ले जाकर सीता तक पहुंचाने हेतु कोई संदेश दिया ।

राम ने एक अंगूठी अपनी अंगुली में से निकाल कर हनुमान को दी, जिसे हनुमान ने अपने कांधे पर पहने जनेऊ में बड़े जतन से बांध लिया और जय श्रीराम कहकर वहां से चल पड़े।

प्रवर्शन पर्वत से उतर कर यह झुण्ड सीधा दक्षिण की ओर मुंह कर चल पड़ा। आदिवासी लोग थे, ऊंचे-नीचे रास्ते और झाड़ियों में से चलने का अनुभव था सो तेज गति से चलने में कोई दिक्कत नही हुई। समय काटने के लिऐ लोग आपस में हंसीमजाक करने लगे, मस्ताने लगे । जामवंत का अनुशासन जरूर था फिर भी बानर लोग हो-हल्ला कर रहे थे।

अचानक कोई मुनि मिलता तो वे सब उसे घेर लेते। पूरे सम्मान के साथ उससे बात करते । पूछते भी कि क्या उन्हे पता है कि अयोध्या की राजरानी सीता को कोई अजनबी आदमी हर ले गया है! वो आदमी कौन है, और कहां रहता है?

लेकिन कुछ भी पता नहीं लगता तो वे मुनि को छोड़ आगे बढ़ लेते।

सीता को हर ले जाने वाले काले-कलूटे मुस्तण्डे आदमी जैसा कोई मिलता तो वे उसे घेर लेते और गहरी पूछताछ करते। अगर वह कुछ गलत बोलता या बदतमीजी करता तो उसके नाक कान काट कर बानर उसे वही छोड़ देते और आगे चल देते।

इसी तरह चलते हुए वे लोग एक गहरी सी घाटी में जा पहुंचे।

चारों ओर ऊंचे पहाड़ थे और किसी जन्तु या जानवर का नामोनिशान न था वहां। जामवंत को लगा कि इस घाटी में ऐसा कोई खतरनाक जन्तु तो नहीं रहता जिसने यहां के सारे पशु-पक्षी खा डाले हों!

जामवंत ने अपनी शंका बताई तो सब लोगों को यही सचाई लगी। उन सबने अपनी-अपनी गदायें संभाली और चारों ओर का निरीक्षण करने लगे।

कुछ देर बार सचमुच उन सबको सामने के पहाड़ में बनी एक चौड़ी सी गुफा में एक विशाल जबड़े वाला खतरनाक सा आदमी दिखा। ऐसा लग रहा था कि वह कोई बहुत ऊंचा और तगड़ा आदमी था जिसके बड़े और डरावने दांत यहीं से चमकते दिख रहे थे। वह अपनी लम्बी सी जीभ अपने होंठों पर वह फेर रहा था। शायद वह नरभक्षी जाति का आदिवासी था। इतने लोग एक साथ देख कर उसे खाने का लालच दिख रहा होगा उसे।

हनुमान ने एक दुस्साहस किया। वे जामवंत से बोले कि हम जाकर उस नरभक्षी को खत्म कर देते हैं जिससे इस सुन्दर घाटी को उदासी में बदल देने वाला यह आदमी समाप्त हो जाये और यह घाटी फिर से गुलजार हो उठे।

जामवंत के मना करते करते हनुमान और द्विविद व विकटास अपने हाथ की गदा चमकाते उस गुफा की तरफ बढ़े तो अंगद भी उधर बढ़ चले। जामवंत ने अंगद को टोका ''तुमा ठहरो राजकुमार, तुम मत जाओ वहां।''

अंगद ने ऐसा प्रदर्शित किया कि उन्होने सुना ही नही कुछ। अपनी भागने की गति तेज कर वे सबसे आगेबढ़ गये। फिर तो हनुमान उनसे भी तेज गति से दौड़ने लगे।

उधर उस काले कलूटे खतरनाक आदमी ने अपनी ओर उत्साह के साथ दौड़ते कुछ लोगों को देखा तो उसके माथे पर बल पड़ने लगे। यहां के लोग उससे डरते हैं, ये कैसे लोग हैं जो खुद इधर ही दौड़े चले आ रहे हैं।

जामवंत ने देखा कि उस अन्जान आदमी की ओर जाने वाले लोग माने नहीं हैं तो वे भी उनके पीछे दौड़ने लगे।

जब तक जामवंत ऊपर पहुंचते गुफा का नजारा बदल चुका था। हनुमान ने उस खतरनाक से आदमी को पकड़ कर वहीं पड़ी एक रस्सी से बांध दिया था और वह आदमी नजरें नीची किये अपमानित सा खड़ा था और बाकी लोग खी-खी करके उसकी हंसी उड़ा रहे थे।

जामवंत ने आदिवासियों की भाशा में उससे पूछा िकवह कौन है तो उसने चौंक कर आँखें उठाईं और अपना बड़ा सा मुंह खोल कर बोला '' मैं गीध जाति का आदिवासी हूं। दूर उधर पंचवटी के पास का रहने वाला हूं। इस घाटी में मेरा विमान गिर गया था सो यहंा रहने लगा हूं।''

'' तुमने ही यहां के सारे पशु-पक्षी खा डाले क्या?''

'' हां ''उसने जामवंत को जवाब दिया '' मैं क्या करता, मैं घायल था, कहीं आ-जा नहीं सकता था सो जो मिलने लगा मैं पकड़ कर खाने लगा।''

'' पंचवटी में तो गीध जाति के जटायू रहते थे।'' जामवंत को सहसा याद आया।

वह चौंेंका और बोल उठा '' आप उन्हे कैसे जानते हो? वे तो मेरे भाई हैं।''

जामवंत बोले '' अयोध्या के राजकुमार राम जब पंचवटी में रहते थे तब किसी काले कलूटे से आदमी ने गधे के सिर के चित्र वाले झण्डे लगे एक रथ में उनका अपहरण कर लिया था और जटायू ने हिम्मत जुटा कर उस दुश्ट चोर से मुकाबला किया था। लेकिन...''

'' लेकिन क्या ?...कृपया बताओ मुझे।''

'' लेकिन बेचारे जटायू उस लड़ाई में बुरी तरह घायल हुए और अन्त में वीरगति को प्राप्त हुये। श्रीराम ने खुद अपने हाथेंा अपने पिता की तरह उनकी अंतिम क्रिया संपन्न की थी।''

''हाय मेरे भाई.........'' के लम्बे विलाप के साथ वह व्यक्ति रो उठा।

कुछ देर बाद स्वयं ही चुूप हो कर वह बोला '' मैं संपाती हूं । मैं और जटायु सगे भाई थे। अगस्त मुनि ने हम दोनांे को आसमान में उड़ने वाला विमान बनाना सिखाया था। हम दोनों ने अपने विमान बनाये और एक बार होड़ लगाई कि कौन सूरज को छू कर आता है। जटायु को

ज्यादा गर्मी लगी तो वह तो बहुत नीचे से वापस आ गया लेकिन मैं आगे बढ़ता गया और जब सूरज कुछ ही दूर रह गया था तो मेरा विमान धू-धू करके जलने लगा था। वहां से सीधा मेरा विमान यहीं आकर गिरा । मैं भी घायल हो गया था।''

संपाती एक क्षण चुप रहा फिर बोला '' गधे के चित्र वाला झण्डा लगा कर तो केवल एक नीच आदमी चलता है-लंका का राजा रावण। वह स्त्रियों का बड़ा लोभी है। उसने अपने महल में हर जाति की स्त्री लाकर रखी हुई है। इस कारण लंका में हर महत्वपूर्ण पद पर स्त्री ही काम करती है। जरूर उसी ने सीता का हरण किया है।''

जामवंत को बड़ी खुशी हुई। चलो असली चोर का पता लग गया। वेसंपाती से बोले ''आप हमारा इतना भला और कीजिये िकवह जगह बताइये जहां लंका बिलकुल पास हो। हम लोग लंका जाकर सीता का पता लगाना चाहते हैं।''

संपाती बोला '' मैं जिस गुफा में रहता हूं उसमेंसे होकर आप आगे बढ़ेेंंगे तो यही पहाड़ के दूसरी ओर जाकर समुद्र किनारे खुल जायेगी। समुद्र के इसी किनारे से लंका सबसे पास यानी चार सौ योजन दूर पड़ती है। मैंने लंका के जासूसों और दूसरे लोगों को अक्सर अपनी छोटी'छोटी पानी में छिपी नावों से वहां आकर उतरते देखा है।''

जाामवंत एक कुशल जासूस थे, उन्हे लगा कि हम सबको फंसा कर खाने के लिए यह संपाती जाल तो नहीं बिछा रहा? उन्होने द्विविद से कहा कि वह गुफा के रास्ते भीतर तक जाकर देख कर आये कि समुद्र तट कितनी दूर है। उधर उन्होने हनुमान से कहा िकवे भी एक कुशल विमान चालक हैं, जरा संपाती का विमान तो देखें कि उसमे ंकया खराबी है?

उधर द्विविद गुफा में आगे बढ़े इधर हनुमान ने गुफा के दरवाजे पर रखा वह दुर्घटनाग्रस्त विमान देखा जो संपाती ने सूरज के ताप से जल जाने केकारण नीचे गिरना बताया था।

हनुमान ने थोड़ी ही देर में कहा कि इस विमान का सिर्फ ऊपरी हिस्सा जला है, बाकी सारे यंत्र ठीक हैं। यदि इसे उड़ाया जाय तो धूप तो लगेगी, बाकी कोई दिक्कत नहीं होगी।

संपाती के कहने पर हनुमान ने विमान को चालू किया और जमीन से ऊपर उठा कर पूरी घाटी का एक चक्कर लगाने लगे।

दल के लोग जो दूर बैठ कर यह तमाशा देख रहे थे, उछल-उछल कर हनुमान का हौसला बढ़ाने लगे।

जब हनुमान ने वापस आकर विमान अपनी जगह रखा तब तक द्विविद भी लौट आये थे, उन्होने बड़े जोश के साथ जामवंत से कहा कि बस थोड़ी ही दूर पर समुद्र का किनारा दिखता है। पूरा रास्ता साफ और सुरक्षित है। खतरे और साजिश की कोई बात नहीं है।

फिर क्या था! जामवंत ने इशारा किया और दल के बाकी लोग भी गुफा की ओर बढ़ आये।

जामवंत ने अब जाकर संपाती की रस्सियां खोलीं और बोले '' संपाती जी, आप इतने डर गये हो कि अपना विमान दुबारा देखा तक नहीं। आपका विमान पूरी तरह सुरक्षित है। आप पंचवटी की ओर जाइये और हम लोग समुद्र तट पर पहुंच रहे हैं।

उधर संपाती का विमान चालू हुआ और जमीन से उड़ कर एक पक्षी की तरह उड़ान भरता हुआ पहाड़ के उस पार निकल गया। इधर जामवंत का यह दल गुफा के रास्ते समुद्र किनारे तक जा पहुंचा।

वे लोग समुद्र की रेत पर बैठ गये और बड़ी आशा भरी नजरो ंसे समुद्र के उस पार देखने का प्रयास करने लगे। लेकिन समुद्र बहुत विशाल था। जामवंत ने बताया िक इस समुद्र के चार सौ योजन पार तक न तो किसी की नजर जा सकती न ही पूरा दल इतनी दूरी तैर कर या छलांग लगा के पार कर सकता है।

द्विविद ने कहा कि क्यों न हममें से कोई एक आदमी हिम्मत करे और समु्द्र पार करके लंका पहुंचे।

विकटासि ने भी इनका समर्थन किया। हनुमान तो एक तरफ जा बैठे थे । वे आँख मूंदे जाने किस ध्यान में डूबे थे। नल और नील ने कहा कि हम सबके पास समय नहीं है नही ंतो हम इस समुद्र पर एक तैरता हुआ पुल बना सकते थे और सारे दल को लंका तक ले जा सकते थे। अन्त में जामवंत ने ही निर्णय लिया कि कोई एक आदमी समुद्र पार करके लंका तक जाये और अकेला अपनी बुद्धि और ताकत के दम पर सीता का पता लगाये।

फिर क्या था, हर वीर ने अपनी-अपनी ताकत का अंदाजा लगाना शुरू किया।

नल बोले, '' मैं पचास योजन तक जा सकता हूं। इसके बाद मझे एक रात रूक कर आराम करना पड़ेगा।''

नील को पिचहत्तर योजन तक जाने की हिम्मत थी तो द्विविद को सौ योजन। विकटास दो सौ योजन जा सकते थे।

अंगद खड़े हुए और बोले '' हे गुरूदेव, मैं चार सौ योजन केइस समुद्र को आसानी से पार कर सकता हूं। बस यही लगता है कि वहां पहुंचते-पहुंचते मैं थक जाऊंगा और कई दिन आराम करने के बाद इस लायक हो पाऊंगा कि कोई काम-धाम कर सकूं। इसलिए लौटने में कितना समय लगेगा इसमें मुझे संशय है।''

जामवंत बोले '' अंगदजी, आप तो हम सबके नेता हैं । हम आपको कैसे भेज सकते है? फिर वहां मंदोदरी आपको मिलेंगी जो आपकी मौसी हैं। आपके नाना-नानी भी इन दिनों लंका में हो सकते हैं। इसलिए आपका जाना उचित नही है।''

अंगद बोले ''फिर कौन जायेगा ?''

जामवंत बोले '' मैं बूढ़ा हो गया हूं नही तो मेरे लिए यह दूरी कोई महत्व नहीं रखती थी।''

इतना कह कर उन्होने हनुमान की ओर देखा और बोले '' हे हनुमान, आप चुप साध कर क्यों बेठे हो वीरवर! ... हम सबमें आपही ऐसे स्वस्थ्य और बुद्धिमान व्यक्ति हैं जो चार सौ योजन का समुद्र पार करके लंका तक बिना थके जा सकते हैं और वहां पहुंच कर बिना थके सीताजी को ढूढ़ सकते हो। ''

हनुमान ने देखा कि सारा दल उनकी ओर बड़ी आशा भरी नजरो ंसे देख रहा है तो वे उठे और एक जोर दार अंगड़ाई लेते हुए जोर से नारा लगाया '' जय श्रीराम ''

सारे बानर वीरों ने उनके स्वर में स्वर मिलाया - '' जय जय श्रीराम !''

जामवंत ने कहा '' हनुमानजी, आप मेरे सबसे प्रिय गुप्तचर हैं । आप समुद्र को लांघने की तैयारी कीजिये।''

हनुमान ने पूछा '' आप मुझे यह तो बताओ कि मुझे लंका जाकर करना क्या है?''

जामवंत बोले, '' आप तो किसी भी तरह सीताजी का पता लगा कर उनसे मुलाकात करना। उन्हे श्रीराम की कुशलता का समाचार सुनाना , उनकी कुशल जानकर चले आना। इतना जरूर करना कि रावण की सेना में किस श्रेणी के कितने सैनिक हैं, यह जानकारी जरूर लेते आना।''

''ठीक है जामवंत जी, आप लोग धीरज धर के मेरा इंतजार करना। मैं जल्दी ही लौट आऊंगा।'' हनुमान ने कहा तो जामवंत ने तुरंत कहा '' लंका में जरूरत पड़े तो तुम्हारी दो लोग मदद कर सकते हैं। एक तो रावण के भाई विभीशण हैं और दूसरी है रावण की एक महिला सैनिक त्रिजटा। आप उसे आसानी से ढूढ़ लोगे क्यों कि वह सीताजी की सुरक्षा में तैनात है और फिर खास पहचान यह कि उसके सिर पर बालों की तीन चोटियां होंगी। हमारे जासूसों ने खबर दी है कि ये दोनों लोग रावण से गुस्सा हैं सो हमारी मदद कर सकते हैं।''

'' ठीक है जामवंत जी, मैं वहां की जो स्थिति होगी उसके अनुसार काम करूंगा।'' इतना कह कर हनुमान उछल कर समुद्र तट के ऊंचे से टीले पर चढ़ गये । वहां से उन्होने समुद्र का नजारा देखा। फिर टीले से नीचे उतरे और बहुत पीछे तक जाकर तेज गति से दौड़ते हुए आये और एक लम्बी छलांग मारी।

सब लोग चकित से उन्हे देख रहे थे कि हनुमान की लम्बी छलांग की तो कोई सीमा ही न थी, वे अभी भी समुद्र के ऊपर रहते हुए ऐसे आगे बढ़ रहे थे मानो आसमान में उड़ रहे हों। जब तक वे दिखते रहे बानर पूरे उत्साह से देखते रहे, फिर जब आँख से ओझल हो गये तो सब ने एक दूसरे की ओर देखा।

जामवंत को लगा कि इंतजार करने में समय काटना मुश्किल होगा सो उन्होने अंगद और नल, नील से कहा कि आप लोग बैठे क्यों हो? जाओ रेत पर खेलो-कूदो। अगर मन लगे तो समुद्र तट पर फैले इन सीप और घोंघों को देखो, इनमें ही मोती जैस महंगा रत्न पैदा होता है।आप लोगों में से देखें तो कौन कितने मोती ला सकता है।

दिन डूबने लगा तो जामवंत ने सब लोगों को बुलाया और कहा कि हम लोगों को अंधेरा होने के पहले उस गुफा तक चलना चाहिए जहां संपाती रहता था। वह जगह हम लोगों को रात में आराम करने के लिए बहुत ठीक जगह है। जिन लोगों को भूख लगी हो उन्हे उसी घाटी में खूब सारे फल मिलेंगे। चलो अब देर करना ठीक नहीं है।

वे सब पहाड़ की गुफा के समुद्र तट वाले द्वार से अंदर प्रवेश कर के संपाती के रहने वाली जगह पहुंच गये। कुछ बानर फल खाने निकल गये तो कुछ गुफा की साफ-सफाई करके उसे सोने लायक बनाने लगे।

पहरे पर कुछ बानरों को लगा कर जामवंत ने सबको सोने का हुकुम दिया।

सब दिनभर के थके हुए थे सो लेटते ही नींद लग गई।

पता ही न लगा कि कब रात हो गई और कब सुबह हुई।

सुबह सूरज के गोले के आसमान में चढ़ते-चढ़ते सब लोगों ने घाटी के पेड़ों से पेट भर के फल खाये और कुछ देर बाद उसी गुफा के रास्ते वे समुद्र के किनारे जा पहुंचे। अब उन सबको हनुमानजी के लौटने की प्रतीक्षा थी।

बानर लोग खेलते-कूदते रहे तो दूसरे लोग आपस में कुश्ती करके एक दूसरे की ताकत को परखते रहे। फिरभी समय काटे नहीं कट रहा था। सब बार-बार समुद्र की ओर देखने लगते थे। एकाएक अंगद को लगा कि समुद्र में कोई बड़ी सी चीज लहरों के भरोसे डगमगाती हुई किनारे की ओर आ रही है। उन्होने जामवंत से कहा तो उन्हे भी लगा कि सचमुच लाल से रंग में डूबी कोई काली सी चीज वहां तैररही है।

वे लोग सतर्क होकर उधर ही ताकने लगेै

कुछ ही देर में समुद्र की बहुत बड़ी लहर के साथ एक बड़ी सी चट्टान के आकार की पिलपिली सी चीज किनारे पर आकर गिरी। वे सब दूर-दूर जाकर बैठ गये और उसचीज को देखने लगे।

बहुत देर तक उस काली सी चीज में कोई हलचल नहीं दिखी तो जामवंत ने इशारा किया। बानर योद्धा मयंद ने अपनी भारी भरकम गदा संभाली और वे उस चीज की ओर सावधानी पूर्वक बढ़ने लगे। अब सबको साफ दिख रहा था कि वह एक काले रंग की मछली या ऐसी ही कोई अन्य जलचर प्रजाति का जीव है, जिसके चट्टान जैसे शरीर में से नुकीले कांटो से भरी कई लम्बी-लम्बी पूंछें सी दिख रही थीं। जलचर की देह एकदम काले रंग की थी जो इस वक्त लाल रंग की हो गई है।

मयंद ने एक पत्थर उठाया और उसकी ओर दूर से ही फेंका। परन्तु उसमे ंकोई हलचल न थी। हिम्मत बढ़ी तो वे और पास जा पहुंचे। लेकिन वह जीव तो एकदम शांत था। मयंद ने एक उछाल भरी और उसके ऊपर जा चढ़े । अब भी वह जीव ज्यों का त्यों पड़ा हुआ था।

मयंद ने संकेत किया तो बाकी लोग भी उधर बढ़े।

बहुत पास जाने पर सबने देखा कि ये तो सचमुच एक बड़े विशाल प्राणी की लाश है जो अब मर चुका है। द्विविद को शंका हुई कि कहीं हनुमानजी से इसकी भिढ़न्त तो नहीं हो गई, और असके चारों ओर जो खून लगा है, वह हनुमान का तो नहीं है। उन्होने अपनी शंका जामवंत को बताई तो चिन्तित हो कर जामवंत ने उस जन्तु की लाश का बारीकी सी परीक्षण शुरू कर दिया। वे बहुत देर तक इधर-उधर ढड़काते हुए उस लाश को देखते रहे फिर अन्ततः अपना निश्कर्श बताते लगे तो सब ध्यान से सुनने लगा।

'' सब लोग सुनो, ये जीव जल में रहने वाला एक विशाल जलचर जन्तु सिंेघिका है, जिसकी कई आँखे होती हैं ये देखो। '' लोगों ने देखा सचमुच कई बड़ी-बड़ी आँखें थी उस जन्तु की लाश में।

'' इसकी ये कांटेदार आठ भुजायें होती हैं, इन भुजाओं को चारों ओर फेंक सकता है, ऊपर की ओर उछाल सकता है। इनकी मदद से अपने चारों ओर की किसी भी चीज को यह जन्तु खींच कर खा डालता है।'' जामवंत बारीकी से समझा रहे थे और सब लोग बड़े ध्यान से देख रहे थे।

द्विविद ने फिर कहा “ इस जन्तु ने कहीं हमारे हनुमानजी का तो कोई अनिश्ट नहीं कर डाला?”

“ नहीं, ये जो खून है, इसी का है। देखो इसका पेट खाली है और इसके सिर पर कोई भारी चीज गिरने के निशान है जिसमें से अभी भी लगातार खून बह रहा है। इसकी भिढ़न्त तो हमारे हनुमान जी से जरूर हुई होगी। ऐसा लगता है कि केशरीनंदन ने अपनी भारी-भरकम गदा से इसका काम-तमाम कर डाला है।”

जामवंत की बात से सब निश्चिंत हुए।

छोटे लोग दुबारा खेल-कूद में लग गये तो बड़े लोग दोपहर के भोजन के लिए फल लाने संपाती की घाटी में चले गये।

उनके लौटने पर सबने डट कर भोजन किया और आलस से भरे हुए खुली रेत पर यहां-वहां पसरने लगे। जामवंत ने विकटास को समुद्र की ओर लगातार निगाह रखने का जिम्मा सोंपा और खुद भी लेट गये।

लगभग सूरज अस्त ही हो रहा था कि विकटास ने देखा, कि दूर समुद्र में कोई व्यक्ति तैरता हुआ दिख रहा है।

जामवंत को जगा कर उन्होने यह नयी बात बताई तो जामवंत भी बड़े ध्यान से ेदेखने लगे। उस तैरते हुए व्यक्ति के हाथ में चमचमाती गदा दिखी तो जामवंत खुशी से उछल पड़े और बोले “ जय श्रीराम !..... आप लोग डरो मत। हमारे हनुमान जी लंका से लौट आये हैं।”

जिसने भी सुना वह उठ कर खड़ा हो गया। सबकी निगाहें समुद्र की ओर लगी थी। मयंद और द्विविद से रहा नहीं गया तो वे समुद्र में कूद गये और तैर कर हनुमान की ओर जाने लगे

यहां समुद्र किनारे खड़े लोग तालियां बजाते हुए हनुमान का स्वागत कर रहे थे।

पानी में ही द्विविद और मयंद हनुमान से गले लगकर मिले और वे तीनों वापस किनारे की ओर तैरने लगे।

तट पर आने पर हनुमान उछल कर जामवंत के पास आ पहुंचे और उनके पैरों में झुकने लगे तो उन्होने झट से पकड़ कर उन्हे गले लगा लिया।

अंगद ने दोपहर के भोजन से बचे कुछ फल सामने पेश कर हनुमान का सत्कार किया तो हनुमान ने एक फल ले लिया और मुस्करा के अंगद का गाल थपथपा दिया।

नल बहुत उत्सुक थे कि लंका में क्या हुआ? सो उन्होने पूछा “ हनुमानजी, जल्दी से बताइये कि आपने यहां से जाने से लेकर लौटने तक क्या-क्या किया?”

सच्ची बात तो यह थी कि सबको उत्सुकता थी, सो हनुमान ने बाकी लोगों की आंखें में भी वैसे ही भाव देखे तो तुरंत बोले “ मैं सब सुना दूंगा, जरा धीरज धरो।”

जामवंत बोले “ दिन डूबने वाला है, और कथा लम्बी होगी। ऐसा करते हैं कि चल कर संपाती की गुफा में आराम करते हैं, वहीं हनुमानजी हमको सारा वृतांत सुनायेंगे ।”

सबको यह बात बहुत अच्छी लगी सो सारा दल उठ कर गुफा के लिए चल पड़ा।

गुफा में अंधेरा था सो जामवंत ने नील से कहा '' अपनी कारीगरी से ऐसा कुछ बंदोबस्त करो कि उजाला हो जाये । क्योंकि कथा सुनाते हनुमान जी के हाव-भाव और मुखमुद्रा देखने योग्य होगी।''

उजाले का इंतजाम होने के बाद सब लोग एक दूसरे से सटकर नीचे जमीन पर आराम से बैठ गये और हनुमान एक ऊंची जगह पर जा बैठे, जहां से सब लोग उन्हे भली प्रकार देख सकते थे।

उन्होने बहुत गंभीर आवाज में अपना किस्सा सुनाना आरंभ किया।

00000

लंका में हनुमान

हनुमान बोले……

मैंने एक बहुत लम्बी छलांग लगा कर समुद्र का बहुत बड़ा हिस्सा पार कर लिया था और इस लम्बी छलांग के बाद जब मेरा पैर नीचे आने ही वाला था कि मैंने देखा नीचे एक टापू दिख रहा है। मैंने टापू पर पांव रखा तो लगा कि टापू कुछ हिला है। मैं अचरज में था। अचानक एक वनवासी जाने कहां से मेरे सामने प्रकट हुआ। मैं चौंक गया ।

वनवासी बहुत अच्छा आदमी था। उसने अपने हाथ में लिये हुए एक छोटे से टोकरे में कुछ फल रखे हुए थे। वह बोला '' लीजिये बानर वीर, कुछ फल ग्रहण कीजिये ताकि आपकी थकान मिट सके और मुझे बताइये कि मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूं?''

मुझे पता था कि लंका से लेकर यहां तक रावण के अनेक गुप्तचर जाने क्या-क्या रूप् धारण करके घूमते रहते हैं। इसलिए मैंने उसके दिये हुए फल नहीं खाये । मैं बोला '' मैं अभी श्रीराम के काम से लंका जा रहा हूं। वहां मुझे रावण की जांच- पड़ताल करना है। जब तक यह काम नही कर लेता मुझे कुछ भी खाना पीना नहीं सुहा सकता। इसलिये आपका धन्यवाद।''

वनवासी बोला ''मैं मैनाक नाम का वनवासी हूं। मेरे मालिक इन्द्र ने मुझे यहां इसलिए तैनात किया है कि मैं लंका के लिए जाते हुए रावण के दुश्मनों की मदद कर सकूं। आप जिस जगह खड़े हैं वह दिखने में तो टापू लगता है लेकिन यह एक बड़ी नाव है जिसके ऊपर

लकड़ियों के पटिये डालकर मिट्टी जमाई गई है। आप चाहें तो मैं इस नाव से ऐसी जगह तक आपको ले चल सकता हूं , जहां से लंका के पहरेदारों की नजर न पड़ सके।''

मैंने अचरज से टापू को देखा। सचमुच उस टापू में बहुत धीमा सा कंपन हो रहा था। मुझे मैनाक की बात का विश्वास हो गया। मैंने उसे सहमति दे दी तो वह खजूर के एक पेड़ को पकड़ कर खड़ा हो गया। उसने खजूर पेड़ इस तरह से आगे से पीछे किया जैसे नाव को चलाने वाले मल्लाह चप्पू चलाते हैं। मुझे फिर अचरज हुआ िक वह टापू आगे खिसकने लगा था। फिर तो मैंने भी मैनाक की मदद की और हमारी टापू नुमा नाव की गति काफी तेज हो गयी । हम तेजी से लंका की दिशा में खिसकने लगे।

जब समुद्रतट दिखने लगा तो मैनाक ने अपनी नाव रोक दी।

मैंने मैनाक से विदा दी और समुद्र में छलांग लगा दी। मैं पूरी ताकत से लंका के टापू की ओर तैरने लगा।

मैं पूरा चौकन्ना था, तभी तो अचानक मुझे लगा कि मेरे शरीर को चारों ओर से कोई कंटीली सी लम्बी भुजायें जकड़ रही है। मैंने अपने बदन को सिकोड़ा और उन भुजाओं से मुक्त हो कर थोड़ा दूर जाकर देखा तो पाया िक छाते की तरह के शरीर वाला ऊपर से गोल एवं भीतर से पोला वह कोई जलचर जीव है जिसकी बहुत सी आँखेंें मुझे घूर रही है। उसकी दस-दस हाथ लम्बी भुजायें मुझे पकड़ने को फिर लपकीं तो मैं उनसे दूर रहने का प्रयत्न करने लगा। फिर मुझे लगा कि जल में वह ज्यादा ताकतवर है और मेरा अमूल्य समय यों ही समाप्त हो रहा था सो मैं उछला और उस जन्तु के सिर पर जा खड़ा हुआ। फिर मैंने पूरी ताकत से उसके शरीर में अपनी गदा से हमला करना शुरू कर दिया। ईश्वर की कृपा रही कि मेरे प्रहारों से वह जीव पहले शिथिल हुआ और बाद में शायद मर भी गया। रात का अंधेरा था सोे मैं उसे यों ही छोड़ कर लंका के किले के उस त्रिकूट द्वीप की ओर तैरने लगा जहां लंका का किला बना हुआ था।

पानी से बाहर निकल के मैं उस पार जमीन पर निकल कर खड़ा हुआ और रात के अंधेरे में चमकता सोने का बना वह सुनहरा किला देखने लगा जो अंगद के नाना मय दानव ने बनाया था। बहुत सुन्दर और मजबूत किला था वह।

मैंने बिना आवाज किये लंका के किले की ओर बढ़ना शुरू किया और ठीक बड़े द्वार के सामने जा पहुंचा । देखा कि बड़ा दरवाजा उस समय बन्द था और एक छोटी सी खिड़की खुली हुई थी। मैंने सिकुड़ कर उस खिड़की में से बहुत सतर्क हो कर भीतर प्रवेश किया और भीतर जाकर सामने जाते लम्बे गलियारे को देख ही रहा था कि अचानक मेरे सामने अट्टहास करती एक बहुत भयानक दिखती एक विशालकाय हृश्ट-पुश्ट महिला आ खड़ी हुई।

उस महिला ने मुझे डांटते हुए कहा '' अरे ओ चोर, तू चुपचाप लंका में कैसे घुसा चला जा रहा है? जानता नहीं, मैं लंकिनी हूं। यहां की रखवाली मेरे जिम्मे है। ''

मैं कुछ जवाद देता उसके पहले ही उस महिला ने अपने हाथ में पकड़ा हुआ एक विशाल मुदगर नुमा हथियार मेरे सिर पर दे मारा।

मैं एक तरफ हट कर उससे बच गया और सोचने लगा कि एक महिला से लड़ना तो मेरे सिद्धान्तों के खिलाफ है सो मैंने भीतर जाते गलियारे में दौड़ लगा दी। लेकिन लंकिनी भी बहुत सतर्क थी। मुझसे भी तेज दौड़ कर मेरे सामने आ खड़ी हुई। इस बार उसने बिना कोई चेतावनी दिये अपना हथियार फिर से मेरे ऊपर पटक दिया।

मैं फिर बच गया और मुझे लगा कि इसका काम-तमाम किये बिना यहां से निकलना संभव नहीं होगा। सो मैंने बड़ी फुर्ती से एक ऊंची कं ूद लगाई और लंकिनी की कनपटी पर अपनी वजनदार गदा दे मारी।

मेरा वार सही निशाने पर लगा था इस कारण लंकिनी एकदम शिथिल सी हो गई। उसके कान और नाम से खून बह उठा। फिर वह धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ी।

उसे मूर्छित छोड़कर मैं तेजी से गलियारे में बढ़ता हुआ नगर में प्रवेश कर गया।

लंका एक देखने योग्य नगर है, वहां की सुंदर अट्टालिकायें और भवन देख कर मेरा मन हो रहा था कि हर मकान को भीतर से घुस कर देखा जाये लेकिन मुझे तो रावण का महल खोजना था, क्योंकि मुझे लग रहा था कि सीताजी का वहीं कैद करके रखा गया होगा । मैं इसलिए भी परेशान था कि रात के सन्नाटे मंें भला किससे पूछूंगा कि रावण का महल कौन सा है? और भला मुझे बतायेगा भी कौन ? मैं बाहरी आदमी वहां कैसे पहुंचा , हर आदमी पहला प्रश्न यही करेगा।

धीरे-धीरे मुझे महसूस होने लगा कि मैं सही दिशा में बढ़ रहा हूं क्योंकि जिस रास्ते पर मैं जारहा था उस तरफ से कुछ शोरगुल सा हो रहा है।

और फिर एक बड़े से मैदान में बना एक विशाल और शानदार महल मेरे सामने था। मैंने देखा कि महल के सामने बहुत से सैनिक तैनात हैं लेकिन इस वक्त वे सब के सब मदिरा पी रहे थे और अपने सामने रखे बड़े-बड़े थालों में जाने किस किस जानवर का मांस रखे गये कच्चा ही खाये जा रहे थे।

उन्हे अपने आप मंे व्यस्त पा कर मैं रावण के महल में दाखिल हो गया।

भीतर एक विशाल पलंग पर बहुत विशालकाय और कालाकलूटा सा आदमी नशे में बेसुध होकर अपने पलंग पर अस्त-व्यस्त दशा में लेटा था। उसके खुर्राटों से पूरा पलंग हिल रहा था। उसके पास ही एक बहुत सं ुदरी स्त्री सो रही थी। वे जरूर ही महारानी मन्दोदरी रही होंगी। उसी महल में हर कमरे में कोई न कोई महिला जरूर थी, लेकिन सब की सब बहुत सं ुदर और सजी-धजी। मुझे पता था कि सीताजी तो यहां सज धज कर नही रहती हांेगी सो मेरी तलाश जारी रही।

पूरे महल में ऐसी एक भी स्त्री न थी जिसे मैं सीताजी के रूप में पहचानता।

फिर क्या था मै तुरंत ही महल के सबसे ऊपरी हिस्से में जा पहु ंचा। वहां से मैंने चारों ओर का जायजा लिया तो पता लगा कि पास की गली में ही एक मकान ऐसा है जो बाकी मकानोंसे कुछ अलग है। उस मकान के आंगन में दीपक जलाये एक आदमी बैठा था जो पीले रंग के चादर को लपेटे किसी भजन-पूजन में तल्लीन था। मुझे अंदाजा लगा कि यह व्यक्ति जरूर ही विभीशणजी होंगे।

मैं महल की छत से दूसरे महल पर कूदा और कुछ ही देर में गली मंे मौजूद था।

उस मकान के सामने पहुंचा तो देखा कि बाकी मकानों पर पहरा लगा था लेकिन इस मकान पर कोई पहरा न था। मैंने देखा कि दरवाजे के बाहर ओम लिखा हुआ था और धनुश बाण के चित्र बनाये गये थे। भीतर आंगन में तुलसी का पौधा लगा था, जिसके पास वे सज्जन आँख मं ूद कर बेठे किसी भजन में डूबे हुए थे।

मैंने अपनी गदा छिपाई और जय श्रीराम कहते भीतर प्रवेश किया तो वे सज्जन चौंक कर उठे और मुझे देख कर हाथ जोड़ कर बोले '' जय जय श्रीराम ''

मुझे तसल्ली हो गई कि मैं सही जगह आ पहंुचा हूं।

वे सज्जन बोले '' हे सज्जन, पधारिये। ''

मैं उनके एकदम निकट जा पहुंचा तो वे बहुत धीमी आवाज में बोले '' कृपा करके बताइये कि आप कौन हैं और कहां से पधारे है। सीता की खोज में लंका में आगये श्रीराम या लक्ष्मण में ही तो कोई नही हो?''

मैने सोचा अब कुछ भी छिपाना उचित नहीं है सो मैंने विभीशण जी को हाथ जोड़ कर अपना परिचय दिया । फिर कहा कि रात पूरी होनेेवाली है, ऐसे में मेरा इस नगर में छिपे रहना संभव नहीं होगा। इसलिए आप जल्दी से बताइये कि सीताजी कहां हैं और मैं वहां तक कैसे जा सकता हूं।

विभीशणजी ने मुझे बताया कि वे रावण के छोटे भाई विभीशण हैं और मैं उन्हे अपना दोस्त समझूं। सीताजी को अशोक वन नामक रावण के निजी बागीचे में खुले में कैद किया गया है। अशोक वन विभीशण के मकान से बहुत पास था। उन्होने मुझे वहां जाने का रास्ता समझाया तो मैंने तुरंत ही उनसे विदा ली और अशोकवन के लिए चल पड़ा। रास्ते में मैंने देखा कि गेंहू और चावल के बोरों में भर कर बहुत बड़ी मात्रा में अन्न का भण्डार कर के रखा गया है। मुझे लगा कि अगर मौका मिला तो इस भण्डार को नश्ट करके लंका में खाने-पीने की समस्या पैदा की जा सकती है।

जब मैं अशोकवन के पास पहुंचा तो वहां से आ रही खुशबूदार फूलों की सुगंध और फलों की महक से मेरा मन प्रसन्न हो उठा। मैंने देखा कि वन दो भागों में है। एक में दूब का मैदान है जिसमें अशोक वृक्षों की एक लम्बी कतार लगी है जबकि दूसरे हिस्से में फलों के वृक्ष है उन वृक्षों की रक्षा के लिए कुछ सैनिक तैनात हैं और वे सो नहीं रहे पूरी तरह जाग कर पहरा दे रहे हैं। अशोकवृक्षों वाले हिस्से में महिला सैनिक घूम करपहरा दे रहीं थीं। विभीशण जी ने बता दिया था कि सीताजी अशोकवृक्षों वाले हिस्से में कैद हैं।

मैं चुपचाप वहां प्रवेश कर गया। फिर सेनिको की नजर बचाकर मै पेड़ पर चढ़ गया और मैंने तुरंत ही पहचान लिया कि सीताजी कहां है। एक विशाल अशोकवृक्ष के नीचे एक तेजस्विनी महिला उदास भाव से बैठी थी , उनके उदास चेहरे को देख कर ही मुझे अहसास हुआ कि ये ही सीताजी हैं।

मैं सोच रहा था कि क्या करूं पर कुछ भी समझ में नही आ रहा था। इसी ऊहापोह में अंधेरा खतम होने लगा और पक्षीयों की चहचहाहट से सन्नाटा भंग होने लगा। मुझे लगा कि अब पूरे दिन मुझे छिप कर बैठना पड़ेगा।

अचानक एक महिला सैनिक ने आवाज लगाई ''सावधान ! सावधान ! लंकाधिपति महाराज रावण पधार रहे हैं।''

मैं समझ नहीं पा रहा था कि क्या करूं मुझे किसी ने पेड़ पर देख लिया तो क्या होगा? खैर मैं चुपचाप बैठा रहा। सोचा कि जो होगा देखा जायेगा।

कुछ देर बाद बहुत सारी स्त्रियों को साथ लेकर लंकेश रावण अपने हाथ में चांदी की तरह चमकती तेज धार वाली तलवार लिये हुए वहां हाजिर हुआ और सीताजी के सामने आन खड़ा हुआ।

उसे देख कर सीताजी ने दूसरी ओर मुंह फेर लिया तो रावण बहुत जोरसे हंसा और अपनी गरजदार आवाज में बोला '' हे सुन्दरी, तुम मुझे देख कर उधर मुंह क्यों कर लेती हो? तुम्हे लंका में आये हुए इतना समय बीत गया , तुमने इसी वन में चार महीन तक बरसात को झेला है लेकिन तुम्हे अब भी उस तपस्वी की प्रतीक्षा है। अरे पगली उसे आना होता तो वह अब तक कब का आ चुका होता।''

सीताजी की आवाज यों तो मीठी थी लेकिन वे बहुंत गुस्से में बोल उठीं ''अरे दुश्ट, तू अपने आपको जाने क्या समझता है? तुझे शायद पता नहीं कि श्रीराम के अमोघबाण का क्या प्रताप है। तुझे याद नहीं है कि तेरे रिश्तेदार खर और दूशण को एक ही बाण से मार देने वाले मेरे पति कितने बलशाली हैं।''

रावण बोला '' सीते , तुम्हे लंका की संपत्ति का पता नही है। अरी बावली स्त्री, मेरे यहां के नौकर भी सोने के मकान में रहतेे हैं।''

सीता तड़ाक से बोली '' मुझे तेरी संपत्ति से कुछ नही लेना देना। अरे दुश्ट , सोने-चांदी के मकान से कोई आदमी बड़ा नही बन जाता। तू सिर्फ मकान और महल देखता- फिरता है। लोगों के आचरण नहीं देखता। तेरे नगर के सोने-चांदी के मकान में रहने वाले लोग भीतर से तो बहुत ही गरीब हैं। ''

'' सीता, मै तुम्हे लंका की महारानी बनाना चाहता हूं। तुम खुद मान जाओं इसके लिए विचार करने को तुम्हे एक महीने का समय देता हूं। ध्यान रखना एक महीने के बाद या तो तुम मेरी रानी बन जाओगी या फिर तुम्हे मेरी यह चंद्रहास नाम की तलवार मौत के घाट उतार देगी।''

इतना कह कर रावण वहां से चला गया। उसके पीछे स्त्रियों का झुण्ड भी चला गया ।

रावण के जाते ही सीता की सिसकी भर के रोने की आवाज आई तो मेरेे सारे बदन में गुस्सा भर उठा। लगा कि मेरे होते हुए सीताजी रो रही हैं। यह तो मेरे लिये शर्म की बात है!

नीचे ध्यान दिया तो देखा कि तीन जटाओं वाली एक महिला सैनिक सीताजी के पास बैठी है और सीताजी उससे बातें कर रही है। मुझको याद आया कि जामवंत ने कहा था कि त्रिजटा रावण की विरोधी है और हमारी मदद कर सकती है।

'' हे माता, आपने मुझे धीरज बंधाकर अब तक आत्महत्या करने से रोका है, अब मुझसे सहा नहीं जाता। कहीं से आग की एक चिन्गारी लाकर दे दीजिये मै इसी अशोकवृक्ष की लकड़ी की चिता बना कर अपने आप को खत्म कर देना चाहती हूं।''

त्रिजटा ने ऊपर देखा तो हनुमान को लगा कि अब वे दिख जायेगे और सारा खेल खत्म हो जायेगा । लेकिन त्रिजटा ने शायद कुछ नहीं देख पाया था। उसने अपनी भारी आवाज में कहा '' हे राज कुमारी , आप धीरज धरो सब ठीक हो जायेगा।'' फिर अपनी साथी महिला सैनिकों से बोली '' सुनो सब सुनो! मैंने आज एकअजीब सपना देखा है। मैंने देखा कि हमारी लंका में जाने कहां से एक बानर जाति का बहुत बलिश्ठ वीर घुस आया है। उस बानर ने हमारी लंका नगरी को जला कर राख कर दिया और हमारे लंका के बहुत से सैनिकों को मार डाला है। हमारे राजा रावण की हालत तो बहुत खराब देखी मैंने। उनका सिर मुड़ा हुआ है और वे गधे

पर बैठ कर दक्षिण दिशा की ओर भगा दिये गये है, लंका का राज विभीशण को मिल गया है। मुझे तो यह लगता है कि अपन सब सीता को अकेला छोड़ कर अपने घर लौट जायें।''

मैं चौंक उठा। त्रिजटा ये क्या कह रही है, क्या सचमुच उसे कोई सपना आया है। उसने बानर के आने की बात क्यों कही? किसी दूसरे समाज के नागरिक के आने की बात कयों नही कही। फिर लंका को जलाने और यहां की सेना के कुछ सैनिकों को मारने की आगे की घटनाओं को बता कर कहीं उसने मुझे यहां जो-जो काम करने हैं वे तो नहीं बता दिये। हो सकता है इस बीच जामवंत ने त्रिजटा के माध्यम से मुझे यह संदेश भेजा हो।

मैंने नीचे देखा कि कि त्रिजटा का कहा हुआ सपना सुनना था कि एक-एक कर सब महिला सैनिक वहां से अपने घर के लिए चली गई। त्रिजटा बैठी रहीं फिर सीता से बोली, '' राजकुमारी , मेरा सपना एक अच्छा सगुन है, तुम्हे बहुत जल्दी कोई ठीक खबर मिलने वाली है।''

त्रिजटा के जाने के बाद सीताजी रूआंसी हो उठीं और बोलीं '' आज मुझे कोई भी साथ नहीं दे रहा। चंद्रमा तुम्ही आग दे दो। हे अशोक वृक्ष तुम्ही मेरा शोक दूरकर दो।''

मुझको लगा कि यह अच्छा मौका है सो मैंने अपने जनेऊ में बांधी अंगूठी निकाली और सीताजी के सामने उछाल दी। सूरज की किरणों से दमकता अंगूठी का हीरा सीताजी के सामने गिरा तो वे चौंकी।

उन्होने अंगूठी उठाई और तुरंत पहचान लिया कि यह कौन की अंगूठी है। वे चकित थीं कि श्रीराम अंगूठी यहां कहां से आ गई। वे बोलीं '' यह अंगूठी कौन लाया। मैं प्रार्थना करती हूं कि जो भी इस अंगूठी को लाया है वह मेरे सामने प्रकट हो जाये।''

मैं कूद कर सीताजी के सामने जा पहुंचा।

सीता ने आदिवासी कबीले बानर बिरादरी के एक अजनबी सदस्य को सामने खड़ा देखा तो वे मुंह फेर कर बैठ गईं। मैंने कहा '' आपको शंका होगी कि एक बानर आपके पास प्रभु का संदेश लेकर क्यों आया इसलिए पहचान के लिए करूणायनिधान ने यह अंगूठी मुझे दी है।''

सीता फिर चौंक गई । क्यों कि श्रीराम और सीता ही जानते थे कि सीताजी उन्हे करूणानिधान कहती हैं। उन्होने सकुचाते हुए पूछा ''आप बानर और वे अयोध्या के राजकुमार। आपका मिलन कैसे हुआ?''

मैंने उनके हरण से लेकर समुद्र पार करके मेरे आने तक की सारी कथा सुनाई तो उन्हे कुछ विश्वास हुआ। फिर मैंने उन्हे वह गुप्त संदेश दिया जो उन्होने मेरे चलते वक्त श्रीराम ने मेरे कान में कहा था। अब उन्हे पूरा विश्वास हो गया था।

मैंने उनसे कहा कि आप धीरज धरिये हमारे पूरे दलके साथ बहुत जल्दी श्रीराम यहां आयेंगे और रावण को उसके कर्मो की सजा देंगे।

अचानक मुझे ध्यान आया कि दिन आधा हो चुका है, लेकिन मैंने कुछ भी नहीं खाया है, पेट में चूहे कूद रहे थे। मैंने उनसे पूछा कि मुझे भूख लग रही है, यदि अनुमति दें अशोक वन के दूसरे हिस्से में लगे पेड़ों से कुछ फल खा लूं। सीताजी ने मुझे बताया कि लंका में चार तरह के सैनिक हैं - भट, सुभट, महाभट और दारूणभट।दारूण भट पूरे संसार में अकेला एक है और

वह है मेघनाद। इस बागीचे की रखवाली भट श्रेणी के सैनिक करते हैं, और सुभट श्रेणी का सैनिक उनकी टुकड़ी का नायक है।
मैंने कहा कि आप आज्ञा दे ंतो आज हर श्रेणीके सैनिकों की ताकत का परीक्षण कर लेता हूं। उनकी अनुमति लेकर मैं फल वाले हिस्से मंे गया और पेड़ पर चढ़ कर फल खाने लगा। सहसा किसी सैनिक ने मुझे देखातो गालियां देता हुआ वह अपना भाला लेकर मेरी ओर दौड़ा। मैं पेड़ों पर छलांग लगाता हुआ उसके ठीक ऊपर जाकर गिरा। फिर उसका भाला लेकर मैंने उसकी पिटाई शुरू कर दी तो वह सिर पर पैर रखकर भागा। एक-एक करके मैंेने बारह के बारह रखवालों को मार भगाया। गुस्सा आया तो मैंने पेड़ उखाड़ कर फेंकने लगा।
कुछ देर बाद एक तगड़ा सेनानायक अपने साथ ढेर सारे सैनिक लेकर चिल्लाता हुआ वहां आया। एक सैनिक ने चिल्ला करकहा अरे ओ बानर, आज तू अक्षयकुमारसे भिढ़ रहा है, इसलिए तेरा काम-तमाम होने वाला है। मैं समझ गया कि यह रावण का बेटा अक्षय कुमार है, चलो इसी से दो-दो हाथ करता हूं। मैं जमीन पर कूद गया और उसे कुश्ती के लिए ललकारा तो वह अपने हथियार फेंके बिना मुझसे कुश्ती लड़ने आया और अचानक अपनी तलवार निकाल कर मुझ पर हमला किया तो मैंने उसकी तलवार छीन करउसी के पेट में घुसेड़ दी। वह चीख मार कर अपनी जगह पर गिरा तो मुझे ध्यान आया कि मैंने बैठे-ठाले एक आफत मोल ले ली है। खैर, जो होगा देखा जायेगा सोच कर मैं फिर से फल खाने लगा।
कुछ देर बाद अचानक आवाज आई '' हे मेघनाद जी, वो रहा उत्पाती बानर।''
मेघनाद ने मुझे देख कर अपना धनुश बाण संभाला और मुझ पर बाणों की बौछार कर डाली। मैं इधर-उधर झुक कर बाण बचाता रहा। फिर मैंने सुना िकमेघनाद चिल्ला कर मुझसे कह रहा है कि ओ बानर तुम्हारे बदन पर पहना हुआ जनेऊ यह इशारा कर रहा है कि तुम ब्राह्मण हो, तुम्हे ब्रह्मा की सौगंध है कि अब इस वन को उजाड़ना बंद कर दो और अपने आपको मेरे हवाले कर दो।
मुझे बड़ा अचरज हुआ। युद्ध में कसम और सौगंध का क्या काम ? विभीशण बता रहे थे कि रावण को यह बागीचा अपने पुत्रों से भी बढ़कर प्यारा है, इसे उजाड़ना रोकने के लिए शायद मेघनाद ने मुझे सौगंधदी है।
मैं जहां खड़ा था वहीं खड़ा हो गया।
वह लपकता हुआ आया और मुझे पकड़ लिया। एक रस्सी से मुझे बांध दिया गया। वे लोग मुझे अपने साथ लेकर चल पड़े।
कुछ देर बाद हम लोग रावण के दरबार में हाजिर थे।
दुःखी स्वर में मुझसे रावण ने पूछा '' हे बानर, तुम कौन हो ? तुमने यह बागीचा क्यों उजाड़ दिया!''
मै बहुत झुक कर बोला '' हे लंकेश, मैं उन श्रीराम का दूत हूं जिनकी पत्नी को तुमने अपने यहां कैद कर रखा है । मुझे भूख लग रही थी सो मैंने कुछ फल खा लिए। फल खाना इतना बड़ा गुनाह तो न था कि मुझे मारा-पीटा जाता। वे लोग मुझे मारने लगे तो मैंने उन्हे मारा । आपके एकबेटे ने मुझे जान से मार देना चाहा तो गलती से वह मेरे हाथों मारा गया, फिर आपके इन राजकुमार ने ब्रहमा की सौगंध देकर मुझे बांध लिया।

रावण गुस्से में आ गया और बोला '' इस बानर ने बहुत बड़ी गलती की है। इसे तुरंत मौत के घाट उतार दिया जाय।''

तभी जाने कहां से विभीशण राज दरबार में आ पहुंचे और बोले '' भैया, आप बहुत बड़ी गलती कर रहे हो। किसी दूत को जान से नहींे मारा जाता।''

माल्यवंत नाम के बूढ़े मंत्री ने भी यही कहा । फिर सबने एक निर्णय लिया कि मेरी देह पर कपड़ा लपेट कर आग लगा के मुझे थोड़ा सा झुलसा दिया जाय।

तुरंत ही सारी तैयारियां की जाने लगीं।

मेरे बदन पर कपड़ा लपेट कर खूब सारा तेल उड़ेला गया और आग लगा दी गई, वे आगसे बचते वक्त मेरे उछलने कूदने का तमाशा देखना चाहते थे लेकिन मेरे मन में कुछ और याद आ गया था। मैं तुरंत ही जमीन पर लेट गया और अपनी आग बुझाने लगा, मेरी आग तेजी से बुझ गयी और उल्टा हो गया, जमीन पर बिछे कालीन में आग लग गई। में फुर्ती से उठा और मैंने आग लगाने के लिए मशाल लेकर आये एक सैनिक से मशाल छीनी और दरबार वाले कमरे से ऊपर की ओर जाने वाले सीड़ियों पर सरपट भाग चला। ऊपर ही तो रावण का रनिवास था, मैंने वहां की हर चीज से मशाल छुआई और आगे बढ़ताचला गया। छतों से कूदता कुछ ही देर में मैं उस जगह था जहां अन्न का भण्डार था। यदि इस जगह आग लग गई तो लंका का कई महीनो ंका भोजन समाप्त हो जायगा यह सोच कर मैंने मशाल को लहराते हुए उस तरफ फेंका और दौड़ता हुआ सीधा अशोक वन में जा पहुंचा।

सीताजी के पास बैठी त्रिजटा राजदरबार के सारे समाचार उन्हे सुना रही थी। मुझे देख कर वह उठी तो मैंने उसे प्रणाम किया और सीताजी से बोला '' आप मुझे आज्ञा दीजिये, मैंने एंेसा खेल शुरू किया है कि लंकेश बौखला उठे हैैंंं। बाहर मेरी तलाश जोरों पर हो रही है। अब मैं तुरंत लौटना चाहता हूं।

सीताजी बोेलीं '' ठीक है हनुमान, तुम अपना ध्यान रखना। प्रभु से कहना वे जल्दी आवें। ''

मैंने उन्हे प्रणाम किया और छिपता-छिपाता लंका नगर की चहार दिवारी की तरफ बढ़ने लगा। एक जगह सुनसान थी वहां मैं चहारदिवारी पर चढ़ गया और फुर्ती से सामने दीख रहे समुद्र में छलांग लगा दी। थोड़ाही आगे बढ़ा था कि मैनाक अपनी टापु नुमा नाव के साथ मेरी राह देखते मिले। उनके साथ मैं आपके पास चला आया हू।

इतना कह कर हनुमान जी से अपनी लंका यात्रा का किस्सा समाप्त किया।

हम मन ही मन हनुमानजी की तारीफ कर रहे थे।

रात गहरी हो चुकी थी। जामवंत ने आदेश दिया कि हनुमानजी की बात पूरी हो चुकी है, अब सब सो जाओ। कल सुबह उठ कर हमे वापस किश्किंधा चलना है। लम्बी यात्रा होगी। इसलिए बिश्राम जरूरी है।

हम सब कुछ ही देर में नींद में गाफिल हो गये।

00000

विभीशण

हसे लंका की खबरें सुन कर श्रीराम ने सुग्रीव से पूछा ''क्या करें मित्रवर ?'
सुग्रीव बोले ''हमको लंका की सेना की सारी खबरें और वहां की भौगोलिक जानकारी मिल गई है, अब देर का क्या काम ? हमे तुरंत चल देना चाहिए।''
जामवंत बोले '' प्रभो, हम अब कुछ गुपतचर लंका में भेज रहे है जिनके द्वारा आगे से हमे लंका की पल पल की जानकारी मिलती रहेगी, इस कारण हम किसी भी तरह से उनसे कमजोर नहीं पड़ेंगे। आप संकोच न करें हमसब चलने के लिए तैयार हैं।''
फिर क्या था, बात की बात में सब लोग लम्बी यात्रा के लिए सजने लगे।
अगले दिन सुबह श्रीराम और लक्ष्मण ने अपने सारे मित्रों के साथ लंका के लिए अपनी यात्रा शुरू की।
आगेआगे उस दलके कुछ बानर थे जो अभी इसी दिशा में जाकर लौटा था, पीछे जय श्रीराम कहता बहुत बड़ा समूह।
सारा रास्ता देखा भाला था सो समुद्र तट तकपहुंचने में ज्यादा समय नहीं लगा।
समुद्र के किनारा देख कर राम ने पूछा कि हम समुद्रकैसे पार करेंगे, तो सबने अपने अपने विचार बताये। कोई कहता था कि बहुत सी नावों का बेड़ा तैयार किया जाय तो कोई कहता था कि सब लोग तैर कर पार करें।
यात्रा की थकान थी और सांझ घिरने लगी थी सो राम ने कहा कि हम लोग अब वहां जाकर आराम करते हैं जहां संपाती रहा करता था। कल सुबह हम लोग बैठ कर विचार करेंगे कि कया करना है।
सब लोग उठे और उस घाटी की ओर बढ़ चले जहां संपाती की गुफा थी।
खास खास लोग समुद्र किनारे वाले रास्ते से भीतर गये तो बाकी लोग पहाड़ चढ़ कर घाटी की तरफ पहुंचे।
अंधेरा होने के पहले सब लोग अपने सोने का ठिकाना खोज चुके थे।
रात बहुत आराम से बीती।
अगली सुबह गुफा के चोंड़े वाले हिस्से में श्रीराम का दरबार लगा।
अब भी तय नहीं हो पा रहा था कि समुद्र कैसे पार होगा?

सूरज काफी ऊपर चढ़ गया था और फलाहार का बंदोबस्त किया जारहा था कि एक बानर दौड़ता हुआ आया '' प्रभु, लंका की तरफ से एक नाव में बैठ कर एक हट्टा-कट्टा आदमी आया है जो अपना नाम विभीशण बताता है और आपसे मिलना चाहता है।;;

हनुमान तेजी से बोले '' उन्हे आदर के साथ लेकर आओ।''

कुछ देर बाद विभीशणजी राम के गले लग कर मिल रहे थे। राम ने पूछा '' मित्र विभीशण बताओ, तुम्हारी क्या इच्छा है? तुम लंका कैसे छोड़ आये?''

विभीशण बोले '' लंका में मेरा दम घुटता था। वहां बोलने पर पाबंदी है। हनुमानजी मिले तो मुझे आप से मिलनेकी उतावली हो गई। मैं आपसे केवल मित्रता की आशा लेकर आया हूं, ,मुझे कुछ नहीं चाहिए।''

श्रीराम बोले '' हम अपनी ओर से आपको लंका का राजा घोशित करते है। हम बहुत जल्दी रावण को युद्ध में हरा कर राजा के पद से हटा देंगे। आज से हमारी ओर से आप लंकेश हैं।

विभीशण न न करते रहे, लेकिन राम ने जमीन से धूल ली और मिट्टीसे ही विभीशण का तिलक करके कहा लंकेश विभीशण की जय हो।

सबने विभीशण की जय जय कार की।

फिर वे सब लोग समुद्र किनारे आकर खुले मैदान में बैठ गये।

राम ने विभीशण से भी पूछा कि आप तो समुद्र के किनारे रहते हैं आप ही बताओ कि समुद्र पार करने का का क्या रास्ता अपनाया जाय।

विभीशण जवाब देते इसकेपहले ही कुछ शोरगुल गूंजा। सबका ध्यान गया तो पता चला कि बानर लोग दो बानर जैसे दिखते युवकों को पकड़ कर ला रहे हैं।

जामवंत ने बताया कि ये दोनों लंका के जासूस हैं और विभीशणजी के पीछे पीछे यहां तक आये हैं। ये लोग बानरों का वेश बना कर हमारी सारी बातें सुन रहे थेकि हमारे जासूसों को शक हो गया । फिर तलाशी ली गई तो इनके पास ऐसी चीजें मिली जिनसे इन पर शंका बढ़ रही थी सो इन्हे हमने गिरफतार कर लिया है।

विभीशण ने पहचाना से तो लंका के प्रसिद्ध जासूस शुक और सारन है। ये दोनांे कई तरह की भाशायें जानते हैं और कई तरह के वेश बदलने में माहिर हैं।

सुग्रीव ने कहा कि इनके नाक-कान काट लिये जायें। हनुमान ने कहा कि इनके यहां तो अंग-भंग करने की परंपरा है, इनकेसाथ भी वही किया जाय।

जामवंत बोले ''प्रभू्, किसी दूत या गुप्तचर के साथ अपमान भरा व्यवहार नहीं होना चाहिए।''

राम बोले '' इन्हे छोड़ दो।''

लक्ष्मण ने कहा '' तुम लोग निडर रहो । जाओ और रावण को मेरा एक संदेश जरूर देदेना कि उसने जो काम किया है वह ठीक नहीं है। हम जल्दी ही उसे आकर उसी के घर में सजा देंगेै''

शुक और सारन ने सिर झुका कर उनकी बात से सहमति प्रकट की और अनुमति मिलते ही समुद्र तट की ओर दौड़ लगा दी। देखते ही देखते वह पानी में कूदे और उन्होने पानी में छुपी एक नौका को बाहर निकाल लिया। फिर उन लोगांेंं ने नाव के चप्पू संभाले ओर तेज गति से लंका की दिशा में चले गये।

राम ने दुबारा विभीशण से पूछना चाहा तो जामवंत बोले '' प्रभू हमारी सेना बहुत बड़ी है। इसके द्वारा तैर कर समुद्र पार करना या नावों से पार कराना बहुत कठिन होगा। इसलिए नल और नील नाम के हमारे दो बानर चाहते हैं कि उनकी बात सुन ली जाय।''

राम ने अनुमति दी तो नल और नील को बुलाया गया। नल ने बताया कि इस पूरे समुद्र तट के किनारे ऐसे पत्थर मिलते है जिनमंे वजन नहीं है, इन्हे समुद्र में तैराकर कर आपस में बांध दिया जाये तो नाव की तरह का एक लम्बा पुल बन सकता है।

सबको यह सुझाव अटपटा लगा रहा था कि समुद्र पर तैरता हुआ इतना बड़ा पुल भला कभी बन भी सकता है।

सबको लगा कि यह सुझाव ठीक है लेकिन एक आशंका थी कि इतना बड़ा पुल बनने में बहुत समय लग जायेगा। नल और नील ने कहा कि अपने कुछ साथियों को यह काम सिखा देंगे, फिर पूरी सेना पत्थर ला-लाकर समुद्र में डालती जायगी और इस तरह जल्दी ही पुल बन जायगा।

काफी सोच विचार के बाद राम ने सहमति दी तो नल और नील ने काम शुरू कर दिया। सेना के सारे सैनिक जुट गये। नल नील ने दधिमुख, केहरि, निसठ और सठ नाम के अपने दोस्तों का भी यह काम सिखा दिया तो काम ने तेजी पकड़ ली और जामवंत ने ऐसी व्यवस्था कर दी कि पूरी सेना को तीन भागों में बांट दिया। हर छै सात घण्टे बाद एक भाग के लोग काम में लुट जाते और इस तरह से रातोंे-दिन काम चलने लगा।

हर आदमी के मन में उत्साह था, सबको उत्सुकता थी कि कैसे पुल बनेगा और दउस पर इतनी बड़ी सेना कैसे जा पायेगी। इसलिए जितना हिस्सा बन जाता उस पर सेना की एक टुकड़ी धम्म-धम्म करके चलती और उसकी मजबूती को ढंग से परखती। पुल सचमुच खूब मजबूत बन रहा था। सबको नील और नल की शिल्प कला पर हैरानी होती।

लग रहा था कि महीनों में जाकर यह काम पूरा होगा लेकिन सात दिन में ही सारा काम निपट गया।

फिर जब पूरे पुल की मजबूती देखली गयी तो श्रीराम से पुल पर चलने की प्रार्थना की गई । राम-लक्ष्मण के साथ पहले उनके सचिव और मित्र पुल पर से निकले इसके बाद में सेना ने निकलना शुरू किया ।

सारी सेना सुबह से दोपहर तक समुद्र के पार हो गई।

रास्ते में एक ओर अपने नकली टापू पर खड़ा मैनाक हाथ हिला कर सेना का उत्साह वर्धन करता रहा।

उस पार पहुंच कर जामवंत ने बानरों को कहा कि वे चाहें तो अब आराम कर सकते हैं और चाहें तो खेल-कूद सकते हैं।

राम और उनके मित्र तो कुछ शिलाखण्डों को बैठने के आसन बना कर बैठ गये और बहुत से बानर खेल-कूदने में मशगूल हो गये। जिन्हे भोजन का बंदोबस्त करना था वे फलदार वृक्षों और जड़ी-बूटियों की तलाश में लग गये।

00000

लंका में अंगद

राम दल में चर्चा चल रही थी कि आगे की रणनीति क्या बनाई जाय?

कोई कहता कि अब देर करना उचित नहीं, सीधे हमला कर देना चाहिये। किसी का कहना था कि एक खबर भेजकर रावण को युद्ध का आमंत्रण दिया जाय। कोई सलाह देता था कि हमारी सेना की मौजूदगी की खबर से बौखला कर रावण खुद हम पर हमला करेगा, इसलिए धीरज से उसके आगे बढ़नेकी उम्मीद की जाय।

जामवंत ने कहा '' प्रभू, कूटनीति और राजनीति की नजर से मेरा एक विचार है कि क्यों न हम एक बार एक दूत भेज कर अपना संदेश भेजें कि वह चुपचाप सीताजी को हमारे हवाले कर दे और आपकी अधीनता स्वीकार कर ले। युद्ध में बहुतसे लोग मारे जायेंगे, जाने कितने घायल होंृगे। हमारा दूत जाकर कहे कि रावण लड़ाई का विचार त्याग कर शांति की बात करे।''

राम को यह विचार अच्छा लगा। वे बोले '' आप ही बताओ कि किसको दूत बना कर भेजा जाये ?''

'' मेरा विचार है कि बाली पुत्र अंगद को अपना दूत बना कर भेजा जाय। एक तो ये बाली के लड़क हैं जनसे रावण युद्ध में हार गया था, दूसरे एक राजकुमार का दूत बन कर जाना रावण के लिए भी सम्मान की बात होगी।''

सको विचार अच्छा लगा तो राम ने अंगद को बुलाया और कहा '' अंगद, तुम्हारी बुद्धि और बल पर मुझे पूरा विश्वास है। तुम दूत बन कर लंका जाओ। रावण से तुम वही बात करना जिससे हमारा काम हो जाये और उसका भला हो।''

अंगद ने राम के चरणों में सिर झुका कर आशीर्वाद लिया और अपनी गदा को संभालते हुए लंका के किले की ओर चल पड़े।

दूर से ही अंगद को भी लंका का किला बड़ा सुन्दर और मजबूत दिखा। खूब बड़ा प्रवेशद्वार इस समय खुला हुआ था।

प्रवेशद्वार से अन्दर जाते ही अंगद ठिठक गये, क्योंकि एक कड़कती आवाज ने उन्हे टोक दिया था '' तू कौन है रे बानर ? बिना अनुमति लंका नगर में कैसा धंसा चला आ रहा है?''

अंगद ने मुड़ कर देखा । उन्ही की उम्र का एक युवक उन्हे टोक रहा था। अंगद ने शांति से जवाब दिया '' मैं किश्किंधा का राजकुमार अंगदहूं । आप कौन हैं भाई ?''

'' अरे तू भी बानर हुआ न । आदिवासी बिरादरी का है न। मै लंकाधिपति महाराज रावण का पुत्र हूं। तू मेरी अनुमति के बिना कहां घुसा चला आ रहा है?''

'' अरे भाई, मैं महाराज रावण के ही दरबार में जा रहा हूं। मुझे उनके पास जाने का रास्ता बताइये।''

'' अरे बनरवा, तू बड़ा होशियार बन रहा है, तुझ जैसे बच्चे से तो महाराज लंकेश बात भी नहीं करेंगे । जा वापस लौट जा।''

अंगद को गुस्सा आ गया बोले ''वापस क्यों लौटूं? मैं राजदरबार तक जरूर जाऊंगा।''

'' तो तो अपनी जगह से एक अंगुल भी नही हिल पायेगा ।''

वह युवक अपनी तलवार उठाकर अंगद की ओर झपटा तो अंगद भी सावधान हो गये, उन्होने अपनी गदा पर उस युवक का वार झेला और पूरी ताकत लगा कर उसे पीछे धकेलदिया और जब तक वह धक्का खाकर संभले तब तक तां े अंगद ने अपनी गदा का एक जबरदस्त प्रहार उसकी खोपड़ी में कर दिया।

उस राजकुमार में तो दम ही नही ंनिकला। गदा की चोट पड़ी तो उसका सिर तरबूज की तरह फट गया और वह जमीन पर गिर कर तड़पने लगा।

आसपास जमे लोग वहां से इधर-उधर भाग निकले। अंगद गलियारे में आगे बढ़े।

फिर तो लोग उन्हे बिना पूछे ही रावण के दरबार का रास्ता बताते गये और वे दरबार के प्रवेशद्वार तक जा पहुंचे।

बाहर प्रहरी ने रोका तो उन्होने प्रहरी के मार्फत अपना परिचय भेज कर मिलने की अनुमति मांगी।

उन्हे तुरंत ही अनुमति मिल गयी। अंगद भीतर पहुंचे।

देखा , एक बहुत ऊंचे सिंहासन पर रावण बैठा है और उसके सारे दरबारी बहुत नीचे अपनी अपनी जगह पर बैठे एक नर्तकी का नृत्य देखरहे हैं।

अंगद को देख कर किसी ने संकेत किया तो नर्तकी ने तुरंत अपना नृत्य बंद किया और अपने साजिन्दों के साथ बाहर चली गई।

अंगद सीधे रावण के सामने जा पहुंचे और उन्हे प्रणाम किया।

रावण ने अभिमान के साथ अंगद के प्रणाम का जवाब दिया और ऐंठ भरे स्वर में पूछा ''हे बानर , तू कौन है?''

'' हे दसकंधर, मैं रघवीर श्रीराम का दूत हूं।''अंगद ने उसी स्वर में जवाब दिया।

'' तू मेरे दरबार में क्यों हाजिर हुआ?''

'' लंकेश, आप मेरे पिता किश्किंधा नरेश महाराज बाली के मित्र रहे हो इसलिए मैं आपको भले के लिए यहां आया हूं। मैं यह संदेश लाया हूं कि आप चुपचाप ही रघुवीर की पत्नी सीता को उनके पास सोंप दो और उनकी अधीनता स्वीकार कर लो। आपको अब तक हुई गलतियां श्रीराम माफ करदेंगे।''

अंगद ने अनुभव किया कि महाराज बाली का नाम सुन कर रावण हड़बड़ा गया और बोला '' अच्छा तुम उस बाली की बात कर रहे हो पहाड़ों में रहता था। हां, मैं उसे जानता था। वह मेरा दोस्त कभी नहीं रहा।''

'' आप तो संभवतः सहस्रार्जुन को भी नहीं जानते होंगे, जिन्होने आपको देख कर अपने बच्चों के मनोरंजन के लिए अपने महल में ले जाकर आपको रख लिया था। बाद में आपके दादाजी पुलस्त्य मुनि ने आपको उनकी कैद से छुड़ाया था।''

'' तुम आयु में तो बहुत छोटे हो, लेकिन बातें बहुत बड़ी-बड़ी करते हो बानर।''

'' बड़ी बातें करने की तो आपके परिवार की आदत है लंकेश। मुझे हनुमान जी ने बतायाथा।''

'' अरे तुम उसे बानर की बात कररहे हो जिसने हमारे महल के कुछ कपड़े-लत्ते जला दिये थे।''

'' हां लंकेश उस अकेले बानर ने तुम्हारी नगरी में त्राहि-त्राहि मचा दी थी। उन्ही ने तुम्हारे सारे अन्न भण्डार खत्म कर दिये थे। इसीलिए तुम्हारे यहां इन दिनों खाने-पीने की भुखमरी फैल गई है।''

'' फालतू की बात मत करो अंगद। तुम तो अपने मालिक को जाकर बोलना कि हम ताल ठोंक कर उनसे लड़ने के लिए तैयार हैं। वे अब बातें न करें। अगर हिम्मत हैं तो आकर लड़ें नहीं तो हम उन्हें उठा कर अयोध्या के लिए फेंक देंगे।''

अंगद ने इतना सुना तो वे एकदम गुस्सा हो उठे। उन्हे याद आया कि बचपन से ही उनको पिता ने वह कला सिखाई है जिसमें जमीन पर मजबूती से पांव जमाकर खड़े होने के बाद कोई कितनी भी ताकत लगा दे उनका पांव नहीं उठा सकता।

अंगद बोले '' मेरे प्रभु को उठा कर फेंक देना तो बहुत बड़ी बात है लंकेश। मैं चुनौती देता हूं कि आपके पूरे दरबार में से कोई योद्धा मेरा पांव उठा कर बतादे । मैं वायदा करता हूं कि हम लोग बिना लड़े ही आपसे यह युद्ध हारा हुआ मान लेंगे।

अंगद ने अपना पांव जमीन पर ठोंक कर जमा दिया । वे इंतजार करने लगे कि कोई उनका पांव उठा कर दिखाये।

एक एक कर कई योद्धा उठे लेकिन ताज्जुब था कि अंगद का पांव नहीं उठ रहा था। अंत में रावण खुद उठने लगा तो अंगद ने फटाक से अपना पांव हटा लिया और बोले '' आप तो मेरे पिता जैसे हैं आपसे मैं अपना पांव नहीं छुआना चाहता।''

फिर अंगद को लगा कि रावण ने अपना अंतिम जवाब सुना दिया है, अब यहां कोई काम की बात नहीं हो सकती इसलिये यहां से रामदल में वापस चल देना ठीक होगा।

वे रावण से बोले '' लंकेश, मैं चलता हूं। अब आपसे लड़ाई के मैदान में ही भेंट होगी।''

चलते-चलते उन्होने अचानक रावण के ऊपर बने झरोखे मंे देखा तो चौंक गये।वहां उनकी माँ जैसी शक्ल-सूरत की एक बहुत सुन्दर महिला बैठी थी। वे समझ गये कि ये महारानी मंदोदरी हैं। अंगद ने उन्हे प्रणाम किया और बाहर की ओर कदम बढ़ा दिये।

00000

लड़ाई

अगले दिन सुबह अंगद ने अपनी यात्रा क पूरे समाचार राम को सुनाये।
लक्ष्मण बोले '' भ्राता , मैंने आपसे पहले ही कहा था कि उस दुश्ट को समझाने से कोई फायदा नहीं है।''
सुग्रीव बोले '' लेकिन कुत्ते की पूछ सदा ही टेड़ी रहती है ।''
हनुमान कहने लगे '' प्रभू हमारे, दल के लोग पूरी तरह से तैयार हैं। हमे कोई डर नहीं है। आपको अभी युद्ध में भाग नही लेना,आप तो पीछे बैठ कर हमे निर्देश देते रहें।''
'' हमारा अनुमान है कि पहले लंकेश खुद नहीं आयेंगे, वे अपने किसी बेटे को भेजेंगे। हमारा निवेदन है कि जैसा व्यक्ति आये सेनापति वैसा ही व्यक्ति बने। अगर रावण का कोई दूसरा बेटा आता है तो राजकु्मार अंगद सेनापति रहें और अगर मेघनाद आये तो लक्ष्मण जी हमारा नेतृत्व करें।'' जामवंत ने पुराने अनुभव से कहा।
'' ठीक है, जामवंत जी । आपका प्रस्ताव ठीक है।'' राम ने सहमति प्रदान कर दी।
दिन भर जामवंत और दूसरे बुजुर्ग लोगों ने आसपास के मैदान में मिलने वाली जड़ी-बूटियों में से वे ढूढ़ निकालीं जिनके लगाने से एक ही रात में घाव ठीक हो जाते हैं। एसी जड़ी-बूटियों का बहुत बड़ा संग्रह भी कर लिया गया।
अगले दिन सुबह सचमुच युद्ध आरंभ हो गया।
लंका का बड़ा द्वार खुला और शोर मचाती लंका के सैनिकों की सेना बानरों की तरफ दौड़ी। सैनिकों के हाथ में तलवार, भाला, परिघ और गदा जैसे हथियार मौजूद थे।
बानर तैयार थे। उन्होने गदा के अलावा कोई हथियार नहीं ले रखे थे। हां, कई लोग अपने हाथों में पेड़ का तना और चट्टान उठाये हुए थे।
जल्दी ही पता लग गया कि लका की ओर से आज मेघनाद सेनापति हैं।
लक्ष्मण तैयार होने लगे। राम ने समझाया '' लक्ष्मण , ध्यान रखना। मेघनाद ऐसा योद्धा है जो लंका में अपनी श्रेणी का सबसे बड़ा योद्धा माना जाता है-दारूण भट। थोड़ा संभल कर युद्ध करना। यदि किसी बाण को झुक कर बचाना पड़े तो झुक जाना।''
'' जैसी आज्ञा !'' कह कर लक्ष्मण चल दिये।

दोनों तरफ अपने सेनापतियों के जयकारे के साथ लड़ाई आरंभ हुई। बानरों ने चट्टान ओर पेड़ों का जो ढेर इकट्ठा कर रखा था वह बहुत काम आया। लंका के सैनिकों के झुण्ड के झुण्ड चट्टानों के नीचे दबने लगे तो पीछे हटने लगे। बानर उत्साह में आ गये। वे आगे बढ़े।
अपनी सेना को पीछे हटते देखा तो मेघनाद अपना रथ लेकर आगे आ गया। उसने देखा कि सामने की सेना के पास न तो लड़ाई के अच्छे हथियार हैं, न उनके पास हथियारों का वार झेलने के लिए शरीर पर कोई भारी अंग वस्त्र है। उनके सेनापति लक्ष्मण जमीन पर खड़े थे।
मेघनाद ने लक्ष्मण पर व्यंग्य किया '' क्यों सेनापति, तुम्हारे पास एक रथ तक नहीं है।''

''मेघनाद , लड़ाइयां रथ से नहीं लड़ी जातीं, मन के हौसले से लड़ी जाती है और जीत न्याय के पक्ष के साथ ही होती है।''लक्ष्मण ने उत्तर दिया।

दोनों ने धनुशबाण के अच्छे निशानेबाज थे। उन्होने एक दूसरेपर बाणों की बौछार करना शुरू कर दिया। मेघनाद तो अपनी ढाल पर लक्ष्मण के तीर बचा लेता लेकिन लक्ष्मण का ज्यादा अनुभव न था सो वे न तो झुक कर अपने सामने आता तीर बचाते थे और न ही दूसरे हाथ में कोई बचाव का साधन लिए थे।

मेघनाद के रथ में एक से बढ़कर एक अच्छे तीर भरे रखे थे, पर लक्ष्मण के पास गिने चुने तीर थे, हालांकि सबके सब तीखे और खतरनाक थे।

लक्ष्मण ने सोचा कि ब खतरनाक तीन बाद के लिए बचाकर रखेजायें इसलिए वे साधारण बाण चलाते रहे, पर मेघनाद से बहुत खतरनाक बाण चलाता रहा। उसने देखा कि लक्ष्मण का तरकश साधारण बाणों लगभगखाली हो चुका है। वे दूसरा तरकश मांग रहे हैं कि उसने खतरनाक विश से बुझा एक बाण उठाया और असावधान लक्ष्मण को निशाना बना कर चला दिया।

धोखा खा गये लक्ष्मण। जब तक वे संभलें तब तक तो मेघनाद का तीर लक्ष्मण की पसली में जा धंसा था और लक्ष्मण ने जोर की चीख मारी थी।
ळनुमान ने देखा तो वे लक्ष्मण के पास पहुंचने के लिए दौड़ पड़े।
उधर मेघनाद ने अपना रथ लक्ष्मण के पास ले जाकर खड़ा कर दिया था। जामवंत चीखे, '' हनुमानजी, जाओ लक्ष्मण को बचाओ। उन्हे खतरनाक विश बुझा बाण लगा है यदि आज की रात वे मूर्छित रहे तो ज्यादा नुकसान हो जायगा। मेघनाद उन्हे लंका ले जाना चाहता है , यह न होने पाये।''

हनुमान और तेजी दौड़े । उधर मेघनाद लक्ष्मणको उठाने के लिए झुका ही था कि हनुमान जी ने अपनी गदा फेंक कर उसे मारी जो ठीक अपने निशाने पर यानी ि‍क मेघनाद के सिर पर जाकर लगी और मेघनाद अपना सिर पकड़ कर बैठ गया । कुद ही देर में वह भी मूर्छित हो गया था।

मेघनाद के सेवकों ने मेघनाद को उठाकर अपने रथ में रखा और वापस लंका चले गये। इधर हनुमान ने अपने हाथों में लक्ष्मण को उठाया और तेजी से श्रीराम की ओर ले चले।
सूरज अस्त हो चुका था, युद्ध बन्द हो रहा था।

राम ने देखा कि लक्ष्मण विकट मूर्छा में है, वे व्याकुल हो उठे। अब क्या होगा?

जामवंत ने अपनी सारी जड़ी-बूटी लगा के देखीं लेकिन सब बेकार थींैं। आखिर हार के वे बोले '' हनुमान, इस विश का नाशकरने वाली दवाई लंका के वैद्य सुशेन के पास मिलेगी, अब अपने लिए सबसे जरूरी है कि सुशेन का ेयहां लाया जाय।''

विभीशण ने बताया कि सुशेन का घर उनके घर से लगा हुआ है।

हनुमान का तो लंका का किला और नगर ठीक ढंग से देखा भाला था। वे हाल ही दौड़ लगा कर लंका नगर के प्रमुख द्वार के पास की चहारदिवारी की दिशा में चल ेगये।सेना अपने घायल सैनिकों के इलाज में लगी थी सो कोट के ऊपर पहरा न था सो हनुमान ने एक जगह से अपने लिए भीतर जाना सरल समझा और वे छलांग लगाकर चहार दिवारी पर जा पहुंचे। फिर सुशेन के घर तक जाना और उसे डरा-धमका कर लाना बहुत सरल था, क्योंकि लंका में हनुमान और अंगद दोनों का ही भारी भय बैठ गया था।

सुशेन ने सकुचाते हुए कहा '' हे तपस्वी, मैं रावण महाराज का वैद्य हूं इसलिए उनके दुश्मन को दवाई देना उचित नही है, फ़िर भी वैद्य और पंडित को अपने-पराये का भेद नहीं करना चाहिए इसलिए आपको बताता हूं । आपके छोटे भाई को जिस विश का असर पैदा हआ है वह बहुत खतरनाक है, यदि कल के सूर्योदय के पहले इन्हे संजीवनी बूटी का रस नहीं पिलाया गया तो इनका बचना बहुत कठिन होगा।''

हनुमान गुस्से से बोले '' आप तो यह बताओ वह कहां मिलेगी ?''

सुशेन ने जिस द्रोणाचल पर्वत पर वह बूटी बताई थी वह अयोध्या के उस पार था वहां रात में पहुंचना बहुत कठिन था फिर भी हनुमान ने हार नही मानी। वे तेजी से चले और समुद्र के पुल पर दौड़ने लगे और उस जगह जा पहुंचे जहां मेैनाक की नाव रखी थी।मैनाक को जगा कर उन्होने द्रोणाचल तक जाने का साधन पूछा तो मैनाक बोला मेरी यह नाव आसमान में पक्षी की तरह उड़ कर भी जा सकती है, चलो हम लोग चलते हैं।

कुछ ही देर में मैनाक के टापू पर बैठ कर हनुमान द्रोणाचल की ओर जा रहे थे।मैनाक की तेज गति देख कर हनुमान हैरान थे, वे बार बार रट रहे थे संजीवनी बूटी की झाड़ी रात का अंधेरे में जगमगाती है।वही झाड़ी लाना है।

बात की बात में वे लोग द्रोणाचल जा पहुंचे।

नीचे उतरे तो वे परेशान हो गये। वहां की अनेक झाड़ियां रात का चमक रही थीं। हनुमान ने कई झाड़िया तोड़ी और अपने साथ लेकर मैनाक के टापू पर जा बैठे।

लौटते वक्त मैनाक का विमान और तेज गति से आया।

वे लोग समुद्र में अपनी जगह जाकर उतरे तो हनुमान ने अपनी सामग्री समेटी और अपने दल के शिविर की ओर दौड़ लगा दी।

रात समाप्त हो रही थी कि हनुमान आ पहुंचे । सारा दल रात भर से जाग रहा था। हनुमान का देख कर सब प्रसन्न हुए।

सुबह हुई तो लंका की ओरसे कोई हलचल नही दिख रही थी।

उस दिन युद्ध का बिश्राम रहा।

अगले दिन रावण और विभीशण का तीसरा भाइ्र कुंभकरन अकेला ही राम से लड़ाई करनेे चला आया। राम भी अकेले उठ कर उसकी तरफ बढ़ गये।

उसने दूर से ही राम पर कइ्र तरह के हथियार फेंकना शुरू कर दिया। राम सावधान थे, वे हर वार झुक कर या दांये बांये होकर बचाते चले गये लेकिन कुंभकरण माना नहीं।वह लगातार हथियार फेंकता रहा। अंततः राम ने अपना एक विश बुंझा बाण उठाया और कुंभकरण के गले का निशाना साध कर छोड़ दिया।

राम का तीर निशाने पर लगा, कुूंभकरण की गर्दन कट कर दूर जा गिरी। बानरों ने श्रीराम का जय जय कार की।

वह रात रामादल में खुशी की रात थी।

अगले दिन फिर मेघनाद लड़ाई के मैदान मे गरज रहा था। लक्ष्मण ने आज रामादल के सेनापति का पद संभाला था।

आज उन्होने मेघनाद को संभलने का मौका नहीं दिया। अपने साधारण बाणों से उनहोने मेघनाद के घोड़े ओर रथ चलाने वाले सारथी का घायल किया फिर अपने सबसे खतरनाक विश बुझे बाण को धनुश पर चढ़ाया और मेघनाद की ओर छोड़ दिया। लक्ष्मण का बाण मेघनाद के शरीर पर पहने गये कवच को बेधता हुआ सीधा सीने मे जाकर धंस गया। वह ऐसा तीखा बाण था कि मेघनाद तुरंत ही मूर्छित हो गया।

युद्ध दोपहर में ही बंद हो गया।मेघनाद को लंका ले जाया गया।

रात को विभीशण को सूचना मिली िकमेघनाद की मृत्यू हो गई।

लंका का एक बहुत बड़ा वीर मारा गया था।

जामवंत समझ रहे थे कि अब रावण को ठीक रास्ता समझ में आ जायेगा और वह लड़ाई छोड़ कर आत्मसमर्पण कर देगा लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

अगले दिन रावण खुद सेनापति बन कर युद्ध के मैदान में हाजिर था।

रामादल की ओर से राम सेनापति थे।

दोनों की अच्छे धनुर्धारी और बहादुर योद्धा थे। शाम तक लड़ाई चलती रही। न तो रावण का कोई नुकसान हुआ न ही रामादल की कोई हानि हुइ्र।

रात को विभीशण ने बताया कि रावण ने अपने सिपहसालारों से लोहेका एक ऐसाकवच बनाया है जो गरदन से पेट तक और कमर से घुटनों तक पहना जाता है। अतः उसका यह हिस्सा बहुत सुरक्षित है। यदि रावण को नुकसान पहुंचाना हे तो उसके कवच के ऊपरी व निचले हिस्से के बीच यानी कि नाभि में तीर मारना होगा।

राम ने यह बात अच्छी तरह गांठ बांध ली।

अगली सुबह ज्यो ही लड़ाइ्र आरंभ हुई राम ने अपने नाराच नाम के बाणों से भरा तरकश उठाया। ये बाण सबसे खतरनाक विश में डुबा कर बनाये गये थे। रावण की तरफ सेपहला बाण ही आया था कि राम ने रावण की नाभि में निशाना लगा कर अपना एक बाण छोड़ दिया । वह बाण इतनी तेजीसे गया कि रावण संभल ही नहीं पाया और तीर ने अपना काम कर डाला। रावण जोर की चीख मार कर अपने रथ से नीचे आ गिरा।

रावण के गिरते ही दोनों ओर से युद्ध बंद हो गया।

लंका में बचे आखिरी सिपहसालार विभीशण के बेटे तरूण सेन ने सुलह का प्रतीक सफेद झण्डा लंका पर फहरा दिया।

जैसा कि बाली के साथ किया था राम ने विभीशण को आदेश दिया कि उनके शरीर को पूरे सम्मान के साथ लंका लेजाकर अंतिम संस्कार किया जाय।

उधर विभीशण जाकर रावण के अंतिम संसकार में व्यस्त हुए इधर राम के सुझाव पर जामवंत और सुशेन ने मिल कर दोनो ंपक्षों के घायल लोगों का इलाज आरंभ कर दिया।

अगले दिन लक्ष्मण अपने सारे मित्रों के साथ लंका नगरी पहुचे और राजा के सिंहासन पर विभीशण को बैठा कर उनका राजतिलक कर दिया। फिर वे तुरंत ही लौट आये।
विभीशण ने राजाबनते ही पुराने अत्याचारी और बुरे मंत्रियों को हटा कर नये लोगों को मंत्री बनाया और सबसे पहला आदेश यह दिया कि सीताजी को पूरे सम्मान के साथ एक डोली में बेठा कर श्रीरामको सोंप दिया जाये।
सीताजी का डोला रामादल में पहुंचा तो सब लोग प्रसन्न हो उठे।
अंगद ने पहली बार सीताजी को देखा उन्हे लगा कि उनकी शक्ल-सूरत अपनी मांँ की सूरजसे बहुत मिलती जुलती है। उनहोने झुककर सीताजी के पंाव छू लिये।
रामादल के अनेक वीर उस रात लंका में गये और विभीशण द्वारा किये गये संधि प्रस्ताव के अवसर पर दिये गये भोज में शामिल हुए।

वापसी

अगले दिन
बहुत सुबह विभीशण राम के सामने हाजिर थे।
वे चाह रहे थे कि राम कुछ दिन लंका में चल कर मेहमान की तरह रहें, लेकिन राम नही माने।वे कह रहे थे कि उन्हे अयोध्या से चौदह बरस का वनवास मिला था, जो पूरे हो चुके है, अब वहां उनके छोटे भाई भरत उनका बेसब्री से इंतजार कर रहे होंगे। इसलिए जल्दी से जल्दी लौटने का इंतजाम किया जाये।
विभीशण ने लंका के विमान घर में दिखवाया तो पता चला कि वहां कई तरह के ऐसे विमान हेंैं जो बहुत सारे लोगोेंं को बैठा कर तेज गति से आसमान के रास्ते कहीं भी जा सकते हैं।
अब राम ने लौटने की तैयारी की तो सारे बानर उनके साथ अयोध्या चलने को तैयार थे। हुआ यह था कि रात का ेजामवंत ने सबसे कहा था कि हो सकता है चौदह साल तक राज संभालने वाले भरत को राजगद्दी अच्छी लगने लगी हो और वे राम का राज्य न दें । इसलिए हम लोग राम की तरफ से दूसरी लड़ाई लड़ने के लिए साथ चलेंगे।
राम क्या कहते ?
उन्होने विभीशणजी से कहा कि अब उन्हे बहुत सारे विमान देने होंगे। विभीशण तो कहते थे राम जी अयोध्या न जाकर लंका के ही राजा बनें, विमान क्या चीज थे।
तब रामादल के लोग अलग-अलग विमानों में बैठ कर अयोध्या के लिए चल दिये।
विभीशण और सुग्रीव एक साथ एक अलग विमान में बैठे।
बहुत तेज गति से चलते विमान से नीचे की धरती तेजी से पीछे भागती लग रही थी।
अयोध्या में तो राम के इंतजार में हजारों की भीड़ अयोध्या नगर के बाहर खड़ी थी। अंगद को ताज्जुब हुआ कि राम की तरह शकल सूरत के एक दूसरे तपस्वी उन सबके आगे खड़े आसमान की ओर देख रहे थे। अंगद ने अनुमान लगाया यही भरतजी होंगे। लक्ष्मण जैसी सूरत के दूसरे व्यक्ति जरूर शत्रुहन होंगे अंगद ने सोचा।

राम के विमान से उतरते ही सबसे पहले भरतजी व्याकुल हो कर आगे बढ़े। राम उनसे गले मिले। फिर वे लगभग हर आदमी से गले मिलने लगे।
अंगद ने देखा कि राम हरेक से ऐसे मिल रहे थे जैसे वह उनके बराबर का हो। न तो यहां कोई राजकुमार था न कोई नागरिक।
अंगद को एक नया सबक मिला, जनता में लोकप्रियता पाना है तो इतना सरल और सहज होना चाहिए कि हर आदमी से गले लगकर मिल सके।।
गुरू वशिश्ठ से राम ने अपने सुग्रीव,विभीशण, जामवंत, हनुमान और अंगद आदि का परिचय यह कर दिया कि इनकी सहायता से ही हम लोगों ने अत्याचारी रावण को मारा और हम सीता का वापस पा सके।
उधर गुरू वशिश्ठ के बारे में राम का कहना था कि इनकी बताई धनुर्विद्या के कारण ही हमने लंकेश को मार गिराया है।
अंगद बहुत कुछ सीख रहे थे। राम हरेक को भरपूर सम्मान देते थे। अपनी जीत का जिम्मा वे कभी बानरों को दे रहे थे तो कभी गुरू वशिश्ठ कों।
भेंट -मिलन के बाद भरत ने सब लोगों को राजा के अतिथिगृह में ठहराया।
अंगद,गद और नल,नील को अयोध्या देखना था, वे लोग नगर में घूमने निकल गये। पूरे नगर में उन्हे जगह-जगह अयोध्या के नागरिकों की तरफ से जलपान लेना पड़ा। सारे अयोध्या वासी उन्हे अपने सबसे प्रिय मेहमान मान रहे थे।
रात में वे लोग सरयू के तट पर गये।
सरयू के किनारे बने बड़े मकानों में अच्छी रोशनियां जलाई गई थीं जिनकी छांया नदी के पानी में बहुत सुंदर लग रही थी।
अतिथिगृह में लौटे तो पता लगा कि अंगद को सुग्रीव और विभीशण के साथ ठहराया गया है। वे चाहते थे कि अपने दोस्तों के साथ ठहरें, लेकिन मेहमान की अपनी कोई मर्जी नहीं होती। वे चुपचाप अपने महल की ओर बढ़े। एक बड़े से कमरे के बाहर से निकलर रहे थे कि भीतर से चाचा सुग्रीव क आवाज सुनाई दी '' विभीशण जी, श्रीराम ओर उनके भाइयों का आपसी प्रेम देख कर हमे बड़ी शर्म आ रही है। देखिये कितना प्रेम है इन चारों में।''
विभीशण की आवाज थी '' मैं तो बहुत ही शर्मिन्दा हूं इनके सामने। हम लोगों ने जरा से स्वार्थ के कारण हमने अपने भाइयों से विद्रोह किया और उन्हे जान से मरवा कर राजगद्दी पर बैठगये। इधर ये लोग हैं कि एक दूसरे की ओर इतना बड़ा और भव्य राज्य संभालने के लिए धकेलरहे हैं।''
अंगद चुपचाप निकल गये और अपने बिस्तर पर जा पहुंचे।

00000

विदाई

अगले दिन पता लगा कि दो-चार दिन में ही श्रीराम का राजतिलक होगा। अंगद को लगा कि हमारे यहां तो हाल के हाल राजतिलक कर दिया जाता है, यहां इतनी देर क्यों हो रही है?
सारा अयोध्या नगर दुल्हन की तरह सजाया जा रहा था।
जाने कहां कहां से राजे-महाराजे इस समारोह में शामिलहोने के लिए पधार रहे थे। सबकी अपनी शान शौकत थी।
भरत, लक्ष्मण और शत्रुहन बहुत व्यस्त थे। वे सबका इंतजाम कर रहे थे।
निर्धारित दिन बहुत बड़े समारोह में एक बहुतविशाल सिंहासन पर श्रीराम और सीता बैठे। गुरू वशिश्ठ ने उनका राजतिलक किया।
इसके बाद अलग-अलग राज्यों के राजा-महाराजा श्रीराम के सामने आने लगे वे अपनी ओर से बड़े कीमती तोहफे उन्हे भेंट कर रहे थे।
सारा दिन यह समारोह चला।
संाझ समय सब लोग राज दरबार से वापस हुये तो अपने अतिथिग्रह में पहुंचे। आज घूमने की हिम्मत न थी, सब थक गये थे।
अगले कई दिन यों ही बीत गये। अंगद को लग रहा था कि वे अपने सपनों में देखे गये स्वर्ग जैसे नगर में आ गये हैं बस अब जीवन भर यहीं रहना है।
कभी वे लोग अकेले अयोध्या की यात्रा पर निकल जाते तो कभी श्रीराम के किसी भाई को विनम्रता से रोक लेते ओर अयोध्या के बारे में , श्रीराम के बचपन केे बारे में, उनके अनूठे बयाह के बारे में नये किस्से सुनाने का आग्रह करते।
पन्द्रह दिन बीत गये बाकी सारे राजा एक-एककर विदा हो गये तो सोलहवें दिन हवा फैली कि अब बानर वीर विदा किये जायेंगे। अंगद घबरा गये। वे कहां जायेंगे? पिता की मौत केबाद राम ही उनके पिता थे, अन्यथा किश्किंधा में तो चाचा सुग्रीव ने उन्हे कभी पंसंद नहीं किया। वहां लौटे तो उनका जीवन खतरे मेंरहेगा। क्योंकि चाचासुग्रीव अंगद की जगह अपने बेटे गद को राजाबनाना चाहेंगे।
भरे दरबार में श्रीराम ने मल्लाहों के राजा निशाद, लंका के राजा विभीशण, किश्किंधा के राजा सुग्रीव और दूसरे बानरवीरों को उचित भेंट, कपड़े आदि देकर सम्मानित किया। बाद में दूसरे बानर वीरों को भेंट दी गई।
अंगद एक ओर चुपचाप खड़े थे। उनक दिल बहुत घबरारहा था। कहीं उन्हे विदा न कर दिय जाये, यदि किया गयातो क्या कहेंगे वे भरे दरबार में।
राम ने उनका संकोच समझ लिया, वे खुद राजसिहासन से उठे और अंगद को हाथ पकड़ कर अपने पास लाये। अंगद को काटो तो खून नहीं ।

वे रोते से स्वर में बोले ''आप मेरे धर्म पिता है। मेरे पिता मुझे आपकी गोद में छोड़ गये है।इसलिए मुझे मत छोड़िये।''

राम बोले ''तुम एक राज्य के राजकुमार हो, तुम्हारा किसी दूसरे राज्य में तुम्हारा रहना न तो सम्मानदायक है न ही उचित।''

उन्होने अंगद के सिर पर हाथ फेरा और सुग्रीव से बोले '' महाराज सुग्रीव, याद रखना अंगद मेरा दत्तकपुत्र है। आप इनका ख्याल रखना । इन्हे जरा सी भी तकलीफ हुइ्र तो आप ये समझ लें कि अयोध्या राज्य से दुश्मनी मोल ले रहे हैं।''

सुग्रीव की तो डर के मार घिग्घी बंध गई । वे क्या कहते?

राम ने अपने हाथ से अंगद को भेट में दिये वस्त्र पहनाये, भेंट सोंपी।

फिर सब अपने अतिथिग्रह लौट आये।

अंगद रात भर जागते रहे। कभी सोचते कि क्यों न माता सीता से मिल कर अपने अयोध्या में रहने के लिए उनसे कहलाया जाय। या फिर श्रीराम की माता माँ कौशल्या से निवेदन किया जाय। संभवतः गुरू वशिश्ठ भी मददकर सकते हैं।

लेकिन हर बात लगता कि श्रीराम की बात को कोई नही काट सकता, इसलिए ऐसा लगता है कि अब जाना ही पड़ेगा। यह समझते ही वे रेॆाने लगे।

रात भर वे जागते रहे , रोते रहे।

कहीं किश्किंधा में सुग्रीव ने कोइ्र षड़यंत्र करके उनका नुकसान किया तो क्या होगा?

जैसे-तैसे रात बीती।

सुबह सारी तैयारी थी।

सबके लिए विमान तैयार थे।

एक एक कर सब अपने विमानों में बैठे तो बिलखते हुए अंगद एक बार फिर राम के पैरों में गिरे राम ने उन्हे पीठ पर हाथर ख कर खूब 'प्यार किया ओर बोले ''तुम वहां रहकर भी मेरे पास हो। मेरे जासूस तुम्हारी हर खबर मुझे भेजेंगे।''

थ्बलखते हुए अंगद अपने विमान में बैठ गये। हनुमान अंत में उनके पास आये । वे अभी वापस नही जा रहे थे। अंगद उनसे बोले '' प्रभु को आप लगातार मेरी याद दिलाते रहना और मेरी दंडबत प्रणाम उनसे कहते रहना। बताना कि उनका यह बेटा बहुत असुरक्षित हैं।बस उनका ही दूर का भरोसा है।''

हनुमान ने कहा ''श्रीराम को पल-पल की खबर हेै। आप वहां भी सुरक्षित हैं। फिर जब मन चाहे आप अयोध्या चले आया करना।

विमान उठा तो अंगद को लग रहा कि कि कोई उन्हे कैद में भेज रहा है, उनका शरीर वापस जा रहा है प्राण तो अयोध्या में ही रह गया है।

अंगद फूट-फूट कर रोते हूए दूर होता अयोध्या नगर देख रहे थे और उनका विमान किश्किंधा की ओर उड़ा जा रहा था।
